Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्रीः ॥

श्री महाकाली-साधना-तन्त्र
सम्पूर्ण विधि सहित

लेखक :
निगमागमादि समस्त शास्त्र पारावरपारीणैः
श्रीमन्तः विद्वद् वरेण्य पुराण रत्न विभूषित

पं० नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी 'तन्त्रमणि' दीक्षाकालनाम - व्यवहारानन्दनाथ
साहित्याचार्य, फलित ज्योतिषाचार्य, साहित्यरत्न, बी० एड०
गुरुवर विरजानन्द सरस्वती
दयानन्द सरस्वती स्थली
गतश्रम टीला, मथुरा (यू. पी.) द्वारा विरचितः

सम्पादक :
श्री डॉ० गोवर्द्धन नाथ चतुर्वेदी
राजाराम भवन, गतश्रम टीला
मथुरा.

प्रकाशक :
मीतल एण्ड कम्पनी
थोक पुस्तकालय, सतघड़ा, मथुरा.

द्वितीय संशोधित संस्करण] सन् १९९४ [मूल्य ५१ रु०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

महामहिमशाली महार्मषियों ने प्राचीन सम्पूर्ण शब्द राशि की निगम तथा आगम के भेद से द्विधा विभक्त किया गया है। प्रकृति सिद्ध नित्य शब्द ब्रह्म इन्हीं दो रूपों में माना जाता है। निगम तथा आगम दोनों, विद्वत्समुदाय द्वारा सहस्रों वर्षों से प्रमाण कोटि में समाप्रत रहे हैं। जिस प्रकार निगम (वेद) की प्रत्येक श्रुति प्रमाणभूत है उसी प्रकार आगम वाक्यों को प्रमाण माना जाता है। निगम (वेद) की रचना जिस प्रकार पितामह श्री ब्रह्माजी के द्वारा हुई हैं। उसी प्रकार आगम (तन्त्र) की रचना परम का रुणिक भगवान शिव के द्वारा की गई है।

भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के पर्यालोचन करने वाले जिज्ञासु पुरुष का ज्ञान तब तक अधूरा है जब तक आगम (तंत्र शास्त्र) का परिशीलन नहीं करता। जर्मनो के सुप्रसिद्धि विद्वान 'सरजान उडरफ' के शब्दो में 'जब तक व्यक्ति को आगम शास्त्र का ज्ञान नहीं होता तब तक वह व्यक्ति हिन्दुत्व की भावना से अपरिचित रहता है।' आगम शास्त्र के मध्य अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। सभी आगम निगम मूलक है। निगम (वेद) में जिन रहस्यों को श्रुति द्वारा संकेत से कहा गया है। उन्हीं रहस्यों का विस्तृत विवेचन आगम शास्त्र में किया गया है। इसीलिए तन्त्र विद्या को रहस्य विद्या तथा गोपनीय कहा गया है। परम पुण्यभूमि भारत वर्ष में तन्त्र विद्या का सम्मान अनादि काल से अद्य वधि अक्षूण रूप से बिद्यमान है। वेद उपनिषद आरण्यक-कल्पसूत्र तथा पुराणों में तंत्र बिधा का वर्णन भरा हुआ है। तन्त्रविधा से अनभिज्ञ हो इसे आधुनिक तथा अभिचारात्मक क्रियाओं का भंडार मानते हैं। वस्तुत तन्त्र विधा य़ोग क्रियाओं से परिपूर्ण परब्रह्म स्वरूपिणी मोक्षदायिनी ब्रह्मविधा है। तन्त्रों में सर्वत्र यही रहस्य निहित है।

वेदों में सम्पूर्ण जगत 'वाक् तत्व' कहा गया है। पावन ब्रह्माण्ड वाक्तत्व से व्याप्त है। 'ऐतरेय आरण्य' में कहा गया है—'वागवेद सर्वम्'।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'वाचीमा विश्वाभुवनान्यर्पिता' (तैत्तरीय ब्राह्मण) इत्यादि श्रौतसिद्धांता के आधार पर वाक्तत्व से प्रादुर्भूत शब्द प्रपंच से ब्रह्माण्ड का कोइ भाग खाली नहीं है। अड़ स्थावरादि तमो-सर्ग, कृमि-कीट-पक्षी मनुष्य भेद भिन्नपंचविधरजो सर्गतथा यक्ष-राक्षस-पिशाच-गन्धर्व पित्र्य ऐन्द्र। प्रजापत्य ब्रह्म भेद भिन्न अष्टविध सत्वसृष्टि, सब वाक्तत्व से ही प्रादुर्भूत है। सम्पूर्ण तीनों लोकों की भगवती श्रुति वाक्तत्व ही कहती है। जैसे—

'वागिति पृथिवी' जै० उ० (४।२२।११)

'वाग्ध चन्द्रमा भूत्वापरिष्टाग्रस्थो (शत० ८।१।२।७)

'या सा वाक् असीस आदित्यः।' (शत० १०।५।१।४)

उपर्युक्त श्रुति सम्मत सिद्धान्तानुसार सम्पूर्ण जगत् वाक् तत्व का ही परिणाम है। पुराणों में सृष्टि-स्थिति-नाश के अधीश्वर त्रिगुण स्वरूप ब्रह्मा-सरस्वती, विष्णु लक्ष्मी, शंकर-उमा के रूप में त्रियुगों को प्रतिष्ठित किया है। सृष्टि कार्य भी पितामह ब्रह्मा स्वकीय शक्ति श्री सरस्वती की सहायता से ही करते हैं।

सरस्वती के ध्यान में उनका स्वरूप कहा गया है कि आप वीणा पुस्तक धारिणी है। यहाँ पर वीणा से स्वर तथा पुस्तक से व्यंजन रूपी शब्द ४ संकेत ध्वनित होता है। वागतत्व भी द्विधा विभक्त है स्वर तथा व्यंजन के रूप में और उन्हीं के द्वारा सारे ब्रह्माण्ड की रचना सम्पन्न होती है। इसी रहस्य को भगवती श्रुति 'वागेवेदं सर्वम्' के द्वारा कहती है। इसी रहस्य का तंत्र शास्य को भगवती श्रुति 'वानेवेदं सर्वम्' के द्वारा कहती है। इसी रहस्य का तंत्र शास्त्र में विशद रूप से वर्णन किया गया है। तंत्र शास्त्र में अक्षर तत्व का विवेचन अद्वितीय है।

प्रणव द्वारा पंचाशत् वर्णो से पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वर्णन विश्व को आश्चर्य में डालने वाला है। ऐसी सटीक-तर्क संगत वैज्ञानिक वर्णन अन्यत्र दुर्लभ हैं। नेत्रतंत्र में कहा गया हैं। कि वर्ण में शक्ति स्तथात्माच त्रित त्वं चेत्यनुत्तमम्' अर्थात् अक्षर में आत्मा-शिव शक्ति तीनों ही विद्यमान है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस कथन में अक्षर में चैतन्य शक्ति निहित हैं । और इसी चैतन्य शक्ति द्वारा मन्त्यात्मक अक्षरों से साधना करने वालों के सभी इच्छित कार्य पूर्ण होते हैं । अक्षर की महिमा अनन्त है। अक्षर तत्व में सभी देवताओं का निवास है ।

'ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् वेदुः अधि विश्वे निवेन्द्रः । ऋ. १ मं० १६४ सं. ३९३१ उपर्युक्त विवेचन से तंत्र शास्त्र की प्रामाणिकता तथा अक्षर तत्व की महत्ता का बोध होता है ।

उपर्युक्त दश महाविद्याओं का भी रहस्यात्मक वर्णन तंत्र शास्त्र में वर्णित है । नियम में सारे ब्रह्माण्ड का संचालक सूर्य तत्व को माना है । सूर्य ही चराचर का प्राण है तथा आत्मा है । 'सूर्योआत्मा जगतसास्तथुषश्च' सूर्य की गति से ही विश्व में ऋतु परिवर्तन आदि होता है । परिवर्तन का मुख्य कारण भी सूर्य ही हैं । तंत्र शास्त्र में भी प्रकारान्तर से सूर्य तत्व की प्रधानता है । सूर्य ही शिव है तथा सूर्य की अनन्त रश्मियां ही अनन्त रुद्र हैं । 'असखयाता सहस्राणिये रुद्रा ये चैनं रुद्रा अभितोदिक्षु श्रिताः इसी प्रकार एक सूर्य को लक्ष्य में रखकर श्रुति कहती है :—

'एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्धुयं इमांल्लाकानीशत ईशनीभिः ।'

इस भगवान सूर्य रूपी रुद्र के भ्रमण को तंत्र शास्त्र में दशकालों में विभक्त किया है । अतः प्रत्येक काल के रुद्र की शक्ति ही तंत्र वर्णित महाविद्या हैं । रात्रि के १२ बजे से प्रारम्भ करके १२ बजे निशीथ पर्यन्त काल के अधिष्ठाता दशशिव है तथा उनकी शक्ति स्वरूपा दश महाविद्या हैं । निशीथकाल के शिव महाकाल हैं तथा उनकी शक्ति महाकाली है । ब्रह्म मुहूर्त काल में शिव अक्षोम्भ तथा उनकी शक्ति तारा महाविद्या हैं ।

प्रातःकाल में वही सूर्य पंचवक्त्र शिव कहे जाते हैं तथा उनकी शक्ति षोडशी भगवती श्री विद्या कही जाती है । इसी प्रकार प्रत्येक काल की शक्ति ही महाविधा है । अथवा सूर्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दश दिशाओं में भ्रम करते हुए अपने स्वरूप को परिवर्तित करते है। उपरोक्त दश दिशा ही सूर्य रुद्र की दश शक्तियां हैं। और ये ही दशमहाविद्या कही जाती है इन दशमहाविधाओं में श्री भगवती काली महाविद्या को आधा शक्ति कहा जाता है।

दश महाविधाओं के २ कुल प्रसिद्ध हैं। काली कुल तथा श्री विधाकुल प्रस्तुत निबन्ध में भगवती काली महाविधा के विषय में प्रकाश डाला जा रहा है।

बैदिक काल में भी अनेक वार देवी या शक्ति शब्द का प्रयोग हुआ है।

'प्राणों वा अपानौ व्यानस्तिस्रो देव्यः' (ऐन २-४) इसमें प्राण-अपान तथा ब्यान को देवी बतलाया है। अपान-व्यान भी प्राण के ही रूप हैं। वास्तव में प्राण ही शक्ति है, इसी प्राण अपान-व्यान को पौराणिक क्रम में महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती कहा गया है। महाविद्या क्रम में यही तीनों काली तारा तथा षोडशी कहलाती हैं। 'ता वा एता देव्यः दिशौ ह्येताः।'

महा भागवत में ऐसी कथा है कि जब सतीजी अपने दक्ष के घर जाने लगीं तब उन्हें श्री शंकर भगवान ने रोका, भागे तब श्री भगवती ने दशों दिशाओं में अपने दश को रूप धारण कर उन्हें प्रत्येक दिशा में रोका, वे ही दश महाविद्या कही जाती है।

इन दश महाविद्याओं में श्री भगवती काली को आद्या शक्ति कहा जाता है। इन दश महाविद्याओं के २ कुल प्रसिद्ध है। १. कालीकुल २. श्रीकुल।

प्रस्तुत निबन्ध में भगवती श्रीकाली विद्या के विषय में प्रकाश डाला जा रहा है। ये सब महाविद्या अग्नि स्वरूपी रुद्र की शक्तियां हैं। 'अग्निर्बेस देवः तस्यैतानि नमामि शर्य इति प्राच्या आचक्षते, भब इति वाहीका, पशूनाँपति रुद्रोऽग्निरिति।'

'पंचशून्ये स्थितातारा सर्वान्तेकालिका स्मृता' इस तंत्र वाक्य से भी काली की प्रधानता सिद्ध होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'चतुर्युगानां राज्ञी वै कालिका परिकीर्तिता।

विद्याराज्ञी सिद्धविद्या कलौ शीघ्र फलप्रदा।' (शक्ति संगम तंत्र)

'कलौ काली विशिष्यते आदि वचनों से काली रूप की प्रधानता ज्ञात होती है। त्रिपुरोप निषद में कहा गया है। 'एका सा आसीत् प्रथमा या न वासीत्।'

इस मन्त्र सूक्ष्म में भी अग्नि का प्रतिपादन तथा काली स्वरूप 'वाग्भव बीज का उद्धार होता है। इस प्रकार अनेक वैदिक—तांत्रिक वचनों के द्वारा भी आद्याविद्या काली का वर्णन किया गया है। अब काली विद्या के स्वरूप का भी विश्लेषण किया जाता है। ऋषियों का आदेश है कि तुम जिस देवता की उपासना करने चले हो। तो पहिले उसके स्वरूप का ध्यान करो'। आद्या शक्ति का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है 'शवारुढ़ाँ महाभीमां घोर द्रष्ट्रां हसन्मुखीम्। चतुर्भुजा खड्ग मुण्ड वराभय करां शिवाम्। मुण्डमाला धरां देवी ललज्जिह्वां दिगम्बरां एवं संचिन्तये काली श्मशानालय वासिनीम्।

(शाक्त प्रमोद काली तंत्र)

वह महाकाली मुर्दे पर सवार है उसकी शरीराकृति महा-भयानक है। उसकी दष्ट्रा बड़ी तीक्ष्ण है। और वह बार-बार हंस रही है। उसके चार हाथ हैं एक हाथ में नर मुण्ड है तथा दो हाथों में वर तथा अभय मुद्रा हैं। गले में मुण्डमाल है जिह्वा बाहर निकल रही है वह एक दम नग्न है और श्मशान ही उसकी आवास भूमि है। पूर्वोक्त ध्यान का यही अक्षरार्थ है। अब इसके रहस्यार्थ दृष्टि डालते है।

हम पहले बतला आये हैं कि महाकाली नाम की शक्ति प्रलय रात्रि के मध्यकाल से सम्बन्ध रखती है। उस समय घोर तम का साम्राज्य रहता है। इसी को प्रकट करने के कारण उनका स्वरूप काला माना गया है। संसार जब तक शक्तिमान रहता है तभी तक वह शिव है, शक्तिहीन हो जाने पर वह शव हो जाता है। प्रलयकाल में विश्व शवरूप से पड़ा है उस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर वह खड़ी है, इसी रहस्य को बतलाने के लिए उसे शवारूढ़ कहा गया है। संसार का संहार करने से उसकी आकृति भयानक हैं।

निर्बल मनुष्य के आक्रमण को विफल करके सबल मनुष्य उसकी निर्बलता पर हँसा करता हैं। वही दशा आज विश्व की हैं, जो विश्व की प्रजा अपने को सर्वेसर्वा मानते थे वही विश्व आग ध्वस्त हो गया हैं, इसका प्रतीक हो महामाया का हँसना हैं। प्रत्येक गोल वृत्त में ३६० अंश माने जाते हैं उसमें ९०-९० अंश के चार बिभाग होते हैं। यही खगोल वृत्त की चार भुजा हैं। इन्हीं को 'ख स्वास्तिक' कहा जाता है। खगोल के यही चारों स्वास्तिक इन्द्र देवो पलक्षित चित्रा नक्षत्र, पूषोपलक्षित रेवती नक्षत्र तथा ताक्ष्योंपलक्षित श्रवण नक्षत्र एवं बृहस्पति दैवत्य पुष्यनक्षत्र इन चारों नक्षत्रों से खगोल वृत्त के चार भाग होते हैं। चित्रा से श्रवण जितनी दूरी पर है, रेवती से पुष्य की दूरी उतने ही फासले पर हैं! आकाश इन्हीं चारों भुजाओं का वर्णन करती हुई श्रुति कहती है।

'स्वातिन इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः।
स्वास्ति न स्ताक्ष्योऽरिनेमिः स्वास्तिनो बृहस्पतिर्द धातु। (यजु.)

अनन्ताकाश में चतुर्भुज रूप में परिणित होकर वही विश्व का संहार करती है। इसी का प्रतीक भगवती की चार भुजायें हैं। संहार का प्रतीक खड्ग है, नष्ट हुए प्राणियों का प्रतीक कटा मस्तक है, अभय पद की प्राप्ति उसी की आराधन पर निर्भर है इसी का प्रतीक अभय मुद्रा है, तथा वही वर प्रदान करके साधक की इच्छा पूर्ण करती है—इसका प्रतीक वर मुद्रा है।

विश्व ही उसका वस्त्र है किन्तु विश्वनाश हो जाने पर वह आवरणहीन है, वहां केवल दिशायें ही वस्त्र हैं अत एवं वह नग्न है। सम्पूर्ण विश्व जब श्मशान हो जाता है तब उस तमोमयी का विकास होता है। श्मशान इसी रहस्य का प्रतीक है यह है महामाया भगवती महाकाली का स्वरूप—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यहां पर संक्षेप में तंत्रशास्त्र की महिमा तथा महाविद्याओं का रहस्य भगवती आद्या माँके स्वरूप का रहस्य बतलाने का प्रयत्न किया गया है । वैसे जग ननी की महिमा कौन वर्णित कर सका है । भगवती दक्षिण कालिकाम्बा की कृपा से ही इस ग्रन्थ का प्रणयन सम्भव हो सका है । इस ग्रन्थ का लेलक—संकलनकर्ता मेरा तृतीय पुत्र श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी तंत्रमणि हैं । उसी ने इस ग्रन्थ की प्रेस कापी भी तैयार की है तथा मेरे ज्येष्ठ पुत्र श्री डा० गोवर्धननाथ चतुर्वेदी ने प्रूफ संशोधन का महत्वपूर्ण भार स्वयं लेकर मेरे पुत्र पं० नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी की सहायता की ।

एतादर्थ पं०नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी तंत्रमणि उनके सदैव आभारी रहेंगे । इस मेरे पुत्र नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी अंकिचन प्रयास से जिज्ञासु साधकों का यदि अल्पमात्र भी उपकार हो सका तो मैं अपना प्रयत्न सार्थक समझूँगा । अन्तमेंकलौ काली-कलौ काली-कलौ काली न शंसय इस उक्ति के अनुसार इस भीषण युग में मां आद्या श्री दक्षिण कालिका ही मानव को एकमात्र अवलंब है कथा उन्हीं की साधना एवं कृपा से जीव इहलोक कथा पार-लौकिक सिद्धि प्राप्त करने में समर्थ हैं । इस ग्रन्थ में प्रेस की जो भी अशुद्धि रह गई हों यदि पाठक वृन्द उनकी तरफ इंगित करेंगे तो दुबारा संस्करण में वह त्रुटि भी दूर की जा सकेगी । इतना कहकर मैं श्रीजगदम्बा के चरणों में नतमस्तक होकर यह अमूल्य साधना कथा सिद्धि का उपहार आप लोगों को समर्पित करता हूँ ।

———

विदुषां वंशंवदः

अमरनाथ चतुर्वेदः

श्री आद्यापीठ, गतश्रम टीला, मथुरा.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री दक्षिण कालिका पद्धति
एवं
श्री महाकाली साधना तन्त्र की
विषयानुक्रमणिका:

१- प्राक्कथन	१
२- वंश परिचय मिदम्	८
३- फोटो और प्रशस्ति पत्र	११
१- गणेश स्तुति	१
२- क्षेत्र कीलनम्	२
३- गुरु परंपरापचक स्तोत्र	
४- श्री गुरु पादुका पञ्चकम्	५
५- अथ प्रात: स्मरामिशिव शक्ति मुख रविन्दम्	७
६- अथ दक्षिण कालिका क्रम स्तोत्रम्	९
७- कुंडलिनी पंचकम्	१९
८- पात्रा सादनम्	००
९- बर्धनीकलश स्थापनम्	००
१०- सामान्यार्ध्य विधि:	०१
११- विशेषार्ध्य बिधि:	०६
१२- शुद्धि संस्कार	३३
१३- वह्नि कला:	३४
१४- सूर्य कला:	३५
१५- सोमकला:	,,
१६- ब्रह्मकला:	,,
१७- विष्णुकला:	३६
१८- रुद्रकला:	,,
१९- ईश्वर कला:	,,
२०- सदाशिव कला:	३७
२१- यन्त्र पूजनम् प्रकार:	३९
२२- श्री दक्षिण कालिका पूजन यन्त्रम्	४०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२३- योग मन्दिर प्रवेश	४१
२४- तत्वा चमनम्	,,
२५- गुरु पादुका मन्त्र	,,
२६- घन्टा पूजा	४२
२७- संकल्प	,,
२८- आसन पूजा	४३
२९- देहरक्षा	,,
३०- लघु प्राण प्रतिष्ठा	४४
३१- दीप पूजा	४५
३२- अन्तर्याग	,,
३३- ध्यानम्	४७
३४- श्री दक्षिण कालिका पूजन यन्त्र	४८
३५- श्री दक्षिणकालिका पूजन यन्त्र मन्त्र सहित	४९
३६- श्री दक्षिण कालिका पूजन यन्त्र	५०
३७- यन्त्रोद्धार	,,
३८- यन्त्रराजम्	,,
३९- माला पूजनम्	,,
४०- संकल्पः	५१
४१- अथ श्री दक्षिण कालिका पूजन पद्धतिम्	६१
४२- दक्षिणकालिका पद्धति के अनुसार साधकों फल प्राप्ति	६१
४३- पंचदश तिथि नित्याः	६२
४४- पंचदश तिथि नित्याःध्यानम्	६३
४५- अनुलोम-विलोम क्रमम्	,,
४६- पंचम कारनाम	,,
४७- पंचदश तिथि नित्याः	,,
४८- काली की नित्यायें मन्त्र एवं ध्यान सहित	६९
४९- बटु पूजनम्	,,
५०- सुवासिन्याः	,,
५१- अथ कुमारी पूजा	७०
५२- बलिदान विधिः	७२
५३- अथ श्री दक्षिणकानिका पंचाग प्रारम्भ	७३
५४- अथ कालिका कवचम्	,,
५५- अथ श्री जगन्मंगल महाकाली कवचम्	७६
५६- आद्या श्री कालिका त्रैलोक्य-विजय कवचम्	८०

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५७- अथ काली हृदयम्	८३
५८- अथ श्री ककारादि कालिकोष्टोत्तर शतनाम	८८
५९- श्री आद्या कालिका भगवंत्या: ककारादि शतनाम स्तोत्र	९०
६०- कालिका सहस्रनाम स्तोत्र	९६
६१- अथ ककारादि काली सहस्रनाम स्तोत्र	११०
६२- श्री महाकाली सहस्रनाम स्तोत्र	१२७
६३- अथ देव्या: श्रीकर्पूर स्तवंराज:	१४२
६४- अथ श्री महाकाली क्षमापराध स्तोत्रम्	१४६
६५- श्री काली स्तोत्रम्	१५०
६६- ज्ञानकालिका स्तोत्रम्	१५६
६७- सुधाधार काली स्तोत्र	१५८
६८- अथ शान्ति स्तोत्र	१६४
६९- श्रीकालिकाष्टक	१६५
७०- श्री काली स्तवन	१६८
७१- अथ श्री काली सूक्तम्	१७०
७२- अथोपनिषद्	१७७
७३- सामान्य पूजाविधि	१७९
७४- आचमन	"
७५- मार्जन	"
७६- प्रक्षालन	१८०
७७- मुखशुद्धि मन्त्र	"
७८- नासिका स्पर्श मन्त्र	"
७९- दक्षिण नेत्र स्पर्श मन्त्र	"
८०- वाम नेत्र स्पर्श मन्त्र	"
८१- दक्षिण कर्ण स्पर्श मन्त्र	"
८२- वाम कर्ण स्पर्श मन्त्र	"
८३- नाभि स्पर्श मन्त्र	१८१
८४- छाती स्पर्श मन्त्र	"
८५- मस्तक स्पर्श मन्त्र	"
८६- दाएं कन्धे स्पर्श मन्त्र	"
८७- बायें कन्धे स्पर्श मन्त्र	"
८८- ऋष्यादिन्यास	१८२
८९- करांगन्यास की विधि	१८३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
९०- अंगन्यास की विधि १८३
९१- वर्णन्यास १८४
९२- महाषोड़ान्यास: १८५
९३- तत्वन्यास १८८
९४- बीजन्यास १८९
९५- अथ अन्तर्मातृकान्यास प्रयोग: १९०
९६- अथ बहिर्मातृकान्यास प्रयोग: १९३
९७- कालीमन्त्रोद्धार १९७
९८- तान्त्रिक कार्यों में सिद्ध आसन प्रयोग ,,
९९- अथ काली मातृकान्यास: १९८
१००- मन्त्र जप प्रयोग: २०३
१०१- मुखशुद्धि आद्याकाली २०५
१०२- अथ श्री दक्षिण कालिका खंगमाला ,,
१०३- षडंगावरणम् ,,
१०४- प्रथमावरणम् २०७
१०५- द्वितीयावरणम् २०८
१०६- तृतीयावरम् २१२
१०७- तुरियावरणम् २१४
१०८- पञ्चमवारणम् २१५
१०९- षष्ठावरणम् २१७
११०- सप्तामावरणम् २१९
१११- अष्टमावरणम् २२१
११२- नवमावरणम् २२२
११३- दशमावरणम् २२३
११४- मुद्रा-विवरण २२५
११५- काली मन्त्र भेदा: २३७
११६- मन्त्रानुष्ठान विधि: २३८
११७- मन्त्र प्रयोग २३९
११८- देवीमानगणनम् २४१
११९- त्रिपुरारहस्य २५४
१२०- कालीस्तुति २५५
१२१- श्री काली जी की आरती २५६
२२२- श्री काली चालीसा २५८
२२३- श्री चण्डी चरित्र में काली की उत्पति
और रक्तबीज बध का वर्णन २३२
२२४- स्थूलध्यान, तेजोध्यान, सूक्ष्मध्यांन २६५
२२५- शक्ति उपासकों के लिए आवश्यक नियम २६८
२२६- देवी मानम् २७१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गणेश स्तुतिः सद्धर्म चिन्तामणौ

प्रातः स्मरामि गणनाथ मनाथ बन्धुं
सिन्दूरपूणे परिशोभित गण्ड युग्मम् ॥
उद्दण्ड विघ्न परि खण्डन चण्ड दण्ड-
माखण्डलादि सुरनायक बृन्दवन्द्यम् ॥१

प्रातर्नमामि चतुरान वन्द्यमान-
मिच्छानुकूलमखिलं च वरंदधानम् ॥
तन्तुन्दिलं द्विरसनाधिप यज्ञ सूत्र
पुत्रं विलास चतुर शिवयोः शिवाय ॥२

प्रातर्भजाम्यभयदं खलुभक्त शोक
दावानलं गणविभुं वर कुंजरास्यम् ॥
अज्ञानकानन विनाशन हव्यवाह
मुत्साह वर्धन महं सुतमीश्वरस्य ॥३

फलश्रुतिः

श्लोक त्रयमिदं पुण्यं सदासाम्राज्य दायकम् ॥
प्रात रुत्थाय सत तंयः पठेत्प्रयतः पुमान् ॥

जो मनुष्य प्रातः काल उठकर यत्न के साथ इन तीन श्लोकों का पाठ करता है। वह पत्यवान् होता है और साम्राज्य वान होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री दक्षिण कालिका पद्धति मन्त्र

क्षेत्रकीलन जपस्थान को शुद्ध करने के लिए तथा किसी विशेष स्थान को कीलन करने और कार्य सिद्धि को देने वाला है।

क्षेत्रकीलनम्

जप स्थाने गत्वा पृथ्वीं संगृह्य,
'गृहीतस्यास्य मन्त्रस्यपुरश्चरणसिद्धये।
मयेय गृह्यते भूमिर्मन्त्रोयं सिद्धि माप्नुयात्॥"
इति भूमि संगृह्य अश्वत्थो दुम्बरप्लक्षान्य
तमवितस्तिमात्रान् दश कीलान्;
'ओं नमः सुदर्शनायास्त्राय फट्' इतिमंत्रेण।
अष्टोत्तरशतं कृत्वोऽभि मंत्रितान्;
'ओं ये चात्र विघ्नकर्तारंभुविदिव्यंतरिक्षगाः।
विघ्नभूताश्चये चान्ये मम मन्त्रस्य सिद्धि-
वानुभयं तत् कीलितं परित्यज्य विदूरतः।
जप सर्पंतुते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे।
इति मन्त्र द्वयेन दशदिक्षु:दशकीलान् निरवनेत्।
ततस्तेषु 'सुदर्शनास्त्रायफट्' इति मन्त्रेण प्रत्येक-
कीलकंसम्पूज्यनिरवनेत्।

गायत्री

ओं कालिकायै च विद्महे; श्मशानवासिन्यैधीमहि
तन्नोऽघोराप्रचोदयात्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हृदयादिन्यास:

ओं कालिकायै हृदयाय नमः ।
ओं विद्महे शिरसे स्वाहा ।
ओं श्मशान वासिन्यै शिखायै वषट् ।
ओं धीःमहि कवचाय हुम् ।
ओं तन्नोघोरा नेत्रःत्रयाय वौषट् ।
ओं प्रचोदयात् अस्त्राय फट् ।

क्षेत्रकीलन के द्वारा मनुष्य अनेक सिद्धि प्राप्त करता हैं । क्षेत्रकीलन से भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, इत्यादि का भय जाता रहता है । अर्थात् स्थान पवित्र हो जाता है ।

प्रातःकाल उठकर गुरु का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए।

गुरु परंपरा पंचक स्तोत्र

ध्यानम्

आब्रह्यलोकादाशेषादालोकपर्वतात् ।
ये वसन्लि द्विजादेवास्तेभ्यो नित्यं नमाध्यहम् ॥१॥
तत् पाद पंकज युगस्मरण प्रभावात् ।
मन्वादयोऽप्यधिगताखिल मन्त्र तत्वाः ॥
संसिद्धिमापुरखिलां करुणार्द्र चित्तं ।
तंभावयामि सततं गुरुनाथ मन्त्रः ॥२॥

गुरु परंपराचक स्तोत्र

ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्माविद्या सम्प्रदाय कर्तृभ्यो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः सर्वोप्लरहित प्रज्ञानघन।
प्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोहमास्मि; ब्रह्ममाहमस्मि ॥
श्री नाथादि गुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीकमं मण्डलम्।
(शाम्भवम् ॥)

वीरान्द्वयष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावली पञ्चकं;
श्रीमन्मानिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
वन्देगुरुपदद्वन्द्वमवाङ्. मनसगोचरम्।
रक्तशुल्कप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥
नारायणंपद्मभुवं वसिष्ठं; शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं; गोविन्दयोगीन्द्र-
मथास्य शिष्यम्।
श्रीशंकराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च
शिष्यम्।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरुन संतत
मानतोऽस्मि ॥

प्रातःकाल उठकर गुरु का ध्यान करके ब्रह्मे कर्म करें।

ब्रह्ममुहूर्तकृत्यम्

मन्त्रमहार्णवश्रीविद्यार्णवनित्योत्सवादिषु प्रति-
पादितम्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्मेमुहूर्ते चोत्थायनिद्रास्थानाद् बहिर्निर्गम्यहस्तौ-
पादौ मुखं च प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यशुवस्त्रं
परिधाय शुद्धासन उपविश्याज्ञाचक्रे कोटीन्दुप्रकाशे
स्वगुरुं ध्यायेत् ।

ओंआनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं-
नित्यमहंभजामि ॥

श्रीगुरुपादुकापञ्चकम्

ब्रह्मरन्ध्रसरसीरुहोदरे नित्यलग्नमवदातमद्भुतम् ।
कुण्डलीविवरकान्डमण्डितं द्वादशार्णसरसीरुहभजे ॥१
तस्यकन्दलितकर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादिरेखया ।
कोणलक्षितहलक्षमंडली भावलक्ष्यमबलालय भजे ॥२
तत्पुटे पटुतडित्कडारिमस्पर्द्धमानमणिपाटलप्रभम् ।
चिन्तयामि हृदिचिन्मयंवपुर्नादविन्दु-
मणिपीठमुज्ज्वलम् ॥३
ऊर्ध्वमस्यहुतभुक्शिखात्रयं तद्विलासपरिबृंहणास्पदम् ।
विश्वघस्मरमहोच्चिदोत्कट व्यामृशामि-
युगमादिहंसयोः ॥४
तत्र नाथ चरणारविन्दयोः कुङ्कुमासवपरीमन्दयोः ।
द्वन्द्वविन्दुमकरन्दशीतलं मानसं स्मरत्तिमिङ्गलास्पदम् ॥५
निसक्तमणिपादुका नियमितौघकोलाहलम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्फुरत्किसलयारुणं नखसमुल्लसच्छन्द्रकम् ।।
परामृतसरोवरोदितसरोज सद्रोचिषम् ।
भजामिशिरसि स्थिते गुरुपदारविन्द द्वयम् ।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितंयेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।
'ऐं ह्रीं श्रीं ह् स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं-
ह्सौः स्हौः स्वरूपनिरूपणहेत्वमुकाम्बा सहितश्रीगुरु
पादुकांपूजयामि"
"स्वच्छप्रकाशविमर्शहेत्वमुकाम्ब सहित ए ं श्रीरमगुरु
पादकांपूजयामि'
'स्वात्मारामपञ्जरविलीनचेतस्कामुकाम्बासहिता श्री-
परमेष्ठिगुरुपादुकां पूजयामि,' इतिगुरुपरमेष्ठिगुरु
पादुकां पूज्यामि,' इतिगुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरु पादुकां
पूजयेत् ।
गुरुर्ब्रह्मागुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात्परं ब्रह्म तस्मैश्रीगुरवेनमः ।।
प्राणानायम्य तच्चरणयुगलविगलदमृतरस-
विसरपरिप्लुताखिलाङ्गमात्मानं भावयेत् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्राह्म मुहूर्तकर्न के उपरान्त प्रातः स्मरामिशिव-शक्तिमुखार विन्द स्तोत्र पाठ करना चाहिए।
अथप्रातः स्मरामिशिव शक्तिमुखावर विन्द स्तोत्रप्रारम्भ

अर्धजटा सुमनशोभित कुंतलार्धम्।
धत्तूरपाननिशरन्तस्मितशौभितार्धम्॥
सिन्दूर भस्म रचितं युगमंगरूपं।
प्रातः स्मरामिशिव-शक्तिमुखारविन्दम्॥१॥
त्र्चाप चंचललसत् सरकामशुभ्र,
गण्डस्थलं ललित मौक्तिकहार युक्तं॥
शुभ्र जटाशिरसिकेश विराजमानं,
प्रातः स्मरामिशिव-शक्ति मुखारविन्दम्॥२॥
वैडूर्य नीलमणिकण्ठ-युधाद्य रेखं,
नागैर्विभूषित तनू भय भभंगवेशं॥
वामेशिवावशनचित्रविचित्रयुग्म्,
प्रातः स्मरामिशिव-शक्तिमुखारविन्दम्॥३॥
श्रीशम्भु शक्ति मलिकुण्डल कोमलंगं,
व्याघ्रां वशं वरधरं रजनीश वेषम्
भानुः शशी कमल कुण्डल दीप्त युग्मं,
प्रातः स्मरामिशिव-शक्ति मुखारविन्दम्॥४॥
सत्य स्वरुप मुनिदेव मनादिरुप,
संसार बीज मचलं भवसारभूतं॥
भूताधिपंनिखिलपालक विश्वनाथं,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रातः स्मरामिशिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥५॥
विंशच्चतुर्भुजयुतायुध युक्तविभ्र,
दाक्षादिसिद्ध मुनिपन्नग सेवतान्छ्रि ॥
नित्यं निरन्तर नवं नव नित्यरूपं,
प्रातः स्मरामिशिव-शक्तिमुखारविन्दम् ॥६॥
कल्लोललोलगुतिगह्वर चिन्मयांग,
रूपैर्निरूप परमं रति रम्य गम्य ॥
देवारिमर्दनपरं भवसिन्धुपोतं,
प्रातः स्मरामिशिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥७॥
सत्यस्वरूपयुगलादिमनन्त नित्यं,
विश्वात्मकं वर वरेश्वर विश्वभूतम् ॥
ब्रह्माद्यवेदितशिवाशिवमेवसर्वं,
प्रातः स्मरामिशिव-शक्ति मुखार विन्दम् ॥८॥
ब्रह्माण्ड मण्डलमयोतनु रेवयस्य,
विश्वार्थ कारण गुणां भव चित्र खंडम् ॥
शक्तिः शिवा, शिव; शिवं रूप सर्वं,
प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् ॥९॥
वेदादि शास्त्र मणि मंडल मन्त्रगम्यं,
चिद्ब्रह्म व्यापक जगज्जननं च भक्त्या;
पादं भजेच्चभय भंजन कारि शुभम्
प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दम् ॥१०॥
यः संस्मरेद् भव भयं न पुनः प्रयान्ति;

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यंचावलोक्य खलु निश्चल सर्व सिद्धिः ॥
येऽ्यचर्चयंति भव सिन्धु मतीत्ययान्ति
प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दम् ॥१॥
नित्यं पठेन्स्तव मिद वर युग्म रूपं,
त्रैलोक्य वश्यमिद मार्तं जनानुसेव्यम् ।
सिद्धिर्भवेद् भगवतः कृपयातिरम्यं,
प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखार विन्दम् ॥२॥
इति प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्दम् स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

❀❀❀❀❀

प्रातः स्मरामि शिव-शक्ति मुखारविन्द स्त्रोत के बाद दक्षिण कालिकाक्रम स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

॥ अथ दक्षिण कालिकाक्रम स्तोत्र प्रारम्यते ॥

ॐ नमो गुरुभ्यो देवेभ्यो तथा परतर यच ।
परापरेभ्य तदच्च तथा परात्परराय च ॥१॥
क्षेत्रपालं नमस्कृत्य द्वारदेवान् विधानतः ।
लक्ष्मी सरस्वती दुर्गा गंगा गोदावरी तथा ॥२॥
भोगवतीं नमस्कृत्य वास्तु देवान्नमेत्तदा ।
विघ्नराजं च वास्त्वीश क्षेत्रेशं प्रणमाभ्यहम् ॥३॥
नैर्ऋतञ्चैव ब्रह्माणं ब्रह्मकर्मात्मकं प्रिये ।
विघ्नान् प्रणम्य विधिना तान् देवाश्च नमे ततः ॥४॥
आधार शक्ति त्वां नत्वा पंकज द्वय धारिणीम् ।
नील वर्णा महामायां द्वादशाक्षर रूपिणीम् ॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ततोधर्मं गणैः सेव्यां तां देवीं शक्ति रूपिणीम् ।
नीलवर्णं महाकायं कूर्मं हिमाद्रि संस्थितम् ।।६।।
सर्व शक्ति तनुं विष्णु कूर्माकारं नमाम्यहम् ।
तस्यपृष्ठेस्थितं देव मनन्तं तं नमाम्यहम् ।।७।।
सहस्त्र फण संयुक्तं सर्पाकारं हरि नमः ।
हिमाद्रि सदृशं विष्णुं एक दण्डधरं विभुम् ।।८।।
फणा सहस्त्रैः मणिभि भूषितं तं नमाम्यहम् ।
तस्य कुक्षगतं ध्याये ल्लाङ्गलस्त्रं शुभावहम् ।।९।।
मुद्गरं वामभागे च तत्रैकादश संयुतम ।
तस्य मूर्ध्नि स्थितं ध्याये द्वराहं विष्णु मव्ययम् ।।१०।।
एकदन्त महाकायं काल मेघ समप्रभम् ।
तस्य दन्ते सदा ध्यायेत् पृथिवीं पद्म पायीनीम् ।।११।।
नील वार्णं महादेवी शार्णि शूक विभूषिताम् ।
अणिमादि गुणै र्युक्तां सर्व तत्व विभूषिताम् ।।१२।।
तस्यामूर्द्धि सदा ध्यायेत्, समुद्रान रत्न संयुतान् ।
नाना पर्वत संयुक्तां पृथिवीं चिन्तये द्धिया ।।१३।।
पर्वतां श्चिन्तये त्तस्यां सर्वत्र कुल भूषितान् ।
दिग्गजेभ्यो नमस्कृत्य योगेभ्यः प्रणमेत् सदा ।।१४।।
मुनीन्द्रेभ्य ऋषिभ्यश्च योगशास्त्र धराय च ।
शाक्तेभ्यो वैष्णवेभ्यश्च शैवेभ्यः प्रणमेत् सदा ।।१५।।
यन्त्रेभ्यो मन्त्रदेवेभ्यः सर्व शास्त्र पराय च ।
चन्द्राय, चन्द्रवंशेभ्यः सूर्य्य वंशेभ्य एव च ।।१६।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनुवंश मनुष्येभ्यः पञ्च भूतेभ्य एव च ।
महाभूतेभ्य भूतेभ्यः, कलाभ्यः प्रणमेत् सदा ॥१७॥
रसेभ्योऽपि नमस्कृत्य; गन्धेभ्यः प्रणमेत् सदा ।
पुष्पेभ्यः पुष्पहासेभ्यो गन्धर्वेभ्यो नमो नमः ॥१८॥
यक्षेभ्यो भूतवर्गेभ्यः सर्व कर्मसु ।
शब्द ब्रह्म स्वरूपेभ्यः प्रणमामि सदा प्रिये ॥१९॥
रुद्रेभ्यो रुद्रवंशेभ्यो भैरवेभ्यो नमो नमः ।
लिङ्गेभ्यो लिङ्ग देवेभ्यो वेद शास्त्रेभ्य एव च ॥२०॥
वेदेभ्योऽपि च शास्त्रेभ्य स्तेभ्यो नित्यं नमो नमः ।
स्थावरेभ्यो नमस्कृत्य ऋषिभ्यः प्रणमेत् सदा ॥२१॥
प्रणमामि सदार्येभ्यो वंशेभ्योऽपि नमो नमः ।
मंत्रेभ्योऽपि नमस्कृत्य मन्त्रात्रेभ्यो नमो नमः ॥२२॥
पूजोपकरणेभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः ।
योगिनीभ्यो नमस्कृत्य शक्तिभ्योऽपि नमो नमः ॥२३॥
रत्नेभ्योऽपि नमस्कृत्य नदीभ्यः प्रणमेत् सदा ।
पीठेभ्योऽपि नमस्कृत्य मातृभ्यः प्रणमेत् सदा ॥२४॥
अन्तेभ्योऽपि नमस्कृत्य इन्द्रेभ्योऽपि नमो नमः ।
क्षेत्रेभ्योऽपि नमस्कृत्य क्षेत्रपालेभ्य एव च ॥२५॥
कुलाचलेभ्यो नत्वा तु प्रादुर्भावेभ्य एव च ।
उक्तानुक्तञ्च यत् किञ्चित्तेभ्यो नित्यं नमोनमः ।२६।
ॐ नमामि कालिकां देवीं कलिकल्मष नाशिनीम् !
नमामिशम्भू पत्नींश्च नमामि भव सुन्दरीम् ॥२७॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आद्यां देवीं नमस्कृत्य नमस्त्रैलोक्य मोहनीम् ।
नमामि सत्य संकल्पां सर्व पर्वत वासिनीम् ॥२८॥
पार्वतीञ्च नमस्कृत्य नमो नित्यं नगात्मजे ।
मातस्त्वदीय चरणं शरणं सुराणां ध्यानास्पदं दिशति
वाञ्छित वाञ्छनीयम् ।
येषां हृदि स्फुरतितच्चरणारविन्दं, धन्यास्त एव नियतं
सरलोक पज्या ॥२९॥
गन्धैः शुभैः कुंकुम पङ्कलेपैर्भक्तिस्त्वदीय चरणं सततं
हिभक्ताः ।
स्मरन्ति भृण्वन्ति लुठन्ति धीरा स्तेषां जरा नैव भवे-
दभ्वग्नि ॥३०॥
तवाद्धि पद्म्यं शरणं सुराणां परापरात्वं परमा
प्रकृष्टिः ।
दिने दिने देवि ! भवेत् करस्थः किमन्यमुच्चैः कथ-
यन्ति सन्तः ॥३१॥
कवीन्द्राणां दर्प कर कमल शोभा परिचितं,
विधुन्नन्जघा मे सकलगण मेतद्गिरि सुते !
अतस्त्वत्पादाब्ज जननि ! सततं चेतसि समद्वितं नारी
नारी भूतं प्रणिहित पदशाङ्कर मयि ॥३२॥
ये ते दरिद्राः सततं हि मातस्त्व दीय पादं मनसा
नमन्ति ! देवासुरा सिद्धवराश्च सर्वे तव प्रसादात्
सततं लुठन्ति ॥३३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हरिस्त्वत्पादाब्जं निखिल जगतां भूतिरभवत्
शिवोध्यात्वा ध्यात्वा किमपि परमं तत्परतरम् ॥
प्रजानां नाथोऽयं तदनु जगतां सृष्टि विहितम् ।
किमन्यान्ते मातस्तव चरण युग्मस्यफलता ॥३४॥

इन्द्रः सुराणां शरण शरण्ये ! प्रजापतिः काश्यप
एवनान्यः ॥
वरः पतिर्विष्णुभवः परेशि ! त्वदीयपादाब्जफलं
समस्तम् ॥३५॥

त्वदीय नाभि नवपल्लवेवा नवांकुरैः लोम वरैः
प्रफुल्लम् ॥
सदा वरेण्ये ! शरणं विदेहिकिं वा परं चित्त वरं
विभाव्यम् ॥३६॥

त्वदीयपादार्चित वस्तु सम्भवः, सुरा सुरैः पूज्यमवाप-
शम्भूः ।
त्वदीयपादार्च्चनतत्परोहरिः, सुदर्शनाधीश्वर ताम्रपा-
लभत् ॥३७॥

धरित्री गन्धरूपेण रसेन च जलंधृतम् तेजोवह्नि
स्वरूपेण प्रणवेब्रह्म रूपधृक् ॥३८॥

मुखं चन्द्राकारं त्रिभुवनपदे यामसहितं; त्रिनेत्रं मेमातः ।
परिहरितियः स्यात् सतु पशुः ।
नसिद्धिस्तस्य स्यात् सुरत सततं विश्वमखिलं
कयक्षेस्तेमातः ! सफल पद पद्मं सलभते ॥३९॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रतुस्त्वं हविस्त्वं शिवस्त्वं शिवाना गतिस्त्वं, गतिस्त्व,
गतिस्त्व भवानि ॥
नवाहं नवात्वं नवा वा क्रियायो वरस्त्वं चरुस्त्वं
शरण्य धराथाः ॥४०॥
नदस्त्वं नदीत्वं गतिस्त्व निधीनां, सुतस्त्वं सुता त्वं
पिता त्वं गृहीणाम् ॥
त्वदीय मुण्डाख्य भवानि ! माला, विधायचित्तेम्बव-
पद्मजादयः ॥४१॥
सुराधिप त्व लभते मुनीन्द्रः, शरण्यमेतत् किमपीह
चान्यत् ॥४२॥
नरस्यमुण्डञ्च तथाहि खड्ग, भुजद्वये ये मनसा जपन्ति ।
मव्येत्तरे देवि ! वराभयञ्च; भवन्ति ते सिद्ध जनाः
मुनीद्राः ॥४३॥
शिवोपरि त्वां हृदये निधाय, जपन्ति विद्या हृदये
कदाचित् ।
सदाभवेत् काव्य रसस्य वेत्ता अन्ते पद द्वन्द्व
मुपाश्रयेत ॥४४॥
दिगम्बरी त्वां मनसा विचिन्त्य, जपेत् पराख्यां जगतां
जनीति ।
जपेत्पराख्या जगतां मतिश्च, किं वा पराख्या शरणं
भवामः ॥४५॥
शिवाविरावैः परिवेष्टतां त्वां, निधाय चित्ते सततंजपन्ति।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भवेय देवेशि ! परा परादि, निरीशतां देवि ! परा
वदन्ति ॥४३॥

त्वदीय शृङ्गाररसं निधाय, जपन्ति मंत्रं यदि वेद मुख्यः ।
भवन्ति ते देवि ! जनापवर्गं कविः कवीनामपि
चाग्रजन्मा ॥४७॥

विकीर्णं वेशां मनसा निधाय, जपन्ति विद्यां चकित
कदाचित् ।
सुधाधियत्वं लभते नरः स, किमस्ति भूम्यां शृणु
कालकाली ॥४८॥

त्वदीय बीज त्रयमातरेत ज्जपन्तिसिद्धास्तुविमुक्तिहेतोः ।
तदेव मातस्त्वत्पाद पद्मगाभवन्ति सिद्धिश्च दिन
त्रयेऽपि ॥४९॥

त्वदीय कूर्च्चद्वय जापकत्वात्, सुरासुरेभ्योऽपि
भवेच्च वर्णः ।
धनित्व पाण्डित्यमयन्ति सर्वे, किं वा परां देवि !
परापराख्या ॥५०॥

त्वदीय लज्जा द्वय जापकत्वाद्, भवेन्महेशानि !
चतुर्थ सिद्धिः ।
त्वदीययन्सिद्धि वर प्रसादा, त्तवाधिपत्यं लभते
नरेशः ॥५१॥

ततः स्वनाम्नः शृणु मातरेतत्, फलं चतुर्वर्गं वदन्ति
सन्तः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वीज त्रयं वै पुनरप्युपास्य, सुराधिपत्यं लभते
मुनीन्द्रः ॥५२॥

पुनः स्तथा कूर्च्चं युयं जपन्ति, नमन्ति सिद्धा नरसिह
रूपाः ।

ततोऽपि लज्जाद्वय जापकस्त्वा लभन्ति सिद्धि मनसो
जनास्ते ॥५३॥

अन्ते पदं क्षिप्य विभा विभावसो, स्त्वन्मंत्रमुद्धारमिदं
वदन्ति ॥५४॥

त्रिपञ्चारे चक्रे जननि ! सततं सिद्धि सहितां,
विचिन्वन् सञ्चिन्वन, परममृतं दक्षिण पदम् ॥

सदा कालींध्यात्वा विधि विहित पूजा परिकरा,
विशेषाख्यानं ते न खलुभवभंङ्गभय पदः ॥५५॥

त्वं श्री स्त्वमीश्वरी कालो त्वं ह्री स्त्वंच करालिका ।
लज्जा लक्ष्मीः सती गौरी नित्या चिन्त्याः चितिः
क्रिया ॥५६ ।

परा आद्या पराख्या च परमा परमा वसुः ।
अकुल्याद्यं शिवत्ते प्रचयपद पद्यं पदयुतं ॥५७॥

सदा जप्त्वा स्तुत्वा जपति हृदि मंत्रं मनुविदा,
न तेषां संसारे विभवपरिभ ंग प्रमथसेक्षणं, चितं देवि !
प्रभवति विरूद्धेपरिकरम् ॥५८॥

त्रयस्त्रिंशै श्लोकैर्यदि जपति मन्त्रं स्तुवति च ।
भवेत् सिद्धिः शुद्धौ जपति शिरसा त्वत्पद युगं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुधाधिपत्यं लभेत नरःस-
किमस्ति भूम्यां भृणु कालकालि ॥४८॥
त्वदीय वीज त्रय मातरेत
ज्जपन्ति सिद्धास्तु विमुक्ति हेतोः ।
तदेव मातस्त्वत्पाद पद्मगा-
भवन्ति सिद्धिश्च दिवत्रयेऽपि ॥४९॥
त्वदीय कूर्चद्वय जापकत्वात्
सुरासुरेभ्योऽपिभवेच्च वर्णः ।
धनित्वपाण्डित्यमयन्ति सर्वे
किं वा परां देवि! परापराख्या ॥५०॥
त्वदीय लज्जाद्वयं जाप कत्वाद्भ-
वेन्महेशानि ! चतुर्थ सिद्धि ।
त्वदीयधत्सिद्धि वरप्रसादा त्तवा-
धिपत्यं लभते नरेशः ॥५१॥
ततः स्वनाम्नः भृणु मातरेतत्
फल चतुर्वर्ग वदन्ति सन्तः ।
बीज त्रयं वै पुनरप्युपास्यसुरा-
धिपत्यं लभते मुनीन्द्रः ॥५२॥
पुनःस्तथाकूर्च्च युगं जपन्ति
नमन्ति सिद्धा नरसिंह रूपाः ।
ततोऽपि लज्जाद्वय जापकत्वा
लभन्ति सिद्धिं मनसो जनास्ते ॥५३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अन्ते पदं क्षिप्य विभा विभावसो,
स्त्वन्मंत्रमुद्धरमिदं वदन्ति ॥५४॥
चिपङ्धारे चक्रे जननि ! सततं सिद्धिसहितां,
विन्धित्वन् सञ्चिन्वन् परममृतं दक्षिणपदम् ।
सदा कालोध्यात्वा विधिविहितपूजा परिकरा,
विशेषाख्यानं ते न खलुभवमङ्गलय प्रदः ॥५५॥
त्वं श्रीं स्त्वमीश्वरी कालीं ह्रीं त्वं स्त्वं करालिका ।
लज्जा लक्ष्मीः सतीं गौरी
नित्या चित्याः चिति क्रिया ॥५६॥
परा आद्या पराख्या च परमा परमा वसुः ।
अकुल्याद्यैश्चित्ते प्रचयपदपद्यैपदयुतैः ॥५७॥
मदा जप्त्वा स्तुत्वा जपति हृदि मंत्रं मनुबिदा ।
न तेषां संसारे विभवपरिभंग प्रमधने,
क्षणंचितं देवि । प्रभवति थिरुद्धे परिकरम् ॥५८॥
त्रयस्त्रिशैश्लोकैर्यदि जपति मंत्रं स्तुवति च,
नमेच्चैतानेतान् परममृत्त कल्पं सुखरम् ।
भवेत् सिद्धिः शुद्धौ जपति सिरसा त्वत्पदयुगं,
प्रणम्य प्राकाम्यं वर सुरजनैः पूज्य वित्ततिम् ॥५९॥
इति विश्वसार तन्त्रे दक्षिण कालिका क्रम स्तोत्रं नाम चतुर्थःपटलं

दक्षिक्ष कालका क्रम स्तोत्र के बाद साधक को कुंडलिनी पंचक का पाठ करना चाहिये इसके करने से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिव्य रूप की प्राप्ति होती है तथा आयु में वृद्धि होती हैं।

।। श्री कुंडलिनी पंचकम् ।।

सिन्दूरारुणविग्रहांत्रिनयनांमाणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरास्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यांमणिपूर्णरत्नचषकंरक्तोत्पलवभ्रतीम्,
सौभांरत्नघटस्थरत्नचरणाध्यायेत्परामम्बिकाम् ।।१।।
मूलोन्निद्रभुजंगराजसदृशींयान्तींसुषुम्नान्तरम्,
भित्वाधारसमूहमाशुविगलत्सौदामिनीसन्निभाम् ।।
व्योमांभोजगतेन्दुमंडलगलद्दिव्यामृतौघैः पतिम्।
संभाव्यस्वगृहागतांपुनरिमां संचिन्तयेत्कुंडलीम् ।।२।।
हंसंनित्यमनन्तमद्वयगतंस्वाधारतो निर्गता,
शक्तिःकुंडलिनीसमस्तजननीहस्तेगृहीत्वाचतं,
यांताशंभुनिकेतनंपरसुखंतेनानुभूयस्वयं ।
यान्तींस्वाश्रमसर्ककोटिरुचिराध्येया जगन्मोहिनीम् ।३।
शक्तिः कुंडलिनीतियानिगदिता आईम संज्ञा जगत्,
न्निर्माणेसततोद्यतासुविलसत्सौदामिनीसन्निभा ।।
शंखावर्तनिभांप्रसुप्तभुजगाकारांजगन्मोहिनी,
तन्मध्येपरिभावयेत् विसलतातन्तूपमेयाकृतिम् ।।४।।
हुंकारेणगुरूपदिष्टविधिनाप्रोत्थाप्यसुप्तांततः ।
कृत्वा तां कलयातयापरमयाचिद्रूपयासंगताम्।
शक्तिं कुंडलिनी समाहितमनातांकौशिकीमुच्चरेत्,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यान्तीं ब्रह्ममहापथेनसहितामाधारतो निर्गता ॥५॥

इसको करने के उपरान्त साधक को शाध्य के पात्रों का साधन करना चाहिए। जो आगे के पृष्ठों पर देखिये।

पात्रा सादन में साधक-साध्य के अर्चन पूजन के लिए पात्रों को इकट्ठा करके शुद्ध करता है। इसके उपरान्त साध्य की आराधना प्रारम्भ होती हैं।

अथ्पात्रासोदनम्
वर्धनीकलश स्थापनम्

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणबृत्त चतुरस्त्रात्मकं मण्डल मत्स्यमुद्रया विलिख्य—

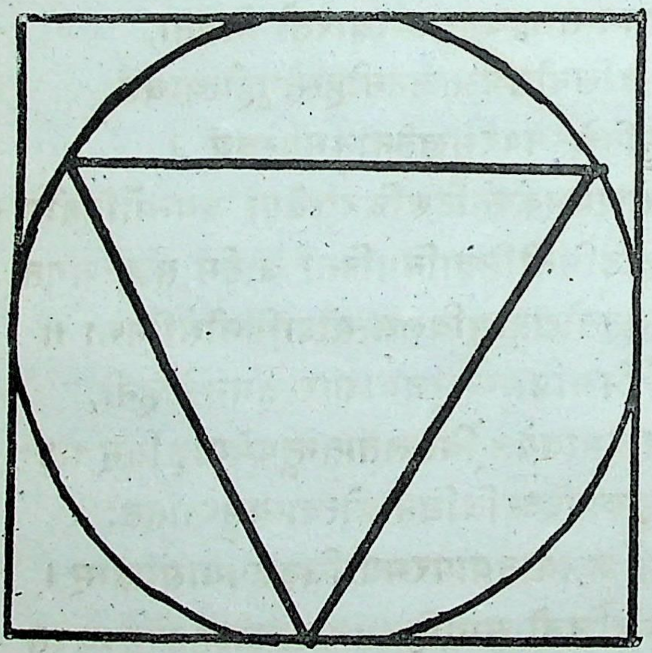

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मण्डलं मूलेन समभ्यर्च्य; कर्पूरादिवासित-जलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अलंकृत्य मण्डलोपरि स्थापयेत् ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुःकण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता ॥
कुक्षौतु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः ।
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः ॥
आयान्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकः ।

मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तज्जलेन पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्षयेत् ॥

सामान्यार्घ्यविधिः

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतःवर्धनीपात्रगतेनजलेन बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरश्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

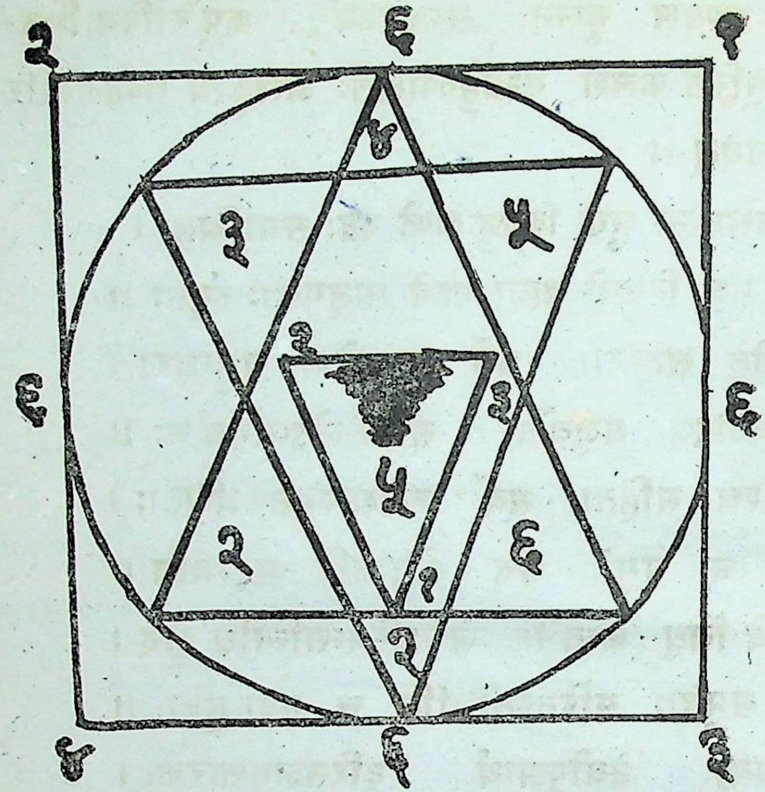

चतुरश्रेअग्नीशासुखायु कोणेषु मध्येदिक्षु च बालाषडङ्गैः सम्पूजतेत् । यथा-

३ओंक्रां हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः ।।

३ओंक्रीं शिरसेस्वाहा । शिरः शक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः ।।

३ओंक्रूं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः ।।

३ओंक्रैं कवचाय हुम् । कवचशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि नमः ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ओंक्रौं नेत्रत्रयाय बौषट्। नेत्रशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि
नमः ॥

३ओंक्रः अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्ति श्रीपादुकांपूजयामि
नमः ॥

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन-

३ओंक्रां क-५ हृदयाय नमः। हृदयशक्ति श्रीपादुका-
पूजयामि नमः ॥

३ओंक्रीं ह-६ शिरसे स्वाहा। शिरः शक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥

३ओंक्रू स-४ शिखायै वषट्। शिखाशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥

३ओंक्रैं क-५ कवचायं हुँ। कवचशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥

३ओंक्रौं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रभक्ति श्रीपादुकाँ
पूजयामि नमः ॥

३ओंक्रः स-४ अस्त्राय फट्। अस्त्रशक्ति श्री पादुकां
पूजयामि नमः ॥

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन-

३ओं क्रां क-५ नमः ३ओंक्रः स-४ नमः ॥
३ओं क्रीं ह-६ नमः ३ मूल नमः (बिन्दौ)

अतः ३ अस्त्राय फट्-इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आधारं प्रक्षाल्य ३ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्री दक्षिणमहा कालिका:सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ॥

इति मण्डलोपरि संस्थाप्य-

३अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसंअस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् । रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्नि-मण्डलाय नमः इति अग्निमण्डलं विभाव्य दश वह्नि-कला:पूजयेत् । तद्यथा-

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः	३ षं सुश्री कलायै नमः
३ रं ऊष्मा ,, ,,	३ सं सरूपा ,, ,,
३ लं ज्वलिनी ,, ,,	३ हं कपिला ,, ,,
२ वं ज्वालिनी ,, ,,	३ लं हव्य वाहिनी ,,
३ शं विस्फुलिङ्गिनी ,,	३ क्षं कव्य वाहिनी ,,

१ अस्त्रायफट्-इति क्षलितं शंखं गृहीत्वा-

३ उं सूर्यमण्डलायर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्री महा दक्षिण-कालिका: सामान्याध्र्यपात्राय नमः-इति संस्थाप्य

३ आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो यातिभुवनानिपश्यन् । हां हीं हुँ हैं हौं हः हमलवरयूम् ।

सूर्य मण्डलाय नमः-इति सूर्यमण्डलंविभाव्य द्वादश सूर्यकला:पूजयेत् । तद्यथा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

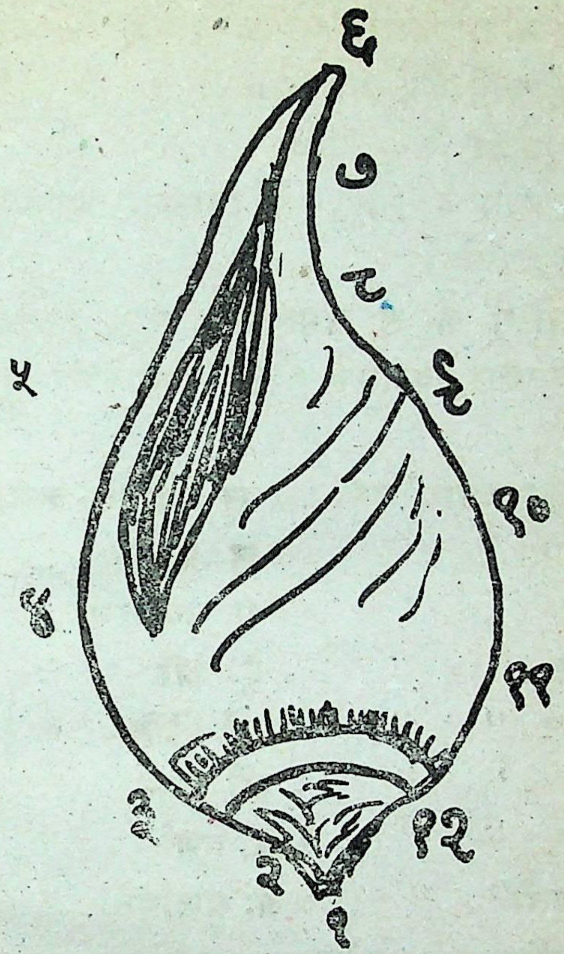

३ कं भं तपिनीकलायै नमः	३ छं दं सुषुम्ना कलायै नमः
३ खं बं तापिनी ,, ,,	३ ज थं भोगदा ,, ,,
३ ग फं धूम्रा ,, ,,	३ झं तं विश्वा ,, ,,
३ घं पं मरीची ,, ,,	३ ञं णं बोधिनी ,, ,,
३ ङं नं ज्वालिनी,, ,,	३ टं ड धारिणी ,, ,,
३ चं धं रुचि ,, ,,	३ ठं डं क्षमा ,, ,,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडश कलात्मने श्री दक्षिण महाकालिका: सामान्यार्घ्यामृतायनमः-इति वर्धनी सलिलमापूर्यक्षीरबिन्दुं दत्वा ।

३ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णिय भवावाजस्यसगथे ।

सां सीं सूं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोम कलाः पूजयेत् । तद्यथा-

३ अं लमृता कलायै नमः	३ लृं चन्द्रिका कलायै नमः
३ आं मानदा " "	३ लॄं कान्ति " "
३ इं पूषा " "	३ एं ज्योत्स्ना " "
३ ईं तुष्टि " "	३ ऐं श्री " "
३ उं पुष्टि " "	६ ओं प्रीति " "
३ ऊं रति " "	२ औं अङ्गदा " "
३ ऋं धृति " "	३ अं पूर्णा " "
३ ॠं शशिनी" "	३ अः पूर्णामृता " "

ततस्तस्मिन्शंखेअग्नीशासुखायु कोणेषु मध्येदिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः सम्पूज्य; अस्त्राय फट् इति संरक्ष्य; कवचाय हुँ इति अवगुण्ठय; धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्सलिलपृषतैः पूजोपकरणानि, आत्मानं च प्रोक्ष्य, शंखजलं किञ्चित् वर्धन्यां निक्षिपेत् ।।

विशेषार्घ्य विधिः

सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः विन्दु-त्रिकोण-षट-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कोण वृत्त चतुरस्रात्मक मंडल मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य, चतुरश्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य, षटकोणे स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन-षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणेमूलत्रिखण्डैरभ्यर्च्य; मूलेन बिंदुं चार्चयेत् ।

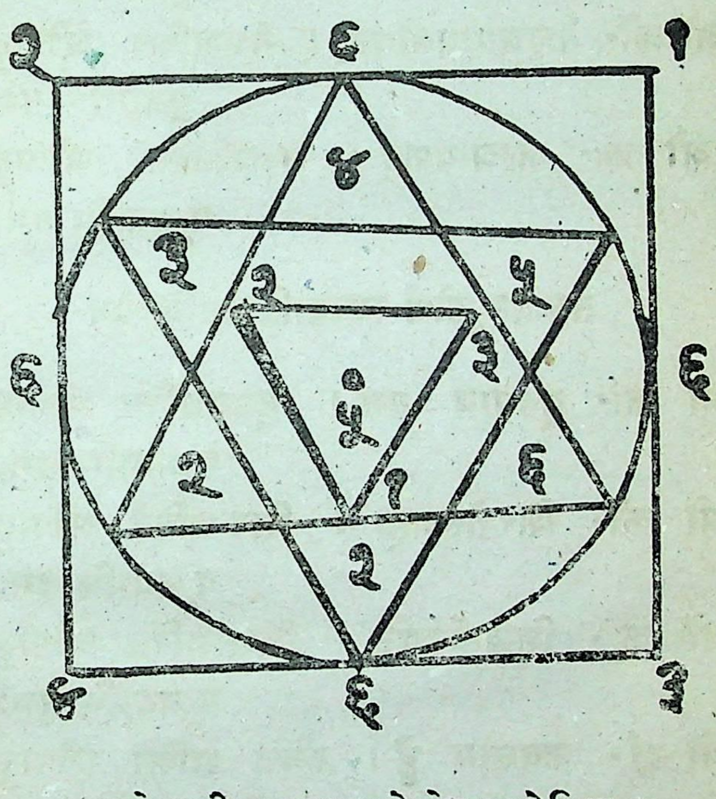

चतुरश्रेअग्नीशासुखायुकोणेषु मध्येदिक्षु च-

३ ओं क्रां- हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां-
पूजयामि नमः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ ओं क्रीं-शिरशे स्वाहा। शिरःशक्ति श्रीपादुकां
पूज्यामि नमः
३ ओं क्रूं- शिखायैवषट्। शिखाशक्ति श्री पादुकां
पूजयामि नमः ॥
३ ओं क्रैं- कवचाय हुँ। कवचशक्ति श्रीपादुकां-
पूजयामि नमः ॥
३ ओं क्रौं- नेत्रत्रयायवौषट्। नेत्रशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥
३ ओं क्रः- अस्त्रायफट्। अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥

ततःषट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन-

३ ओं क्रां- हृदयाय नम। हृदयशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नम; ॥
३ ओं क्रीं- शिरशेस्वाहा। शिरःशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥
३ ओं क्रूं- शिखायैवषट्। शिखाशक्ति श्रीपादुका
पूजयामि नमः ॥
३ ओं क्रैं- कवचाय हुँ। कवच शक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥
३ ओं क्रौं- नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ ओं क्रः- अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां
पूजयामि नमः ॥

३ ओं क्रां नमः ३ ओं क्रः स-४ नमः
३ ओं क्रीं नमः ३ मूलं नमः (बिन्दौ)

दक्षिणकालिकापुपासकैस्तु दक्षिणकालिकामन्त्रेणैव-सर्वत्रपूजाविधेया ।

अथ ३ अस्त्राय फट् इति आधारं प्रक्षाल्य,

३ ओं क्रां- अं अग्निमण्डलधर्मप्रददशकलात्मने श्री दक्षिण महाकालिकाः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः इति आधारं संस्थाप्य-

३अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसंअस्थ यज्ञस्य सुक्रतुम् । रां रीं रूं रैं रौं रः रमल वरयूं अग्नि-मण्डलाय नमः इति अग्निमण्डलं विभाव्य दश वह्नि-कलाःपूजयेत् । तथा-

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ३ षं सुश्री कलायै नमः
३ रं ऊष्मा ,, ,, ३ सं सरूपा ,, ,,
३ लं ज्वलिनी ,, ,, ३ हं कपिला ,, ,,
२ वं ज्वालिनी ,, ,, ३ लं हव्य वाहिनी ,,
३ शं विस्फुलिङ्गिनी ,, ३ क्षं कव्य वाहिनी ,,

ततः-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[३] अस्त्राय फट् इति अस्त्रमन्त्रेण विशेषार्घ्य पात्रं प्रक्षाल्य-

[३] ओं क्रों- ड मूर्य मण्डलाय अर्थप्रद द्वादश-कलात्मने श्री दक्षिण महाकालिका: विशेषार्घ्य पात्राय नमः, इति आधारोपरि संस्थाप्य ॥

[३] ह्रीं क्रां महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनी ऊर्ध्वशून्य-प्रवाहिनी सोम सूर्याग्निभक्षिणी परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विशविश पात्रं प्रतिगृहण प्रतिगृहण हुँ फट् स्वाहा इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य ॥

[३] आँ सत्येन रजसा. वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् ।

हाँ ह्रीं हुँ हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्य मण्डलाय नमः इति सूर्य मण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्य कला: पूजयेत् ।

[३] कं भं तपिनी कलायै नमः	[३] छं दं सुषुम्नाकलायै नमः
[३] ख बं तापिनी " "	[३] जं थं भोगदा " "
,, ख बं तापिनी ,, ,,	,, जं थं भोगदा ,, ,,
,, गं फं धूम्रा ,, ,,	,, झं तं विश्वा ,, ,,
,, घं पं मरीचि ,, ,,	,, ञाँ णं बोधिनी,, ,,
,, ङ नं ज्वालिनी ,, ,,	,, टं ढं धारिणी ,, ,,
,, चं धं रुचि ,, ,,	,, ठं डं क्षमा ,, ,,

ततो विशेषार्घ्य पात्रे-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ सौः मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्री दक्षिणमहाकालिका विशेषार्घ्यामृताय नमः- इतिअकाशदिक्षकाशन्तं क्षकाराद्यकारान्तं सविन्दु मातृकयार्पितं कस्तूरीकाद्यधिवासितं क्षीरंपूरयित्वा अष्टगन्धलोलितं पुष्पं निधाय नागरखण्डंनिक्षिप्य ॥

२ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवावाजस्यसंगथे ॥

सां सीं सूं से सौं सः समलवश्यूं सोममण्डलाय नमः-इति सोममन्डलं विभाव्यषोडश सोमकलाःपूजयेत्। यथा-

३ अं अमृता कलायै	नमः		३ लृं चन्द्रिका कलायै	नमः			
,, आँ मानदा	,,	,,	,, लॄं कान्ति	,,	,,		
,, इं पूषा	,,	,,	,, एं ज्योत्स्ना	,,	,,		
,, ईं तुष्टि	,,	,,	,, ऐं श्रीं	,,	,,		
,, उं पुष्टि	,,	,,	,, ओं प्रीति	,,	,,		
,, ऊं रति	,,	,,	,, औं अंगदा	,,	,,		
,, धृति	,,	,,	,, अं पूर्णा	,,	,,		
,, ऋं शशिनी	,,	,,	,, अः पूर्णामृता	,,	,,		

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

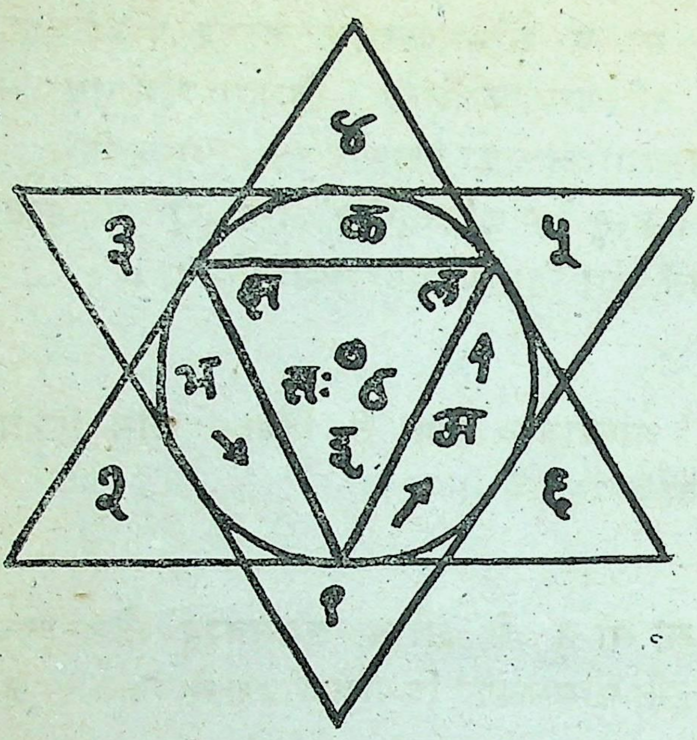

ततः३ओं जुंसः स्वाहा इति अष्टवारमभिमन्त्र्य । तत्राध्यभृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादिषोडशवर्णात्मक-रेखा-त्रयं त्रिकोणं विलिख्य, तदन्तः स्वाग्रादि कोणेषु अप्रादक्षिण्येन हलक्षान्, बहिः प्रादक्षिण्येन दक्षिण कालिकामूलखण्डत्रयं; बिन्दौ सबिन्दुतुरीय स्वरं । ईं तद्वामदक्षयोः क्रमेणहं सः इति च विलिख्य-

२ हसः नमः इत्ति आराध्य; त्रिकोणस्य परितः वृतं तद्बहिश्च षट् कोणं निर्माय, स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट् कोणमभ्यर्च्य-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ मूल ता चिन्मयीं आनन्दलक्षणां अमृतकलशापि-शितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य तदर्घ्यात्किंचित् पात्रान्तरेण-
३ वषट्। इत्युद्धृत्य, ३ स्वाहा। इति तत्रैव निक्षिप्य;
३ हुँ। इतिअवगुंठ्य, ३ वौषट्। इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य
३ फट्। इति संरक्ष्य ३ नमः। इति पुष्पं दत्वा

३ मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, सुधादेवीं षोषशोपचारैः संपूज्य तद्विन्दुभि स्वसपर्या साधनानि प्रोक्ष्य सर्वविद्यामयं विभावयेत् ॥

शुद्धि संस्कारः

विशेषार्घ्यपात्रस्य दक्षिणतः सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोण-वृत्त-चतुरश्रात्मक मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य-

३ ओं ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय इति मंडलं अभ्यर्च्य शुद्धिपात्रं संस्थाप्य-

३ ओं क्लीं पशु हुँ फट् इति अष्टवारमभिमन्त्र्य-

१ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नाति भवेभवस्य मां भवोद्भवाय नम ॥

३ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल-विकरणाय नमो बलाय नमो बल प्रमथनाय नमः सर्व-भूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

३ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

३ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्मादि पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों ॥इत्यभ्यर्च्य॥

तदधः त्रिकोण-वृत्त-तुरश्रात्मकं मंडलद्वयं विलिख्य ।

"प्रथममण्डले"

३ हंसश्शिवत्सोहं हंसश्शिवा, हंसश्शिवस्सोहं हंसः, हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः । इत्यभ्यर्च्य, गुरु-पात्रं निधाय ।

"द्वितीयमण्डले"

३ हंसः नमः । इत्यभ्यर्च्य, आत्मपात्र निदध्यात् । ततो विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणचतुर्नवति-मन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्-

वह्निकलाः

३ यं धूम्रार्चिषे नमः	३ षं सुश्रियै नमः
,, रं ऊष्मायै नमः	,, सं सुरूपायै नमः
,, लं ज्वलिन्यै नमः	,, हं कपिलायै नमः
,, वं ज्वालिन्यै नमः	,, लं हव्यवाहिन्यै नमः
,, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः	,, क्षं कव्यवाहिन्यै नमः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सूर्य कलाः

३ कं भं तपिन्यै नमः
,, खं बं तापिन्यै नमः
,, गं फं धूम्रायै नमः
,, घं पं मरीच्यै नमः
,, ङं नं ज्वालिन्यै नमः
,, चं धं रुच्यै नमः

३ छं दं सुषुम्नायै नमः
,, जं थं भोगदायै नमः
,, झं तं विश्वायै नमः
,, ञं णं बोधिन्यै नमः
,, टं ढं धारिण्यै नमः
,, ठं डं क्षमायै नमः

सोमकलाः

३ अं अमृतायै नमः
,, आं मानदायै नमः
,, इं पूषायै नमः
,, ईं तुष्टयै नमः
,, उं पुष्टयै नमः
,, ऊं रत्यै नमः
,, ऋं धृत्यै नमः
,, ॠं शशिन्यै नमः

३ लृं चन्द्रिकायै नमः
,, लॄं कान्त्यै नमः
,, एं ज्योत्स्नायै नमः
,, ऐं श्रियै नमः
,, ओं प्रीत्यै नमः
,, औं अङ्गदायै नमः
,, अं पूर्णायै नमः
,, अः पूर्णामृतायै नमः

ब्रह्मकलाः

३ कं सृष्टयै नमः
,, खं ऋद्धयै नमः
,, गं स्मृत्यै नमः
,, घं मेधायै नमः
,, ङं कान्त्यै नमः

३ चं लक्ष्मयै नमः
,, छं द्युत्यै नमः
,, जं स्थिरायै नमः
,, झं स्थित्यै नमः
,, ञं सिद्धयै नमः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३हँसश्शुचिसद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृत सद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं
वृहत् ।। नमः ।।

विष्णुकलाः

३ टं जरायै नमः
,, ठं पालिन्यै नमः
,, ढं ईश्वर्यै नमः
,, णं रत्यै नमः
३ तं कामिकायै नमः
,, थं वरदायै नमः
,, दं ह्लादिन्यै नमः
,, धं प्रीत्यै नमः

३ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो-
गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुव-
नानि विश्वा ।।नमः।।

रुद्रकला

३ पं तीक्ष्णायै नमः
,, फं रौद्र्यै नमः
,, बं भयायै नमः
,, भं निद्रायै नमः
,, मं तंद्र्यै नमः
३ यं क्षुधायै नमः
,, रं क्रोधिन्यै नमः
,, लं क्रियायै नमः
,, वं उद्गायैनमः
,, शं मृत्यवे नमः

३ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।नमः।

ईश्वरकला

३ षं पीतायै नमः;
३ सं श्वेतायै नमः
३ हं अरुणायै नमः
३ क्षं असितायै नमः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ तद्विष्णोः परमपदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ।

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमंपदम् ।।नमः।।

सदाशिवकलाः

३ अं निवृत्यै नमः	३ उं इन्धिकायै नमः
,, आं प्रतिष्ठायै नमः	,, ऊं दीपिकायै नमः
,, इं विद्यायै नमः	,, ऋं रेचिकायै नमः
,, ईं शान्त्यै नमः	,, ॠं मोचिकायै नमः
,, लृं परायै नमः	,, ओं ज्ञानामृतायै नमः
,, ॡं सूक्ष्मायै नमः	,, औं आप्यायिन्यै नमः
,, एं सूक्ष्मामृतायै नमः;	,, अं व्यापिन्यै नमः
,, ऐं ज्ञानायै नमः	,, अः व्योमरूपायै नमः

३ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आसिञ्चतु प्रजापति र्धाता गर्भं दधातु ते ।।
गर्भंधेहि सिनीवालि गर्भंधेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजा ।।नमः।।

३ मूलं नमः

३ अखण्डैकरसानन्दकदे परसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुल नायिके ।।नमः।।

३ अकुलस्थामृत्ताकारे शुद्धज्ञानकरे परे ।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि ।।नमः।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणी ।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥नमः॥
३ ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय स्वाहा ॥नमः॥
३ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनी क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः ॥नमः॥

एवमभिमन्त्रितविशेषार्घ्यामृतात् किंचित् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत् । गुरुः सन्निहितो यदि तस्मै निवेदयेत् ।

पुनःआत्मपात्रे किंचिद्विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य, मूलाधारे वालाग्रामात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निमण्डलं ध्यात्वा-

३ कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः इति मनसा सम्पूज्य

३ मूलं पुण्यं जुहोमि स्वाहा ३ मूलं सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा
३ मूलं पापं ” ” ३ मूलं विकल्पं ”
३ मूलं कृत्यं ” ” ३ मूलं धर्मं ”
३ मूलं अकृत्यं ” ३ मूलं अधर्मं ”

३ मूलं अधर्मं जुहोमि वौषट्

३ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा-इति पूर्णाहूतिंविभाव्य ।

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योति ब्रह्माहास्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमास्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं-मां जुहोमि स्वाहा ॥

इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्धया जुहुयात् । विशेषार्घ्यपात्रात्किञ्चित्क्षीरं क्षीरकलशे निक्षिपेत् ॥ आविसर्जनं शंख विशेषार्घ्यपात्रञ्च न चालयेत् । इसके उपरान्त यन्त्र,पूजन इस पद्धति से करना चाहिये ।

यन्त्रपूजनम्

अथ शुचिः समाहित मना याग मन्दिरम् प्रविश्य पूर्वं श्री विद्योक्त विधिना अन्तर्यागं विधाय वर्द्धनी कलशं सामान्यार्धपात्रं विशेषार्घ्य गुरुपात्रं आत्मापात्रं विधाय विधीना पात्रं सादनं कृत्वा चक्रराजं पूजयेत् । यथा जयादि सिद्धिमयीं नवपीठ शक्तीं प्रपूज्य मन्त्र स्थापनां कृत्वा-

विन्दौ-आद्याशक्ति पूजनम् ।

पंचत्रिकोणे-पन्चदशनित्या पूजनम् ।

अष्ठदलकमले-ब्राह्मादिअष्ट शक्तीनां पूजनम् ।

तत्रैव-अष्टभैरव भैरवी पूजनम् ।

पुनस्तत्रैव-अष्ट बटुक योगिनी पूजनम् ।

भूपूरे-दशदिक्पाल पूजनम् ।

तत्रैव-दशायुध पूजपम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भूपूराद्वहि-खड्ग मुंड वराभयमुद्रा पूजनम् ।
पुनः-गणेश वटुक क्षेत्रपाल योगिनी पूजनम् ।
विधाय-दशावरणपूजां खड्ग मालोक्त विधिना पूजयेत् ।

ततः समाहित चेता अष्टोत्तरशतं सहस्त्रं अयुत्तम् वाजपं कुर्यात् ।

श्री दक्षिण कालिका पूजन यंत्र

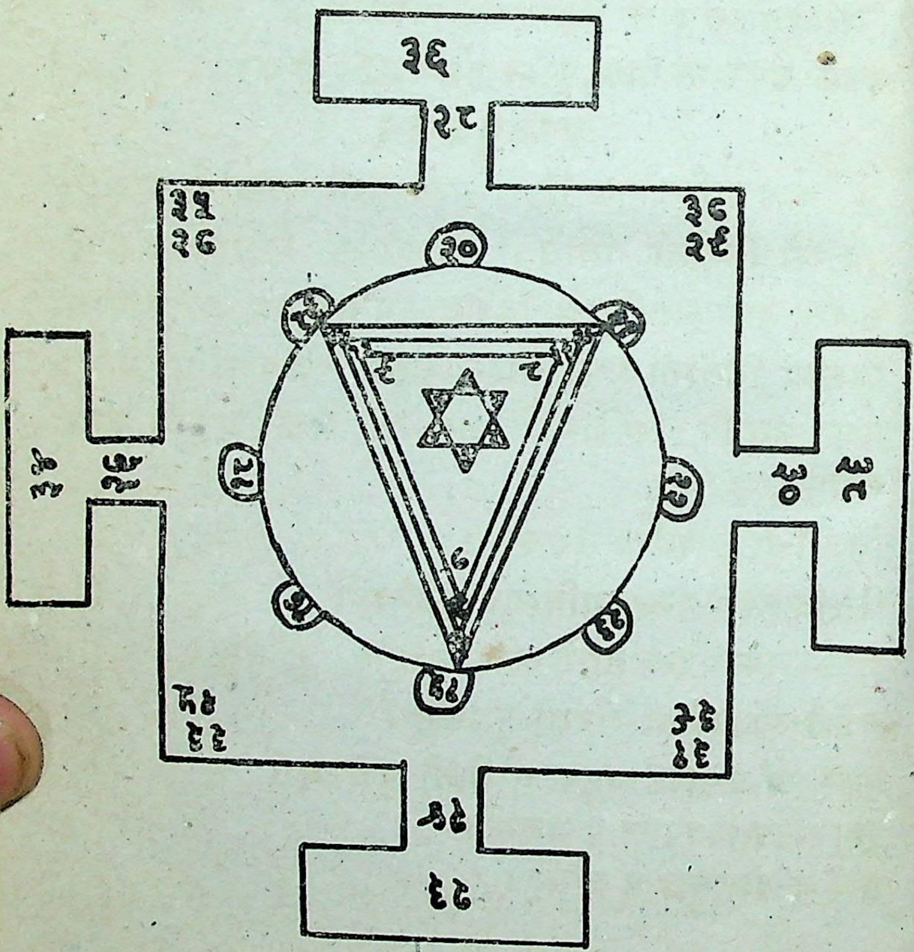

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यागमन्दिर प्रवेशः

ऐं ह्रीं श्रीं भ भद्रकाल्यै नमः । (द्वारस्यदक्षशाखायां)
३ भं भैरवाय नमः । (द्वारस्य बामशाखायां)
३ लं लम्बोदराय नमः । (द्वारस्यउर्ध्वशाखायां)
॥ इति द्वारदेवताः सपूज्य ॥

तत्वाचमनम्

ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा ।
३ क्रीं विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा ।
३ क्रीं शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा ।
३ क्रीं सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा ॥

गुरू पादुकामन्त्र

ओं ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं; हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्यौः हंसः शिवः सोहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्री गुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकांपूजयामि नमः ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, सोहं हंसः शिवः, हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं; ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं हंसः,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हखफ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः सहक्षमलवरयी स्यौः हंसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्चर विलीन तेजसे श्री-परमेष्ठिगुरवे नमः अमुकानन्द नाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

इति मृगी मुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य, सुमुख-सुवृत्त चतुरश्रमुद्गर-योन्याख्याभिः श्री गुरून् वामभुजे प्रणम्य, गणपतिमूलेन स्वदक्ष भुजे योनिमुद्रया महागणपति प्रणमेत् ॥

घण्टा पूजा

हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टा ध्वनिविभूषिते,
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवंप्रपूजयेत् ।
आगमार्थं च देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्,
कुर्यात् घण्टारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम् ॥

॥ इति घण्टानादं कृत्वा ॥

संकल्पः

मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रिनयनां रक्ताम्बर बिभ्रतीम्,
पाणिभ्यामभयं वरं च विलसद् रक्तारविन्द-स्थिताम् ।
नृत्यन्तं पुरतो निपीय मधुरं माध्वीक-मद्यं महा,
कालंवीक्ष्य विकासितानन-वरामाद्यां भजे कालिकाम् ॥

मूलेन प्राणानायम्य । देशकालौ संकीर्त्य मम श्री-दक्षिणकालिका प्रीत्यर्थं यथा संभवद्रव्यैः यथाशक्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दक्षिणकालिकाक्रमं निर्दर्तयिष्ये,- तेन परमेश्वरीं प्रीणयामि ॥

आत्मानं अलंकृत्य ताम्बूलेन सुरभिवतदनः सन् प्रमुदित्त-चित्तः शिवोऽहं इति भावयेत् ॥

आसनपूजा

आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय सैः इतिद्वादश-वारमभिमन्त्र्य तञ्जलेन मूलमन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत् ॥

अस्य श्री आसनमहामन्त्रस्य-पृथिव्याः मेरूपृष्ठ ऋषिः, सुतल छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः ॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता ।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

योगासनाय नमः, वीरासनाय नमः, शरासनाय नमः ॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ओं ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥

इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने उपविशेत् ।

३रक्तद्वादशशक्तियुक्तायद्वीपनाथाय नमः ।

॥ इति भूमौ पुष्पाञ्जलि विकिरेत् ॥

देहरक्षा

३ श्रीदक्षिणकालिके आत्मानं रक्ष रक्ष इति देहे त्रिः व्यापकं कृत्वा ॥

गुं गुरुभ्यो नमः । (दक्षबाहौ)

गं गणपतये नमः । (वामबाहौ)

दुं दुर्गायै नमः । (दक्षोरौ)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वं बटुकाय नमः । (वामोरौ)
यं योगनीभ्यो नमः । (पादयोः)
क्षं क्षेत्रपालाय नमः । (नाभौ)
पं परमात्मने नमः । (हृदये)

२ ओं नमो भगवति तिरस्कारिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुः श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा । पारितोवह्निप्राकारं विभाव्यभूभुर्वस्सुवरो इतिदिग्बन्धः ।

परमामृत्तवर्षेण प्लावयन्तं चराचरम् ।
संचिन्त्य परमद्वैत्तभावनाऽमृतसेवया ॥
मोदमानो विस्मृतान्यविकल्पविभवभ्रम ।
चिदम्बुधिमहाभङ्गच्छिन्नस कोच संङ्कट ॥

२ क्रीं ऐं ह्रः अस्त्राय फट्-इति-अस्त्र-मन्त्रेण मुहुराबृतेन अङगुष्ठादिकनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात् ॥

२ क्रीं श्री गुरो करुडा मूर्ते भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवान कालिका यजनायमे ॥
२ क्रीं अतिक्रूर महाकाय कल्पान्त दहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

लघुप्राणप्रतिष्ठो

२ आं ह्रीं क्रों यं लं वँ शँ सँ हँ ओं हंसः सोहं, सोहं हन्सः शिवः श्रीकालिकाया प्राणाइह प्राणाः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३ आं ह्रीं क्रों श्रीकालिकास्य जीव इह स्थितः। सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षु: श्रोत्र जिव्हाघाणा इहैवागत्य अस्मिन् यन्त्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तुस्वाहा ।।

३ ओं असुनीतेपुनरस्मासु चक्षु: पुनः प्राणमिहनो धेहिभोगम् ।

ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमन्नुमते मृडया नस्वस्ति ।

दीप पूजा

स्वदक्ष भागे गन्धपुष्पाक्षतादीन्निधायदीपा नभितः प्रज्वाल्य ।।

घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः ।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तुवामतः ।।
दक्षवामभागौ देव्या एव ।

ऐं ह्रीं श्रीं दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा ।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्बलसुस्थिरा ।।

।। इति पुष्पांञ्जलिं दद्यात् ।।

मूलेन यन्त्रमध्येपुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रि खंडेन स्वाग्रवामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलीन्दद्यात् ।।

अन्तर्याग

यथा मूलाधारादाब्रह्मबिल बिलसन्तीं विसतन्तु तनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुत भास्वत्प्रकाशां परश्शतसुधामयमूखशीतल तेजो दण्डरूपां परिचितिं भावयेत् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ततदग्रे जीवात्मानं पुष्पपूरिताञ्जलिनिविष्टं भावयन्

स्वदेहे भगवत्या श्री दक्षिणकालिकायाः यन्त्रं यथा ब्रह्मरन्ध्रे बिंदु मस्तके भ्रूमध्ये कंठे अनाहते मणिपूरके च पंचत्रिकोणं भावयित्वा स्वाधिष्ठाने ऽष्टदलात्मक पद्मं तथा च मूलाधारे भूपुरं चक्रं विभाव्य-

ब्रह्मरन्ध्रात् श्री दक्षिणकालिकाम्बां हृदयं नीत्वा तत्तत्पूजा मन्त्रैः तत्तदावरणपूजां; श्री दक्षिणकालिका देव्या बामहस्ते पूजा समर्पणं च विभाव्य, श्रीदक्षिण कालिकाँ सचक्रा वयवानि आवरणानि विलीनानि विभाव्य, मध्यदयश्चाग्रे (देवीपादमूले) स्थित जीवात्मना सहिताँ ब्रह्मरन्ध्रात् श्री दक्षिण कालिकाम्बां हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमैः तत्र तां सम्पूज्य, ततः अकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दन कुसुमधूपदीपनैवेद्य-शालिकरकमलाः पीतासित श्यामरक्तशुक्लवर्णाः धरणि-वियदनिलानलजल लक्षणपञ्चभूतमयीः सर्वावयव-सुन्दरीः पञ्चदेवताः देव्यग्रे संस्मृत्य, ताभिः चन्दना-द्युपचारान् श्री दक्षिणकालिका देव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत् ॥

ततो श्री दक्षिणकालिका देव्या नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायाँ नैवेद्यदेवता इति क्रमेण विलीनाः विभाव्य, मूलविद्यां उच्चरन्,जीवाष्मानं श्रीदक्षिणकालिका देवी-पादारविन्दमूले लीनं विभाव्य, हृदयगतदेवीं रूपं मध्य-दयश्रसहित तत्रं वकेवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भावयित्वा, क्षणं न किंचिदपि चिन्तयेत् ॥

अथ् देव्या प्रेरितमानसः सन् पुनः प्रकृतिमाल लस्थ तेजोरूपेण परिणतां परमशिव ज्योतिरभिन्न प्रकाशात्मिकां वियदादिविश्वकापणाँ स्वात्मभिन्नाँ परिचितिं सुषुम्ना पथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नाविधिविल-विलसदमलदशशतदल कमलात् वहन्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डामुद्रा मण्डितशिखण्डे कुसुमगर्भितेऽञ्जलौ समानीय ३ क्रीं हुँ ह्रीं श्री दक्षिणकालिका अमृतचैतन्य मूर्ति कल्पयामि नमः ॥

ध्यानं

करालवदनां घोराँ मुक्त केशीं चतुर्भुजाम्,
कालिकाँ दक्षिणाँ दिव्याँ मुण्डमाला विभूषिताम् ॥
सद्यश्छिन्न शिरः खड्गवामाधोर्ध्व कराँबुजाम्,
अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्व पाणिकाम् ॥
महामेघ प्रभाँ श्यामाँ तथा चैव दिगम्बराम् ।
कण्ठावसक्त मुण्डाली गलद् रुधिर चर्चिताम् ॥
कर्णावतंसमानीत शव युग्म भयानकाम् ।
घोर दंष्ट्राँ करालास्याँ पीनोन्नत पयोधराम् ॥
शवानाँ करसंधातैः कृतकाँची हसन्मुखीम् ।
सृक्कद्वयगल द्रक्त धारा विस्फुरिताननाम् ॥
घोररावाँ महा रौद्रीं श्मशानालय वासिनीम् ।
बालार्क मण्डाकाराँ लोचन त्रितयान्विताम् ॥
दंतुराँ दक्षिणाकालि मुक्ता लम्बिकचोच्चयाम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शव रूप महादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ।
शिवाभिर्घोरावाभि श्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।
महाकालेन च समं विपरीतरता तुराम् ॥
सुख प्रसन्न वदनां स्मेराननु सरोरूहाम् ।
एवं संचिंतयेत्कालीं सर्व काम समृद्धिदाम् ॥

श्री दक्षिण कालिका पूजन यंत्र

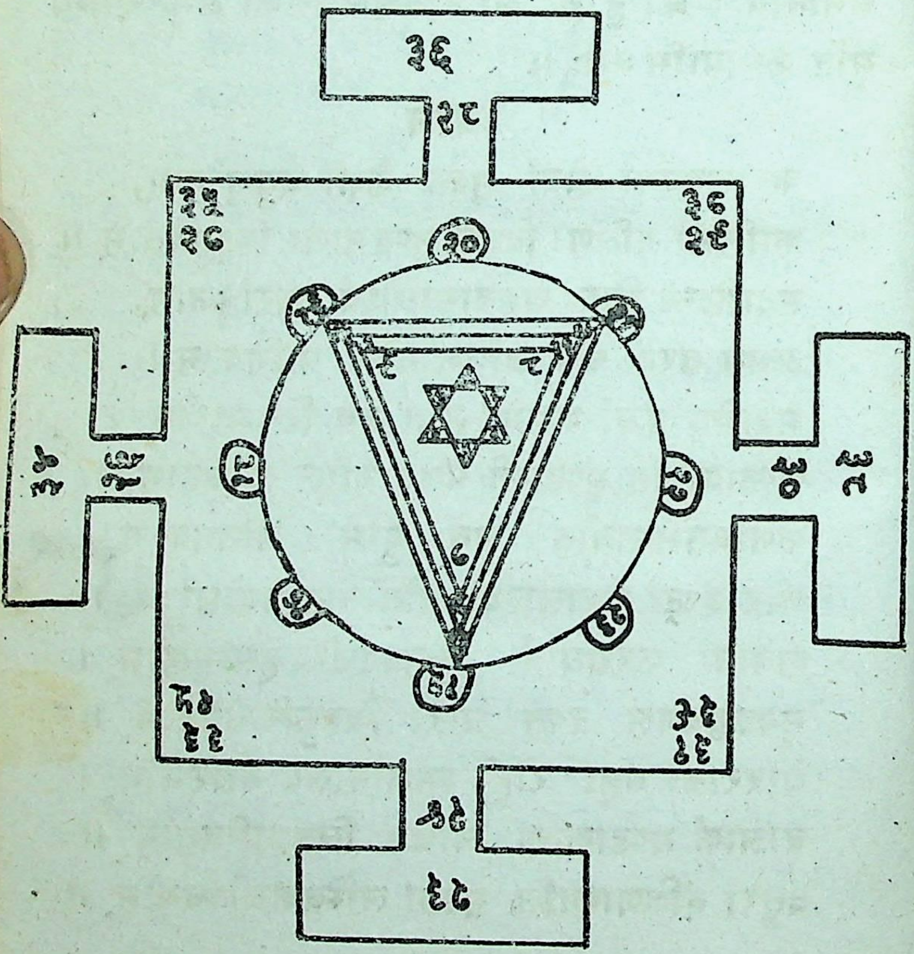

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री दक्षिण कालिका पूजन यंत्र

श्री दक्षिण कालिका पूजन यंत्र

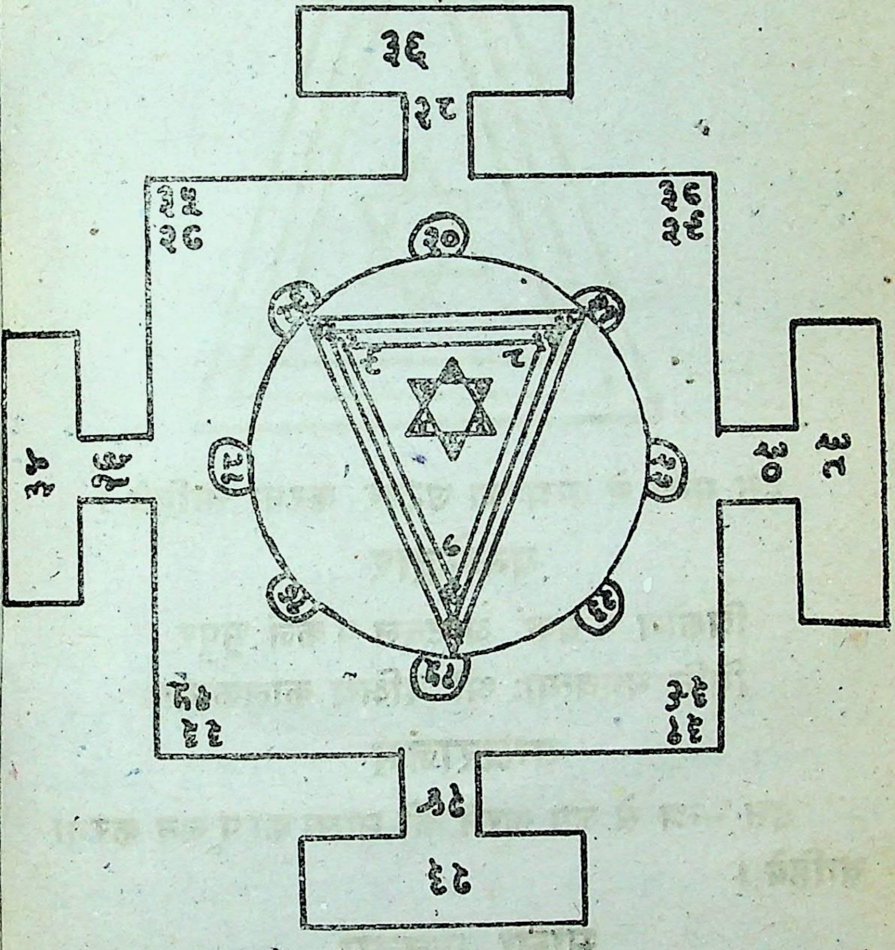

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

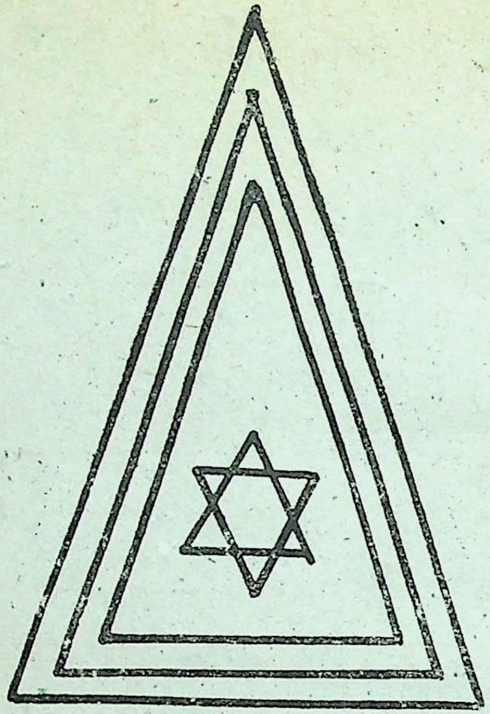

इस मन्त्र से यन्त्र का उद्धार करना चाहिये ।

यन्त्रोद्धार

त्रिकोण पंचकं अष्टदल पंकजं भूपुर
मिति भगवत्याः श्री दक्षिण कालकायाः

यन्त्रराजम्

इस मन्त्र से जप करने की माला का पूजन करना चाहिये ।

माला पूजनम्

ॐ माँ माये महामाले सर्व सिद्धि स्वरूपिणि ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभीष्टं देहि मे माले त्वा महं शरणं गतः ॥

इति प्रार्थ्य जपँ कुर्यात् ।

संकल्पः

साधक को संकल्प इस प्रकार करना चाहिये ।

मूलेन प्राणानायम्य देश काली संकीर्त्य ममोपात समस्त दुरितक्षय पूर्वकं श्री कालिकाम्बा प्रसाद सिद्धयर्थ यथाशक्ति क्रमँ निर्वर्तयिष्ये ।

इति संकल्प ताम्बूलेन पञ्चतिक्तेनवा सुरभि वदनः ऊर्णाद्यासनं काली तृतीय बीजेन द्वादशवारम-भिमन्त्रितेन जलेनमूलँन्त्रोक्षितंविधाय,

अथ् श्री दक्षिण कालिका पूजन पद्धतिम्

॥ प्रारम्भम् ॥

श्री दक्षिण कालींध्यात्वा मानसोपधारैः संपूये-जत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्र मण्डले पद्धति मार्गेण मंडूकादि परतत्वाँत पीठ देवताः संस्थाप्य 'ॐ मं-मंडूकादि तत्वाँत देवताभ्यो नमः' इति पीठ देवताः संपूज्य नवपीठ शक्तिः पूज्येत् । तथा च पूर्वादि क्रमेण ॐ जयायै नमः ॥१॥ ॐ विजयायै नमः ॥२॥ ॐ अजितायै नमः ॥३॥ ॐ अपराजितायै नमः ॐ नित्यायै नमः ॥५॥ ॐ विलासिन्यैनमः॥६॥ऒं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दोग्ध्र्यै नमः ॥७॥ ॐ अघोरायै नमः ॥८॥

मध्य में इस प्रकार पूजा करें ।

"मध्यें"

ओं मंगलायै नमः ॥९॥ इति पीठ शक्तिः पूजयेत् ।

तत् स्वर्णादि निर्मितं यंत्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्वा स्वच्छ वस्त्रेणा वेष्टय 'ॐ ह्रीं कालिका योग पीठात्मने नमः' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनंदत्वा पीठ मध्ये संस्थाप्य पद्धति मार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन प्रकल्प्य पाद्यादि पुष्पांते रुपचारैः संपूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरण पूजांकुर्यात् ।

पुष्पांजलि मादाय 'ॐ संविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये । अनुज्ञां दक्षिणे देहिपरिवारार्चनायमे ।

इति पठित्वा पुष्पांजलिं दत्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् ।

फिर इसके उपरान्त ध्यान करें ।

तत्रध्यानम्

'तुषार स्फटिक श्याम नील कृष्णा रूणास्तथा ।
वरदाभय धारिण्य रंगभूता षडस्त्रियः ।

हृदयादिन्याषडंगपूजन-

क्रां हृदयाय नमः । देवतां श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इति सर्वत्र ओं क्रीं शिरशे स्वाहा शिरोदेवतां श्रीपादुकां-
पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥

ओं क्रू शिखायै वषट् शिखा देवतां श्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि नमः ॥३॥

ओं क्रैं कवचाय हुं कवच देवतां श्रीपादुकांपूजयामि
तर्पयामि नमः ॥४॥

ओं क्रौं नेत्रयाय वौषट् नेत्र देवतां श्रीपादुकांपूजयामि-
तर्पयामि नमः ॥५॥

ओं क्रः अस्त्राय फट् अस्त्र देवतां श्रीपादुकांपूजयामि
तर्पयामि नमः ॥६॥

॥ इति षडग पूजा ॥

ततः पुष्पांजलिमादायमूलमुच्चार्थ 'अ' अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा वरणार्चनम् इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्वा विशेषार्घा द्विं दुं निक्षिप्य हृदयादिषडंगदेव्यः पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् ।

॥ इति प्रथमावरणम् ॥

॥ अथ नित्यापूजनम् ॥

ततः पूज्य पूजक्यों रंतराल प्राचीं तदनुसारेण अन्यादिशः प्रकल्प्यप्राची क्रमेण षट् कोणेषु काल्यादिः नित्या पूजयेत् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्रध्यानम्

ॐ सर्वाः श्यामा रसिकरा मुण्डमाला विभूषिताः, ।
तर्जनीं वाम हस्तेन धारयंत्यश्च सुस्मिताः ॥

॥ इति ध्यात्वा पूजयेत् ॥

ॐ काल्यै नमः । काली श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥

ॐ कपालिन्यै नमः कपालिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥

ॐ कुल्लायै नमः । कुल्ला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥

ॐ कुरुकुल्लायै नमः । कुरुकुल्ला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥

ॐ विरोधिन्यै नमः । विरोधिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥

ॐ विप्रचित्तायै नमः । विप्रचित्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥

ॐ विप्रचित्तायै नमः । विप्रचित्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥

अभीष्ट सिद्धिं मेदेहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पयेस्तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् । इति पठित्वा विशेषार्घ्यं द्विं द्रं निक्षिप्य पूजिता स्तर्पिताः सन्तु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्रस्त्रिकोणत्रितयेसु ग्राद्याः नवनित्याः पूजयेत्
:"तत्र प्रथम त्रिकोणसमुखे"-ॐ उग्रायै नमः । उग्रश्री-
पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।७।।

'वामे'

८
ॐ उग्रप्रभाये नमः । उग्रप्रभा श्री पादुकांपूजयामि
तर्पयामि नमः ।।२।।

'दक्षे'

९
ॐ दीप्तायै नमः । दीप्ता श्री पादुकांपूजयामि तर्प-
यामि नमः ।।३।।

'द्वितीयत्रिकोणे'

१०
ॐ नीलायै नमः । नीला श्री पाकांपूजयामि तर्प-
यामि नमः ।।४।।

'वामे'

११
ॐ धनायै नमः । घना श्री पादुकांपूजयामि तर्पयामि
नमः ।।५५।।

'दक्षे'

१२
ओं बलाकिकायै नमः । बलाकिका श्री पादुकांपूज-
यामि तर्पयामि नमः ।।६।।

'तृतीयत्रिकोणे'

१३
ओं मात्रायै नमः । मात्रा श्रीपादुकांपूजयामि तर्प-
यामि नमः ।।७।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"वामे"

१४

ॐ मुद्रायै नमः । मुद्रा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥८॥

१५

"दक्षे"

ॐ मित्रायै नमः । मित्ता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥९॥

॥ इति पूजयेत् ॥

ततः पुष्पांजलिमादाय मूल मुच्चार्य-

अभीष्ट सिद्धिं मेदेहि शरणागतवत्सले ॥

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीया वरणार्चन ॥

ततो अष्टदले प्राची क्रमेणाष्टशक्तीः पूजयेत् ।

दंडं कमण्डुलं पश्चादक्ष सूत्रं महाभयम् ॥

बिभ्रती कनकच्छाया ब्राह्मी कृष्णा जिनोज्वल ॥१॥

शूलं परशवधं क्षुद्रं दुन्दुभिं नरकपेटिकाम् ॥

महंती हिम संकाशाध्येया माहेश्वरी शुभा ॥२॥

अंकुशं दन्ड खट्वाङ्गौ पाशं च दधती करैः ॥

बंधूक पुष्प संकाशा कुमारी काम दायिनी ॥३॥

चक्रं घंटां कपालं च शंख च दधती करैः ॥

तमाल श्यामला ध्येया वैष्णवी विभ्रमोज्वला ॥४॥

मुसलं करवालँ च खेटकं दधती हलम् ॥

बारा ही महिषारूढ़ा ध्येया कालघन च्छवि ॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नीलोत्पल-दल श्यामाम् भुजङ्गाऽऽभरणोज्व लाम् ।
बालेन्दु-मौलिनां साध्वीं नयन-त्रितयाऽचिताम् ॥१॥

शङ्ख-चक्र धरां देवीं वरदाऽभय-शालिनीम् ।
पीनो तुङ्ग-तनीं श्यामां बद्ध-पद्मासनां शिवाम् ॥२॥
अजितां चिन्तयेद् भक्त्या वैष्णवीम् अपराजिताम् ।
शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशां चन्द्र कोटि-सुशीतलाम् ॥३॥

सुमुखीं सुन्दर-भुजां श्वेत वस्त्रैरलङ्कृताम् ।
मोहिनीं सर्व-जगतां जयन्तीं भक्तवत्सलाम् ॥४॥

शूलं कृपाणं नृशिर: कपालं दधती करैः ॥
मुण्डस्त्रग् मंडिता ध्येया चामुण्डा रक्त विग्रहा ॥७॥

नरसिंह प्रतीकाशा अक्षमाला विभूषणा
असुराणाभसृ क्मांस वसारक्त नखी सुदा
नारसिंही सदाध्येया भक्ताभीष्ट प्रदायिनी
भक्तार्ति भंजन करी सर्व संपत्प्रदायिनी ॥८॥

इस प्रकार से साधक को ध्यान और पूजन करना चाहिये ।

॥ इति ध्यात्वा पूजयेत् ॥

'तद्यथा'

१६
ॐ ब्राह्मयै नमः । ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१७
ॐ नारायण्यै नमः नारायणी श्री पादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ।।२

१८
ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।३।।

१९
ॐ चामुण्डायै नमः । चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।४

२०
ॐ कौमार्यै नमः । कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।५

२१
ॐ अपराजितायै नमः । अपराजिता श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ।।६

२२
ॐ वाराह्यै समः । वाराही श्री पादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ।।७

२३
ॐ नारसिंह्यै नमः । नारसिंह श्री पादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ।।८

❀ इति पूजयेत् ❀

पुष्पांजलि मादाय मूलमुच्चार्य-
अभीष्ट सिद्धि मेदेहि शरणागत वत्सले ।।
भक्त्या समर्पये त्तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनं ।।
इति पठित्वा पूजिताः तर्पिता सन्तु इति वदेत् ।।
ततो भूपूराभ्यंतरेऽष्टरेष्टसुदिक्षु प्राची क्रमेण अष्ट भैरवान् पूजयेत् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'ध्यानम्'

भीषणास्यं त्रिनयनं अर्धचन्द्र विभूषितम् ।
स्फटिकाभ कंकणादि भूषाशत समायुतम् ॥१
अष्टवर्ष वयस्कं च कुंतलो ल्लसितं भजे ।
धारंयंत दण्डशूले भैरव्याधि विनाशनम् ॥२

❀ इतिध्यात्वा पूजयेत् ❀

'शाक्तप्रमोदे'

२४
ॐ ऐं ह्लीं अं असितांग भैरवाय नमः । असितांग
२५ भैरव श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ॥१
ॐ ऐं ह्लीं इं रुरु भैरवाय नमः । रुरु भैरव श्री-
२६ पदुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२
ॐ ऐं ह्लीं उं चण्ड भैरवाय नमः । चण्डभैरव श्री-
२७ पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३
ॐ ऐं ह्लीं ऋं क्रोध भैरवाय नमः । क्रोध भैरव
२८ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४
ॐ ऐं लृं उन्मत्त भैरवाय नमः । उन्मत्त भैरव श्री
२९ पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५
ॐ ऐं ह्लीं एं कपालि भैरवाय नमः । कपालि भैरव
३० पादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः ॥६
ॐ ऐं ह्लीं ओं भीषण भैरवाय नमः । भीषण भैरव
श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३१
ॐ ऐं ह्लीं अं संहार भैरवाय नमः । संहार भैरवी श्री
पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।।८।।

ततस्तत्र समीपेऽष्ट भैरवीः पूजयेत् ।

'तत्रध्यानम्'

भावयेञ्च महादेवीं चन्द्रकोटि युत प्रभाम् ।
हिमकुन्देन्दु धवलाँ पंच वक्राँ त्रिलोचनाम् ।।१।।
अष्टादश भुजैर्युक्ताँ सर्वानन्द करोद्यताम् ।
प्रहसंतीं विशालाक्षीं देवदेवस्य संमुखीम् ।।२।।

❀ इति ध्यात्वा पूजयेत् ❀

३२
ॐ श्रीं श्री भैरव्यै नमः । श्रीभैरवी श्री पादुकाँ पूज-
यामि तर्पयामि नमः ।।१।।

३३
ॐ श्रीं मं महा भैरव्यै नमः । श्री महाभैरवी श्री-
३४ पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।।२।।
ॐ श्रीं सिं सिंह भैरव्यै नमः । श्री सिंह भैरवी श्री
३५ पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।।३।।
ॐ श्रीं धूं धूम्र भैरव्यै नमः । श्री धूम्रभैरवी श्री-
३६ पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।।४।।
ॐ श्रीं भीं भीम भैरव्यै नमः । श्री भीम भैरवी श्री
३७ पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।।५।।
ॐ श्रीं उं उन्मत भैरव्यै नमः । श्री उन्मत भैरवी श्री

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३८ पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।।६

ॐ श्रीं वं बशीकरणभैरव्यै नमः । श्रीवशीकरण भैरवी

३९ श्रीपादुकाँपूजयामि तर्पयामि नमः ।।७

ॐश्रीं मों मोहन भैरव्यै नमः । श्री मोहन भैरवी

श्री पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।।८

ततो भूपुराद्वहिः इन्द्रादि दशदिक्पालान् वज्राद्या युधानि च पद्धति मार्गेण पूजयेत् ।

इत्यावरण पूजाँ कृत्वा धूपादि नमस्काराँ तं सम्पूज्य जपं कुर्यात् ।

❀ इति श्री दक्षिण कालिका पूजन पद्धतिम् सम्पूर्णम् ❀

❀——❀

दक्षिण कालिका पद्धति के अनुसार साधको को फल प्राप्ति ।

श्लोक-साधकानाँ वरं दत्वा तिष्ठते च यथा सुखम् ।
महा विशाले बैकुंठे तत्रेच्छा तत्रतिष्ठताम् ।।

हिन्दी-साधक वर प्राप्त कर वहाँ सुख से बैठे और उनसे कह गये महाविशाल बैकुंठ में जहाँ इच्छा हो बिचरे ।।१४।।

श्लोक-महाकल्पं महापंथं भृणुस्कन्द महातपाः ।
कोटिमध्येषु सिद्धास्ते गच्छंति च महापथम् ।।

हिन्दी-हे स्कंद यह महाकल्प महापंथ है । करोड़ो में कोई एक सिद्ध यहाँ पहुँचते हैं ।।१५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्लोक-चतुर्युगे साधकानां तस्य संख्या विधीयते ।
सप्तलक्षं कृतयुगे सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।।
हिन्दी-चारों युगों में साधकों की संख्या कही गई है,
मैं सत्य कहता हूँ सतयुग में ७०००० सात
लाख ।।१६

श्लोक-त्रेतायां पंचलक्षं च गच्छति च महापथम् ।
द्वापरं च त्रयोलक्षं कलौ लक्ष्यैक साधकाः ।।१७
हिन्दी-त्रेता में५००००० पाँच लाख, द्वापर में ३०००००
तीन लाख, और कलियुग में १००००० एकलाख
साधक पहुँचते हैं ।।१७

श्लोक-कैलाश भुवने चैव शिवशक्तिश्च तिष्ठति ।
समुद्र लक्षणाः सर्वे यन्त्र गात्रादि संक्षलः ।।१८
हिन्दी-कैलाश भुवन में शिवशक्ति स्थित रहती हैं ।
सब सामुद्रिक लक्षणों से युक्त महा प्रसन्न हैं
एवं सम्पत्ति मान हैं ।।१८
केदार कल्प ४३ पटल

—❀—

पंचदश तिथि नित्याः

१-काली २- कपालिनी ३- कुल्ला ४-कुरुकुल्ला ५-निरोधिनी ६-विप्रचित्ता ७- उग्रा ८- उग्रप्रेभा ९- दीप्ता १०- नीला ११- घना १२- बलाका १३- मात्रा १४- मुद्रा १५- मिता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचदशतिथि नित्याःध्यानम्

उद्यद्भानु सम प्रभां रसमुखां पाशाक्ष सूत्रं धनुः ।
खेटं शूलमभीष्टदं च दधतीं वामैश्चषड्भिः करैः ।।
दक्षैरङ्कुशपुस्केषु कुसुमं खड्गं कपाला भयं, ।
माणिक्या भरणोज्ज्वलां त्रिनयनां नित्यां भवानींभजे ।।

अनुलोम-विलोम क्रमम्

श्लोक-

काली चोग्रा तथा मात्रा नित्याः प्रोक्तानुलोमतः ।
बलाका विप्रचित्ता च विलोमे प्रथिताः सदा ।।

संख्य, घटिका, तिथि, अनुलोम क्रमम्

१. अ–काली, ७. ए–उग्रा, १३. च–मात्रा

संख्या, घटिका, तिथि, विलोम क्रमम्

१२–त-बलाका, ६–य-विप्रचित्ता

पंच मकार नाम

१. माँस, २. मदिरा, ३. मैथुन ४. मत्स्य ५. मुद्रा ।

पंचदश तिथि नित्याः

काली की नित्यायें

(मंत्र एवं ध्यान सहित)

१-कालीनित्या

मंत्र-ॐ ह्रीं कालि कालि कौमारि मह्यं देहि स्वाहा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यानम्

श्याम वर्णा महा-भीमा घोर-रावा करालिनी ।
मुण्ड माला-विभूषाढ्या दक्षे खड्गे प्रविभृति ।
तर्जनीं धारयन वामे नृत्यन्ती प्रेत भूमिषु ॥

२-कपालिनी

मन्त्र-ॐ ह्रीं क्रीं कपलानी महाकपाल-प्रिय मानसे कपाल सिद्धि मे देहि हूं फट् स्वाहा ।

ध्यानम्

ध्यायेदञ्जन-पुञ्जा भीमापीन-स्तन-युग्मकाम्,
चन्द्र-वक्त्र च बिम्बोष्ठीं मुक्त-केशीं दिगम्बरां ।
चतुर्मुण्डोपरि-गतां शंख कङ्कण भूषिताम्,
खड्ग-त्रिशूल-वरदाभ्यान् हस्त-चतुष्टये ॥

३- कुल्ला

मंत्र-ॐ क्रीं कुल्लायै नमः नमः ।

ध्यानम्

चतुर्भुजा त्रिनयनां मुकुटा मोप-मण्डिताम्,
शवासन-गतां कुल्लां दश-मुण्डोपरि स्थिताम् ।
बराभयौ करे वामे पुस्तकं स्त्रग दक्षिणे करे ॥

४-४ कुरुकुल्ला

मंत्र-क्रीं ॐ कुरुकुल्ले क्रीं ह्रीं मम सर्व-जन-वश मानय क्रीं कुरुकुल्ले ह्रीं स्वाहा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यानम्

ततोध्याये-महाविद्यां कुरुकुल्लां कुलेश्वरीम् ।
शवोपरि-समासीनां मुण्डमाला-विभूषिताम् ।।
कपाल कर्त्तृका हस्तां-खड्ग-खेटक धारिणीम् ।
अञ्जनाद्रि-निभां दिव्यां मुक्त-केशी चतुर्भुजाम् ।।

५. विरोधिनी

मंत्र-ॐ क्रीं ह्रीं क्लीं, हूँ विरोधि शत्रूधूच्चाय्य विरोधय त्रत्रुक्षयङ्करी हूँ फट् ।

ध्यानम्

चतुर्भुजाँ त्रिनयनां शव-पदमोपरि स्थिताम्,
त्रिशिखं-नाग-पाशं च घण्टां, च डमरुं तथा ।
सम्बिभ्रतीं मपादेवीं क्रमाद्-भुज-चतुष्टये ।।

६. विप्रचित्ता

मंत्र-ॐ श्रीं क्लीं चामुण्डे विप्रचित्ते दुष्ट-घातिनी शत्रून्घातव एतद्दिनावधि विप्रे सिद्धि मे देहि हुँ फट् स्वाहा ।

ध्यानम्

चतुर्भुजां त्रिनयनां पीनोन्नत-पयोधराम्,
दिगम्बरां मुक्त-केशीं ललज्जिहवा भयानकाम् ।
भीम दंष्ट्रां करालास्यां सृक्किणीं-रक्त-वाहिनीम्,
खड्गं-मुण्डं-कपालं-च शूल-हस्तां यहोदरीम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

७-उग्रा

मन्त्र-ॐ स्त्रीं हूँ ह्रीं हूँ फट्।

ध्यानम्

ततोध्यायेत् परामुग्रां प्रत्यालीढ-पद-स्थिताम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां मुण्डमाला-विभूषिताम्॥
श्याम-वर्णां मुक्त-केशीं खड्गेन्दीवर धारिणीम्।
कपाल-कर्तृका हस्तां वर-दान-परायणाम्॥

८—उग्रप्रभा

मन्त्र-ॐ हूँ हूँ उग्र-प्रभे देवी काली-महादेवि स्वरूपं दर्शय हूँ फट् स्वाहा।

ध्यानम्

चतुर्भुजां त्रिनयनां शव-पद्मोपरि स्थिताम्।
सुप्रसन्न-मुखाम्भोद्यां शवानां-माँस-भोजिनीम्॥
शवानां-कर-संघातैःकृत-काञ्चीं हसन्मुखीम्।
खड्ग-मुण्डधरां बामे दक्षे खर्पर कर्तृके॥

९—दीप्ता

मंत्र—क्रीं हूँ दीप्तायै सर्व-फलदायकायै हूँ फट् स्वाहा।

ध्यानम्

चतुर्भुजा त्रिनयनां मुण्डमाला विभूषिताम्।
शव पद्मे समासीनां पीनोन्नत-पयोधराम्॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शवास्थि कृतन्केयूर शंख कङ्कण भूषिताम् ।
खड्ग मुण्ड धरां वामे सव्येऽभय वर प्रदाम् ॥

१०—नीला

मंत्र—हूँ हूँ क्रीं क्रीं ह्रीं हसक्षमलवरयीं नील पत्ताके हें फट् ।

ध्यानम्

भयंकराकृति धरां मुण्ड माला विभूषिताम् ।
रक्त चंचल नेत्राब्जां ललज्जिहवां च भीषणाम् ।
शवोपरि समासीनां नर मुण्ड विभूषिताम् ।
ध्यायेन् नीलां ज्ञान दात्रीं सर्व सिद्धि प्रदायिनीम् ॥

११—घना

मंत्र—ओ क्लीं ओं घनालये घनालयें हूँ फट् ।

ध्यानम्

चतुर्भुजां त्रिनयनां कृष्ण वर्णा च भीषणाम् ।
सद्यः कृतित वाहनां बिभ्रतीं क्षुद्र घंटिकाम् ॥
हस्तेषु खेटकं खड्गं पाश मदगरं तथा ।
धारयन्ती घनां ध्यायेत् रक्ताप्लाविताधराम् ॥

१२—बलाका

मंत्र—ओं क्रीं हूँ ह्रीं बलाका कालि अत्यद्भुत पराक्रमे ॥
अभीष्ट सिद्धि मे देहि हूँ फट् स्वाहा ।

ध्यानम्

नित्यां बलाकां ध्यायेत् त्रिनेत्रां श्मशान वासिनीं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भीमाकृतिः श्यामवर्णा दधानां हस्त किंकिणीम् ।।
विकीर्ण-केशैः राजन्तीं धारयन्तीं च वाहुषु ।
खड्गं मुण्डं दक्षे वामे चषकं मुद्रां च तर्जनीम् ।।

१३—मात्रा

मंत्रा—ओं क्रीं ह्रीं हूँ महा मात्रे सिद्धिं मे देहि सत्वरं हुँ फट् स्वाहा ।

ध्यानम्

शव वक्षसि भ्राजन्तीं भीषणाकार-धारिणीम् ।
त्रिनेत्रैः शोभिताम् दिव्यां चतुर्भिबाहुभिस्तथा ।।
कपाल कर्तृकां चैव तीक्ष्णं खड्गं शिरस्तथा ।
धारयन्तीं भजे मात्रां भक्ताभीष्ट-प्रदायनीम् ।।

१४—मुद्रा

मंत्र-ॐ क्रीं ह्रीं हुँ क्रीं क्रीं मुदाम्बा मुद्रा-सिद्धि मे देहि भोजगन्मुद्रा स्वरूपिणी हुँ फट् स्वाहा ।

ध्यानम्

ध्यायामि मुद्रां नित्यां वै मुण्ड-माला-विभूषिताम् ।
रूधिरेणाधरोष्ठं च प्लावयन्तीं भयंकरीम् ।।
चतुर्भुजैः कपालं च छुरिकां लड्ग खेटके ।
दधानां जयदां देवीं जनानामभयप्रदाम् ।।

१५—मित्ता

मंत्र-ॐ क्रीं हुँ ह्रीं ऐं मिते पारमिते पराक्रमाय ॐ क्रीं हुँ ह्रीं ऐं सोऽहं हुँ फट् स्वाहा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam DIgital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यानम्

भीमां विकीर्ण-केशां च ध्यायेन्नित्यां मितांशुभाम्,
कृष्णवर्णा रक्त-वस्त्रां शवासीनां भयानकाम् ।।
मुण्डमाला धरां दिव्यां धारयन्तीं चतुर्भुजैः ।
चन्द्रहासं मस्तकं च वरं चैवाभयं तथा ।।

मंत्र साधन के हेतु जाप का दशांश हवन, तदुपरान्त दशांश तर्पण दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण

बटुकपूजनम्

श्रीं ह्रीं क्लीं प्राङ्निमन्त्रितं बटुकमाहूय तं गणपति रूपं विभाव्य ३बं बटुकाय अर्घ्यं कल्पयामि नमः ।

इत्यादिरीत्या, अर्घ्य-आचमन-स्नानवस्त्र-यज्ञोपवीतगन्ध-पुष्प-धूप-दीपं-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात् ।।

सुवासिन्या पूजनम्

यथा प्राङ्निमन्त्रितां काली रूपिणीं दीक्षितां सुवासिनीं प्रक्षालित पादामासनं उपवेशयेत् ।

सा चेद्दीक्षिता तदा ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं हूँ ह्रीं दक्षिण कालिकाम्बायै नमः इमांशक्ति पवित्रा कुरु मम शक्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुरु स्वाहा इत्यभिषेक मन्त्र पूर्वकं सामान्यार्घ्यसलिलेन त्रिःशक्तिं सम्प्रोक्ष्य ३ ओं शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु प्रणश्यत्वशुभञ्च यत् यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृल्लेखाँ जपेत् ।

अथ तां देवतारूपां विभाव्य ३क्लीं हूँ ह्रीं शक्त्यै अमुकं समर्पयामि इति मन्त्रेण हरिद्रा कुंकुम चन्दन पट्टवासः पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलानि वसनाभरणानि च दद्यात् ।

श्री देव्यै आवरण देवताभ्यश्च दत्तपुष्पाञ्जल्या तस्याः करे विशेषार्घ्यांदमृतं पात्रान्तरे कृत्वा समर्पयेत् ।

साभ्युत्थाय तदादाय शिरशि गुरु पादुकामन्त्रेण गुरुं त्रिरिष्टवा हृदि देवीञ्च सन्तर्प्य मूलेन गुर्वाज्ञाँ गृहीत्वा मूलान्ते सर्वं तत्वं शोधयामि नमः स्वाहा इति मन्त्रेण सर्वं तत्वं संशोधयेत् ।

ततश्च तत्स्वीकुर्य्यात् । पश्चात्ताँ भोजयित्वा ताम्बूल-दक्षिणादिभिः सन्तर्प्य विसृजेत् ।

॥ अथ कुमारी पूजा ॥

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभं ॥
द्विवर्षाद्या दशा द्वान्ताः कुमारीः परिपूजयेत् ॥१॥
अर्थादेकहायनाल्पवयस्कावर्ज्याः ॥
ता आसने उपवेश्यावाहयेत् मन्त्रेण ॥
मन्त्राक्षर मयीं लक्ष्मीं मातृणाम रूपधारिणीम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवदुर्गात्मिकाँ साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ।।

अनेनैव मन्त्रेण नवापि आवहयेत् ।।

अशक्तौ यथाशक्ति एकामपि अथ नवानाम् पूजा वन्त्माः ।।

द्विहायना कुमारि संज्ञकाः ।।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे शर्वशकि स्वरूपिणि ।।

पूजाँ गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते ।।२।।

त्रिपुराँ त्रिपुरा धाराँ त्रिवर्गा ज्ञानरूपिणीं ।।

त्रैलोक्य वंदिताँ देवीं त्रिमूर्ति पूजयाह्मयहम् ।।३।।

चतुर्वर्षा कल्याणि तत्पूजा मन्त्रः ।।

कलात्मिकाँ कलातीताँ कारुण्यहृदयाँ शिवाम् ।।

कल्याण जननीं देवी कल्याणीं पूजयाम्यहं ।।४।।

पंचवर्षा रोहिणीतत् पूजा मन्त्रः ।।

अणिमादि गुणधारा मकाराधेक्षरा त्मिकाम् ।।

अनन्ताँ शक्तिकाँ लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यह्म ।।५।।

षडवर्षाकालिका तत्पूजा मन्त्रः ।।

कामचारा शुभा कान्ता काल चक्र स्वरूपिणीं ।।

कामदा करुणोदारा कालिका पूजयाम्यह्म ।।६।।

सप्तवर्षा चंडिका तत्पूजा मन्त्रः ।।

चंडबीरा चंडरूपा चंडमुण्ड प्रभंजनी ।।

पूजयामि सदा देवीं चंडिका चंड विक्रमाम् ।।६।।

अष्ट वर्षाशाभवी तत् पूजा मन्त्रः ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सदानन्दकरीं शांतां सर्वदेव नमस्कृताम् ।।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ।।
नवहायना दुर्गा तत् पूजा मन्त्रः ।।
दुर्गमे दुस्तरेहैकार्यें भवदुःख विनाशिनीम् ।।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गतिनाशिनीम् ।।८।।
दशवर्षा सुभद्रां तत् पूजा मन्त्रः ।।
सुन्दरीं स्वर्ण वर्णाभां सुख सौभाग्यदायिनीम् ।।
सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रांपूजयाम्यहम् ।।१०।।

इति प्रत्येक मन्त्रान्ते तत्तभाम् मन्त्रेण नवापि षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत् इति ।।

बलिधानविधिः

यथा-देव्या दक्षभागे सामान्योदकेन त्रिकोणवृत्त चतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य, ३ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, अर्घ्यभक्त पूरितोदकं सक्षीरादित्रयंपात्रं तत्र विन्यस्य ३ओं ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्व भूतेभ्यो हुँ फट् स्वाहा इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दशकरार्पितं वामकरतत्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्वा वामपार्ष्णिघात करास्फोटौ कुर्वाणः समुदञ्चित वक्त्रो वाणमुद्रया बलिं भूतैः ग्रासितं विभाव्य प्रणमेत् ।

* इतिबलिदानविधिः *

—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ततः साधकः समाहितचेता भगवत्याः श्री दक्षिण कालिकायाः पंचाग सहितं कुर्यात् । तद्यथा-

अथ कवचम्-

इस प्रकार साधको एकाग्रचित होकर भगवती श्री दक्षिण कालिका पंचाग का पाठ करना चाहिये ।

-❀-

अथ श्री दक्षिण कालिका पंचांग प्रारम्भ

अथ् कालिका कवचम्

कैलास शिखरासीनं देवदेव जगद्गुरुम् ।
शङ्कर परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम् ॥१

❀ पार्वत्युवाच ❀

भगवान् देवदेवेश देवानां भोगद प्रभो ! ।
प्रब्रूहि मे महादेव ! गोप्य चेद्यदि हे प्रभो ॥२
शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत् ।
परमैश्वर्यमतुलुं लभेद्येन हि तद्वद ॥३

❀ भैरव उवाच ❀

वक्ष्यामि ने महादेवि ! सर्वधर्म विदाम्बरे ! ।
अद्भुतं कवचं देव्याः सर्व काम प्रसाधकम् ॥४
विशेषतः शत्रु नाश सर्व रक्षाकरं नृणाम् ।
सर्वारिष्ट प्रशमनं सर्वभद्र विनाशनम् ॥५
सुखदं भोगदं चैव वशीकरणमुत्तमम् ।
शत्रु सङ्घाः क्षय यान्ति भवन्ति व्याधिपीडिता॥६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वाभीष्टं द्रोहिणस्तथा ।
भोगमोक्ष प्रदं चैव कालिका कवचं पठेत् ॥७

विनियोग:

ॐ अस्य श्री कालिकाकवचस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री कालिका देवता, जपे विनियोगः ।

ॐ ध्यायेत्कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहु रूपिणीम् ।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम ॥८
नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घविदारिणीम् ।
नरमुण्ड तथा खड्गं कमलं च वरं तथा ॥९
निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीघोररूपिणीम् ।
साट्टहासाननान्देवीं सर्वदाञ्च दिगम्बरीम् ॥१०
शवासनस्थितां कालीं मुण्डमाला विभूषिताम् ।
इति ध्यात्वा महाकालीं ततस्तु कवचं पठेत् ॥११
ॐ कालिका घोररूपा सर्वकाम प्रदा शुभा ।
सर्वदेवस्तुता देव शत्रुनाश करोतु मे ॥१२
ॐ ह्रीं ह्रीं रूपिणी चैव ह्रां ह्रीं रूपिणीं तथा ।
ह्रां ह्रीं क्षों क्षौं स्वरूपा सा सदा शत्रून्विदारयेत् ॥१३
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्धविमोचनी ।
हुंरूपिणी महाकाली रक्षास्मान् देवि सर्व ॥१४
यया शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः ।
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम् ॥१५
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहका ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कौमार्यैन्द्री चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः ॥१६

सुरेश्वरी घोर रूपा चण्डमुण्ड विनाशनी ।
मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा ॥१७

ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोरे दंष्ट्रे व रुधिरप्रिये ।
रुधिरापूर्णवक्त्रे च रुधिरेणावृतस्तनि ! ॥१८

मम शत्रून् खादय खादय हिंस हिंस मारय मारय
भिन्धि भिन्धि छिन्धि-छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय
द्रावय द्रावय शोषय शोषय स्वाहा ।
ह्रां ह्रीं कालिकायै मदीय शत्रून् समर्पयामिस्वाहा ॥
ॐजय जय किरि किरि किटि किटि कट कट मर्द-मर्द
मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस
भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानान् चामुण्डे !
सर्वजनान् राज्ञो राजपुरुषान् स्त्रियो मम
वश्यान् कुरु कुरु तनु तनु धान्यं धनं मेऽश्वान्
गजान् रत्नानि दिव्यकामिनीः पुत्रान् राजश्रिय
देहि देहि यच्छ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा ।

इत्येतत्कवचं दिव्यं कथितं शम्भुना पुरा ।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः ॥१९

वैरिणः प्रलयं यन्ति व्याधिता वा भवन्ति हि
बलहीनाः पुत्रहीनः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥२०

सहस्र पठनात्सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा ।
तत्कार्याणि च सिध्यन्ति यथा शंकर भाषितम् ॥२१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः ।
पादोदकेन पिष्ट्वा तल्लिखेल्लोहशलाकया ॥२२
भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तराशिरसस्तथा ।
हस्तं दत्वा तु हृदये कवच तु स्वयं पठेत् ॥२३
शत्रोः प्राणप्रतिष्ठां तु कुर्यान्मंत्रेण मन्त्रवित् ।
हन्यादस्त्र प्रहारेण शत्रो ! गच्छ यमक्षयम् ॥२४
ज्वलदङ्गारतापेन भवन्ति ज्वरिता भृशम् ।
प्रोञ्छनैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥२५
वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम् ।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादि वृद्धिदकम् ॥२६
प्रभातसमये चैव पूजाकाले च यत्नतः ।
सायकाले तथा पाठात्सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥२७
शत्रुच्चाटनं याति देशाद्वा विच्युतो भवेत् ।
पश्चात्किङ्करतामेति सत्यं सत्यं न संशयः ॥२८
शत्रुनाशकरे देवि ! सर्वसम्पत्करे शुभे ।
सर्वदेवस्तुते देवि ! कालिके ! त्वां नमाम्यहम् ॥२९

❀इति श्रीरुद्रयामले कालिकाकल्पे कालिकाकवचंसंपूर्णम्❀

कवच शरीर की रक्षा के लिए होता है ।

❀ अथ श्री जगन्मङ्गल महाकाली कवचं प्रारम्भम् ❀

श्री भैरव्युवाच

कालीपूजा श्रुता नाथ ! भावाश्च विविधाः प्रभो ! ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचम्पूर्व सूचितम् ॥१

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्वमेव स्रष्टा पाता च संहर्ता च त्वमेवहि ।
त्वमेव शरणं नाथ ! त्राहि मां दुःख सङ्कटात् ॥२

❀ भैरव उवाच ❀

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि ! प्राण वल्लभे !
श्री जगन्मङ्गलन्नाम कवचम्मन्त्रविग्रहम् ॥३
पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यम्मोहयेत्क्षणात् ।
नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥४
योगिनं क्षोभमनयद्यद्धृत्वा च रघूत्तमः ।
वरतृप्तो जघानैव रावणादिनिशाचरान् ॥५
यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्य विजयी विभुः ।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः ॥६
एवं हि सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ! ।
श्री जगन्मङ्गलस्याऽस्य कवचस्य ऋषिः शिवः ॥७
छन्दोऽनुष्टुब्देवता च कालिका दक्षिणेरिता ।
जगताम्मोहने दुष्टविजये भुक्तिमुक्तिषु ॥८
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ।
शिरो मे कालिका पातु क्रीङ्कारैकाक्षरी परा ॥९
क्रीं क्रीं क्रीं ललाटञ्च कालिका खड्गधारिणी ।
हूँ हूँ पातु नेत्र युग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम ॥१०
दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मम्महेश्वरी ।
क्रीं क्रीं क्रीं रसनाम्पातु हूँ हूँ पातु कपोलकम् ॥११
वदनं सकलम्पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा ।।१२
खड्गमुण्ड धरा काली सर्व्वांगमभितोऽवतु ।
क्रीं हूँ ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयम्मम ।।१३
ऐं हूँ ओं ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ।
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका ।।१४
क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं कारी पातु षडक्षरी मम ।
क्रीं नाभिम्मध्यदेशञ्च दक्षिणे कालिकाऽवतु ।।१५
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठञ्च कालिका सा दशाक्षरी ।
क्रीं मेगुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः ।।१६
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ।
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम् ।।१७
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा मामूरुयुग्मकम् ।
ॐ क्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी ।।१८
काली हृन्नामविद्येयञ्चातुर्वर्ग्गफलप्रदा ।
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु सा गुल्फन्दक्षिणे कालिकाऽवतु ।।१९
क्रीं ह्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदम्पातु चतुर्दशाक्षरी मम् ।
खड्गमुण्डधरा काली वरदाभय धारिणी ।।२०
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवत् ।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ।।२१
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभादीप्ता घनत्विषा ।
नीला घना बलाका च यात्रामिता च माम् ।।२२
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला विभूषणाः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रक्षन्तु दिग्विदिक्षु मां ब्राह्मी नारायणी तथा ।।२३
माहेश्वरी च चांमुण्डा कौमारी चाऽपराजिता ।
वाराही नारसिंह च सर्वाश्चामित भूषणाः ।।२४
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु विदिक्षु मां यथा तथा ।
इति ते कथितन्दिव्यं कवचम्परमाद्भुतम् ।।२५
श्री जगन्मंगलन्नाम महाविद्यौध विग्रहम् ।
त्रैलोक्याकर्षणम्ब्रह्मन् ! कवचं मन्मुखोदितम् ।।२६
गुरुपूजाम्विधायाऽथ विधिवत्प्रपठेत्ततः ।
कवचन्त्रिः सकृद्वाऽपि यावज्जीवञ्च वा पुनः ।।२७
एतच्छतार्द्धमावृत्या त्रैलोक्य विजयी भवेत् ।
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः ।।२८
महाकवि र्भवेन्मासं सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ।
पुष्पाञ्जलीन्कालिकायै मूलेनैवाऽर्पयेत्सकृत् ।।२९
शतवर्ष सहस्राणाम्पूजायाः फलमाप्नुयात् ।
भूर्जे विलिखितञ्चैतत्स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ।।३०
शिखायान्दक्षबाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि ।
त्रैलोक्यम्मोहयेत्क्रोधात्त्रैलोक्यञ्चूर्णयेत्क्षणात् ।।३१
पुत्रवान्धनवाञ्छ्रीमान्नाना विद्या निधिर्भवेत् ।
ब्रह्मास्त्रा दीनि शस्त्राणि द्गात्र स्पर्शनात्ततः ।।३२
नाशमायाति या नारी वन्ध्या वाऽमृतपुत्रिणी ।
बह्वपत्या जीवलोका भवत्येव न संशयः ।।३३
न देयम्पर शिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्य ह्यन्यथा मृत्यु माप्नुयात् ।।३४
स्पर्द्धामुध्दूय कमला वाग्देवी मन्दिरे सुखे ।
पौत्रान्तं स्थैर्य्य मास्थाय निवसत्येव निश्चलम् ।।३५
इदकं वचमज्ञात्वा यो भजेद्घोर दक्षिणम् ।
शतलक्षम्प्रजप्त्वाऽपि तस्य विद्या न सिध्यति ।
सहस्त्रघात माप्नोति सोऽचिरान्मृत्यु माप्नुयात् ।।३६
जपेदादौ जपे दन्ते सप्तवाराण्यनुक्रकात् ।
नोधृत्य यत्र कुत्रापि गोपनीयं प्रयत्नतः ।।३७
लिखित्वा भूर्जपत्रे वै पूजा काले तु साधकः ।
मूर्ध्नि धार्यं प्रयत्नेन विद्यारत्नं प्रपूजयेत् ।।३८

❀ इति श्री जगन्मंल कालीकवचं समाप्तम् ❀

❀-❀-❀

आद्या श्री कालिका त्रैलोक्य-विजय कवचं

मुण्ड माला धरान्देवी ललज्जिह्वान्दिगम्बराम् ।
एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानालय वासिनीम् ।।

❀ श्री शिव उवाच ❀

विनियोगः

त्रैलोक्य-विजयस्य कवचस्य शिवः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः; आद्या श्री काली देवता, क्रीं बीजं हूँ शक्ति, ह्रीं कीलकं, कामनासिद्धये विनियोगः ।।

—❀—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आद्या श्री कालिका त्रैलोय-विजयक वच प्रारम्भ

❀ श्री शिव उवाच ❀

क्रीं आद्या मे शिरः पातु हूँ काली वदनं मम ।
ह्रदयं ह्रीं परा-शक्तिः पायात् कण्ठं परात्परा ॥१
नेत्रे पातु जगद्धात्री कर्णौ रक्षतु शङ्करी ।
घ्राणं पातु महा-माया रसना सर्व-मंगला ॥२
दन्तान् रक्षतु कौमारी कपोलौ कमलालया ।
ओष्ठाधरौ क्षमा रक्षेत् चिबुकं चारु-हासिनी ॥३
ग्रीवां पायात् कुलेशानी ककुत् पातु कृपा-मयी ।
द्वौ बाहू बाहुदा रक्षेत् करौ कैवल्य-दायिनी ॥४
स्कन्धौ कपर्दिनी पातु पृष्ठं त्रैलोक्य-तारिणी ।
पार्श्वे पायादपर्णा मे कटिं मे कमठासना ॥५
नाभौ पातु विशालाक्षी प्रजा-स्थानं प्रभावती ।
उरु रक्षतु कल्याणी पादौ मे पातु पार्वती ॥६
जयदुर्गाऽवतु प्राणान् सर्वाङ्गं सर्व-सिद्धिदा ।
रक्षा-हीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन च ॥७
तत् सर्वं मे सदा रक्षेदाद्या काली सनातनी ।
इति ते कथितं दिव्यं त्रैलोक्य-विजयाभिधम् ॥८
कवचं कामिका-देव्या आद्यायाः परमाद्भुतम् ॥

—❀—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फल श्रुति

पूजा-काले पठेद् यस्तु आद्याधिकृत-मानसः ।
सर्वान् कामानवाप्नोति तस्याद्या सुप्रसीदति ॥९
मन्त्र-सिद्धिर्भवेदाशु किङ्कराः क्षुद्र-सिद्धयः ।
अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी प्राप्नुयाद धनम् ॥१०
विद्यार्थी लभते विद्यां कामी कामानवाप्नुयात् ।
सहस्रावृत्ति - पाठेन वर्मणोऽस्य पुरस्क्रिया ॥११
पुरश्चरण-सम्पन्नं यथोक्त-फलदं भवेत् ।
चन्दनागरु-कस्तूरी-कुंकमै रक्त चन्दनैः ॥१२
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा साधकःकटौ ॥१३
तस्याद्या कालिका वश्या वांछितार्थं प्रयच्छति ।
न कुत्रापि भयं तस्य सर्वत्र विजयी कविः ॥१४
अरोगी चिर-जीवी स्यात् बलवान् धारण क्षमः ।
सर्व-विद्यासु निपुणः सर्व-शास्त्रार्थ-तत्व-वित् ॥१५
वशे तस्य मही-पाला भोग-मोक्षौकर-स्थितौ ।
कलि-कल्मष-युक्तानां निःश्रेयस-करं परम् ॥१६

जो साधक इसको प्रातःकाल उठकर यत्न के साथ अपने शरीर पर धारण करता है, उसको कभी अकाल मृत्यु नहीं होती; । वैसे ज्ञानीजन कवच को शरीर की रक्षा के निमित्त अपने शरीर पर धारण करते हैं ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक नित्य ही आद्या श्रीकालिका त्रैलोक्य-विजय कवच का एक हजार बार एकांत में बैठकर पाठ, जप करता है। उसे मन चाही सिद्धि प्राप्त होती है। तथा वह धनवान्-विद्यावान्-यशवान्-संततिवान् होकर इस पृथ्वी पर तरह-तरह के सुखों को भोगकर अन्त में साधक परमपद कैलास को प्राप्त होता हैं। और वह जन्ममरण के फेर से मुक्त हो जाता है।

आद्या श्री कालीकवच में शिव ऋषि, अनुष्टुप छन्द, आद्या श्री काली देवता हैं, क्रीं बीज हूँ शक्ति, ह्लीं कीलक काम्यसिद्धि से निमित्त विनियोग करना।

आद्या कालिका के सभी मन्त्र 'सिद्ध मन्त्र' हैं। साधकों के लिए काली माँ भल-दायिनी कही गयी है।

❀—❀

इसके बाद साधकों कालीहृदय का पाठ करना चाहिए।

❀ अथ श्री काली हृदय प्रारम्भ ❀

❀ श्रीमहाकाला उवाच ❀

महाकौतूहल स्तोत्रं हृदयाऽऽख्यं महोत्तमम् ।
शृणु प्रिये ! महागोप्यन्दक्षिणायाः सुगोपितम् ॥१

अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम् ।
अन्येभ्यः कुरु गोप्यञ्च सत्यं सत्यञ्च शैलजे ! ॥२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ श्री देव्युवाच ❀

कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतम्पुरा ।
तत्सर्वं कथ्यतां शम्भो ! महेश्वर ! दयानिधे ।।३

❀ श्री महाकाल उवाच ❀

पुरा प्रजापतेः शीर्षश्छेदनं कृत वानहम् ।
ब्रह्महत्याकृतैः पापै भैरवत्वम्ममाऽऽगतम् ।।४
ब्रह्महत्याविनाशाय कृतं स्तोत्रम्मयाप्रिये ! ।
कृत्या विनाशकं स्तोत्रम्ब्रह्महत्यापहापकम् ।।५

❀ विनियोगः ❀

ॐअस्य श्री दक्षिणकाल्या हृदय स्तोत्रमन्त्रस्य-श्री महाकालऋषिरुष्णिक्छन्दः श्रीदक्षिणकालिका देवता क्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकम् सर्वत्र सर्वदा जपे विनियोगः ।

❀ अथ हृदयादि न्यासः ❀

ॐ क्रां हृदयाय नमः ।
ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ क्रूं शिखायै वषट् ।
ॐ क्रैं कवचाय हुम् ।
ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ क्रः अस्त्राय फट् ।

—❀—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ध्यायेत्कालीम्महामायान्त्रिनेत्राम्बहु रूपिणीम् ।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्र निभाननाम् ॥१
नीलोत्पल दल प्रख्यां शत्रुसङ्घ विदारिणीम् ।
नरमुण्डन्तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥२
बिभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोर रूपिणीम् ।
अट्टा ट्टहास निरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥३
शवासनस्थितां देवीम्मुण्डमालाविभूषिताम् ।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयम्पठेत् ॥४
ॐ कालिकाघोररूपाद्या सर्वकामफल प्रदा ।
सर्व देवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥५
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषुलोकेषु दुर्लभा ।
तव स्नेहान्मयाख्यातन्न देयं यस्य कस्यचित् ॥६
अथ ध्यानंसम्प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके ! ।
यस्य विज्ञान मात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति ॥७
नाग यज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्ध कृतशेखराम् ।
जटाजूटाञ्च सञ्चिन्त्य महाकाल समीपगाम् ॥८
एवन्न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवाः ।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं वरानने ! ॥९
यन्त्रं शृणु परंदेव्याः सर्वार्थः सिद्धिदायकम् ।
गोप्याद्गोप्यतरं गोप्यं गोप्याद् गोप्यतरम्महत् ॥१०
त्रिकोणम्पञ्चाष्ट कमलाम्भूपुरान्वितम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुण्डपङ्क्तिञ्च ज्वालाञ्च कालियन्त्रं सुसिद्धिदम् ॥११
मन्त्रन्तु पूर्वं कथितन्धारयस्व सदाप्रिये ! ।
देव्या दक्षिणकाल्यास्तु नाममालान्निशामय ॥१२
काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपापरात्मिका ।
मुण्डमाली विशालाक्षी सृष्टि संहारकारिका ॥१३
स्थिति रूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका ।
भगसर्पिः पानरता भगोद्योता भगाङ्गजा ॥१४
आद्या सदानवा घोरा महातेजाः करात्मिका ।
प्रेतवाहा सिद्धलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती ॥१५
एतानि नाम माल्यानि ये पठन्ति दिने दिने ।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरि ! ॥१६
कालीं कालहरां देवीं देवीं कंकाल बीज रूपिणीम् ।
कालरूपाङ्कलातीताङ्कालिकांदक्षिणाम्भजे ॥१७
कुण्डगोलप्रियान्देवीं स्वयम्भूकुसुमे रताम् ।
रतिप्रियाम्महारौद्रीं कालिकाम्प्रणमाम्यहम् ॥१८
दूतीं प्रियाम्महादूतीं दूतीं योगेश्वरीम्पराम् ।
दूतीयोगोद्भवरतान्दूती रूपान्नमाम्यहम् ॥१९
क्रीं मन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु ।
सर्वे रोगा विनश्यन्ति नाऽत्रकार्या विचारणा ॥२०
क्रीं स्वाहान्तैर्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः ।
तिलकङ्क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत्सदा ॥२१
क्रीं हूँ ह्रीं मन्त्रजप्तेन चाक्षतं सप्तभिः प्रिये ! ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महाभये विनाशश्च जायते नाऽत्र संशयः ॥२२

क्रीं ह्लीं हूँ स्वाहा मन्त्रेण श्मशानाग्निञ्च मन्त्रयेत् ।
शत्रोगृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥२३

ह्लूं ह्लीं क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा ।
रिपूणांचैव चोच्चाटनयत्येव न संशयः ॥२४

आकर्षणे क्रीं क्रीं क्रीं जप्त्वा अक्षतरुप्रतिक्षिपेत् ।
सहस्र योजनस्था च शीघ्रमाच्छिति प्रिये ॥२५

क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ च ह्लीं ह्लीं च कज्जल शोधितन्तथा ।
तिलकेन जगन्मोहं सप्तधा मन्त्रमाचरेत् ॥२६

हृदयम्परमेशानि ! सर्वपापहरम्परम् ।
अश्वमेधादियज्ञानां कोटि कोटि गुणोत्तरम् ॥२७

कन्यादानादिदानानां कोटि कोटि गुणंफलम् ।
दूती यागादि यागानां कोटि कोटि फलं स्मृतम् ॥२८

गंगादि सर्वतीर्थानां फलं कोटि गुणं स्मृतम् ।
एकधापाठमात्रेण सत्यं सत्य भयोदितम् ॥२९

कौमारी स्वष्टरूपेण पूजाङ्कृत्वा विधानतः ।
पठेत्स्तोत्रम्महेशानि ! जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥३०

रजस्वला भगन्दृष्ट्वा पठेदेकाग्रमानसः ।
लभते परमं स्थानं देवीलोके वरानने ! ॥३१

महादुःखे महारोगे महा संकटके दिने ।
महाभये महाघोरे पठेत्स्तोत्रं महोत्तमम् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं गोपयेन्मातृजारवत् ॥३२

❀ इति श्रीकालीहृदय समाप्तम् ❀

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हृदय के पाठोपरान्त शतनाम का पाठ करना चाहिए।

अथ श्रीककारादि कालिकाष्टोत्तर शतनाम प्रारम्भ

❀ भैरव उवाच ❀

शतनाम प्रवक्ष्यामि कालिकाया: वरानने !
यस्य प्रपठनाद्वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१
काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।
कालरात्रिः कालिका च कालभैरव पूजिता ॥२
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्व भाविनी।
कुलीनाकुलकर्त्री च कुलवर्त्म प्रकाशिनी ॥३
कस्तूरी रसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका ॥४
कुलकान्ता करालास्या कामार्ता च कलावती।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी ॥५
कुलजा कुलकन्या च कलहा कलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुंजेरश्वरगामिनी ॥६
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्छिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता ॥७
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशांगी कला तथा।
क्रीं रूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता ॥८
कृशंगी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी ॥९
कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका ।
कामदेवकला कल्पलता कामांगवर्द्धिनी ॥१०
कुन्ता च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका ।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्द प्रदायिनी ॥११
कुमारी पूजनरता कुमारीगणशोभिता ।
कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रत धारिणी ॥१२
कंकाली कमनीया च कामशास्त्र विशारदा ।
कपाल खट्वांगधरा कालभैरव रूपिणी ॥१३
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलास वासिनी ।
कात्यायनी कार्यकारी काव्य शास्त्र प्रमोदिनी ॥१४
कामाकर्षणरूपा च कामपीठ निवासिनी ।
कंकिनी काकिनी कुत्सिता कलहप्रिया ॥१५
कुण्डगोलोद्भव प्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी ।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया ॥१६
कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्ण वल्लभा ।
इति ते कथितं देवि ! गुह्याद गुह्यतरम्परम् ॥१७
प्रपठेद्य इदं नित्यं कालीनामशताष्टकम् ।
त्रिषु लोकेषु देवेशि ! तस्याऽसाध्यन्न विद्यते ॥१८
प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदानिशि ।
यः पठेत्परया भक्त्या काली नाम शताष्टकम् ॥१९
कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शून्यागारे श्मशाने प्रान्तरे जलमध्यतः ॥२०
वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये ।
शताष्टकञ्जपन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम् ॥२१
कालीं संस्थाप्य विधिवत्स्तुत्वा नामशताष्टकैः ।
साधकः सिद्धि साप्नोति कलिकायाः प्रसादतः ॥२२

❀ इति श्री कालिकाष्टोत्तर शतनाम समाप्तम् ❀

—❀—

श्री आद्या कालिका भगवत्याः ककारादि शतनाम स्तोत्रम्

शवारुढाम्महाभीमां घोर दंष्ट्रां हसन्मुखीम् ।
चतुर्भुजां खड्ग मुण्ड वराभय करां शिवाम् ॥
मुन्डमाला धरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम् ।
एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम् ॥

विनियोगः

अस्य स्तोत्रस्य ऋषिः सदाशिवः, छन्दो अनुष्टुप्,
देवता आद्या कालिका; धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु ।

शिवउवाच

क्रीं काली हूँ कराली च ह्रीं कल्याणी कलावती ।
कमला कलि-दर्पघ्नी कपर्दीश-कृपान्विता ॥१
कालिका काल-माता च कालानल-सम द्युतिः ।
कपर्दिनी करालास्या करुणामृत-सागरा ॥२

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कृपा-मयी कृपाधारा कृपापारा कृपागमा ।
कृशानुः कपिला कृष्णा कृष्णानन्द-विवर्द्धिनी ॥३
काल रात्रिः काम रूपाकाम-पाश विमोचनी ।
कादम्बिनी कलाधारा कलि कल्मष नाशिनी ॥४
कुमारी-पूजन-प्रीता कुमारी पूजकालया ।
कुमारी-भोजनानन्दा कुमारी रूप धारिणी ॥५
कदम्ब-वन-सञ्चारा कदम्ब वन वासिनी ।
कदम्ब-पुष्प सन्तोषा कदम्ब पुष्प मालिनी ॥६
किशोरी कल कण्ठा च कलन्नाद निनादिनी ।
कादम्बरी पान रता तथा कादम्बरी प्रिया ॥७
कपाल-पात्र निरत्ता कङ्काल माल्य धारिणी ।
कमलासन सन्तुष्टा कमलासन वासिनी ॥८
कमलालय मध्यस्था कमलामोद मोदिनी ।
कल हंसःगतिः क्लैव्य नाशिनी काम रूपिणी ॥६
काम रूप कृतावासा काम पीठ विलासिनी ।
कमनीया कल्पता कमनीय विभूषणा ॥१०
कमनीय-गुणाराध्या कोमलाङ्गी कृशोदरी ।
कारणामृत सन्तोषा कारणानन्दसिद्धिदा ॥११
कारणानन्द-जापेष्टा कारणार्चन हर्षिता ।
कारणार्णव सम्मग्ना कारण-व्रत-पालिनी ॥१२
कस्तूरी सौरभामोदा कस्तूरी तिलकोज्वला ।
कस्तूरी पूजन रता कस्तूरी पूजक प्रिया ॥१३

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कस्तूरी-दाह-जननी कस्तूरी-मृग-तोषिणी ।
कस्तूरी-भोजन-प्रीता कर्पूरामोद-मोदिता ॥१४
कर्पूर-मालाभरणा कर्पूर-चन्दनोक्षिता ।
कर्पूर-करणाह्लादा कर्पूरामृत-पायिनी ॥१५
कर्पूर-सागर-स्नाता कर्पूर-सागरालया ।
कूर्च-बीज जप-प्रीता कूर्च-जाप-परायण ॥१६
कुलीना कौलिकाराध्या कौलिक-प्रिय-कारिणी ।
कुलाचारा कौतुकिनी कुल-मार्ग प्रदर्शिनी ॥१७
काशीश्वर कष्ट-हर्त्री काशीश वर दायिनी ।
काशीश्वर-कृतामोदा काशीश्वर-मनोरमा ॥१८
कल-मञ्जीर-चरणाक्वणत्-काञ्ची-विभूषणा ।
काञ्चनाद्रि-कृतागारा काञ्चनाचल-कौमुदी ॥१९
कामबीज जपानन्दा काम-बीज-स्वरूपिणी ।
कुमतिघ्नी कुलीनार्ति-नाशिनी कुल-कामिनी ॥२०
क्रीं ह्रूं ह्रीं-मन्त्र-वर्णेन काल-कण्टक-घातिनी ।
इत्याद्या-कालिका-देव्याः शतनाम प्रकीर्तितम् ॥२१
ककार-कूट-घटितं काल-रूप-स्वरूपकम् ॥२२

फलश्रुति

पूजा-काले पठेद्यस्तु कालिका-कृत-मानसः ।
मन्त्र-सिद्धिर्भवेदाशुस्मै काली प्रसीदति ॥
बुद्धिं विद्यां च लभते गुरोरादेश-मात्रतः ।
धनवान् कीर्ति-मान् भूयाद् दान शीलो दयान्वितः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुत्र पौत्र सुखैश्वर्यैर्मोदते साधको भुवि ।
भौमावस्या निशा भागे म-पञ्चक-समन्वितः ॥
पूजयित्वा महाकाली माद्यां त्रिभुवनेश्वरीम् ।
पठित्वा शत नामानि साक्षात् काली मयो भवेत् ॥
नासाध्यं विद्यते तस्य त्रिषु लोकेषु किञ्चन ।
विद्यायां वाक् पतिः साक्षात् धने धनपति र्भवेत् ॥
समुद्र इव गाम्भीर्ये बले च पवनोपमः ।
तिग्मांशुरिव दुष्प्रेक्ष्यः शशिवच्छुभदर्शनः ॥
रूपे मूर्तिधरः कामो योषितां हृदयङ्गमः ।
सर्वत्र जयमाप्नोति स्तवस्यास्य प्रसादतः ॥
यं यं कामं पुरस्कृत्य स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ।
तं तं काममवाप्नोति श्रीमदाद्या प्रसादतः ॥
रणे राजकुले द्यूते विवादे प्राण संकटे ।
दस्यु ग्रस्ते ग्राम दाहेसिंह व्याघ्रावृते तथा ॥
अरण्ये प्रान्तरे दुर्गे ग्रह राजभयेऽपि वा ।
ज्वर दाहे चिर व्याधौ महा रोगादि संकुले ॥
बाल ग्रहादि रोगे च तथा दुःस्वप्न दर्शने ।
दुस्तरे सलिले वापि पोते वात विपद् गते ॥
विचिन्त्य परमां मायामाद्यां कालीं परात्पराम् ।
यः पठेच्छत नामानि दृढ़ भक्ति समन्वितः ॥
सर्वापद्भ्यो विमुच्येत देवि सत्यं न संशयः ।
न पापेभ्यो भयं तस्य न रोगेभ्यो भयं क्वचित् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वत्र विजयस्तस्य न कुत्रापि पराभवः ।
तस्य दर्शन-मात्रेण पलायन्ते विपद्-गणाः ॥
स वक्ता सर्व-शास्त्राणां स भोक्ता सर्व सम्पदाम् ।
स कर्ता जाति-धर्माणां ज्ञातीनां प्रभुरेव सः ॥
वाणी तस्य वसेद् वक्त्रे कमलानिश्चला गृहे ।
तन्नाम्ना मानवाः सर्वे प्रणमन्ति ससम्भ्रमाः ॥
दृष्ट्या तस्य तृणायन्ते ह्यणिमाद्यष्ट-सिद्धयः ।
आद्या काली-स्वरूपाख्यं शत-नाम प्रकीर्तितम् ॥
अष्टोत्तर-शतावृत्या पुरश्चर्याऽस्य गीयते ।
पुरस्क्रियान्वितं स्तोत्रं सर्वाभीष्ट-फल-प्रदम् ॥
शतनाम-स्तुतिमिमामाद्या काली स्वरूपिणीम् ।
पठेद् वा पाठयेद् वापि शृणुयाच्छ्रावयेदपि ॥
सर्व पाप विनिमुक्तो ब्रह्म-सायुज्यमाप्नुयात् ॥

यह स्तोत्र स्वयं शिवा ने शिव अर्थात् काली को सुनाया था । यह स्तोत्र जिसका पाठ या श्रवण करने से व्यक्ति सर्व सिद्धियों का स्वामी होता है । इस स्तोत्र के द्वारा असौभाग्य का नाश और सुख सम्पत्ति की वृद्धि होती है । यह अकाल मृत्यु को दूर करता है, और आपत्तियों का निवारण करता है । इस स्तोत्र का नित्य प्रति पाठ करने से आद्या काली देवी बहुत जल्दी प्रसन्न होकर साधक को अपना सान्निध्य और अपना स्वरूप प्रदान करती है । शंकर भगवान इसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्तोत्र के कारण 'त्रिपुरारि' कहे जाते हैं।

इस स्तोत्र में सदाशिव ऋषि है तथा अनुष्ट छन्द है इसमें देवता स्वयं आद्या काली है। यह स्तोत्र ककार राशि से घटित काली के स्वरूप के समान है। इस स्तोत्र का पाठ पूजा काल में करना चाहिये। काली तभी प्रसन्न होती है जब गुरु से दीक्षित होकर साधक उसकी साधना करता है। बिना गुरु के काली की उपासना अनिष्ट को प्रदान करती है। साधक को काली धन, यश, पुत्र पौत्र और सुख ऐश्वर्य से परिपूर्ण कर देती हैं। इस स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य राजसभा में पूजित होता है: जुआ में विजयी होता है। हिंसक जानवरों का भय नहीं होता, सर्वत्र विजय को प्रदान करता है।

❀ ❀ ❀

कालिका शतनाम का पाठ करने के उपरान्त साधक को कालिका सहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करना चाहिए क्योंकि उपनिषद् और पुराणों में ऐसा कहा गया है। कि सहस्त्रनाम ही भगवती काली का शरीर है। इसलिये सहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ साधक को यत्न के साथ करना चाहिये। जो साधक मन लगाकर यत्न से पाठ करता है। उस पर काली माँ बड़ी जल्दी प्रसन्न होकर दर्शन देती है और साथ में इच्छित फल प्रदान करती हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालिका सहस्रनाम स्तोत्र

श्मशान कालिका भद्रकाली कपालिनी ।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी ॥१
कालिका रात्रिश्च महाकालनितम्बिनी ।
कालभैरव भार्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥२
कामदा कामिनी कन्या कमनीय स्वरूपिणी ।
कस्तूरीरस लिप्तांगी कुञ्जरेश्वर गामिनी ॥३
ककारवर्ण सर्वांगी कामिनी कामसुन्दरी ।
कामार्त्ता कामरूपा च कामधेनुः कलावती ॥४
कांता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलकामिनी ।
कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गति नाशिनी ॥५
कौमारी कलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी ।
कृशाङ्गी कुलिशांगी क्रीं क्रींकारी कमला कला ॥६
करालास्या कराली च कुलकांता पराजिता ।
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महाबला ॥७
नीला घना मेघनादा मात्रा मुद्रा मिताम्मिता ।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला ॥८
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहका ।
वज्रांगी वज्र कंकाल नृमुण्डस्रग्विणीविा ॥९
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्त विभूषणा ।
रक्तचन्दन सिक्तांगी सिंदूरारुणमस्तका ॥१०
घोररूपा घोरद्रंष्ट्रा गोरा घोरतरा शुभा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महादंष्ट्रा महामाया सुन्दरी युगदन्तुरा ॥११
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना ।
शारदेन्दु प्रसन्नास्या स्फुरत् स्मेराम्बुजेक्षणा ॥१२
अट्टहासा प्रफुल्लास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी ।
प्रफुल्ल पद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी ॥१३
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहु भाषिणी ।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी ॥१४
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महाकचा ।
प्रेतदेहाकर्णपूरा प्रेतपाणिः सुमेखला ॥१५
प्रेतासना प्रियप्रेता पुण्यदा कुलपण्डिता ।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पावनी ॥१६
पूता पवित्रा परमा परा पुण्य विभूषणा ।
पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाशिनी ॥१७
नृमुण्डहस्ता शान्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका ।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शांता पीनोन्नतस्तनी ॥१८
दिगम्बरी घोररावा सृक्कान्तारक्तवाहिनी ।
घोररावा शिवासंगा निःसगा मदनातुरा ॥१९
मत्ता प्रमत्ता मदना सुधासिन्धु निवासिनी ।
अतिमत्ता महामत्ता सर्वाकर्षण कारिणी ॥२०
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्य परायणा ।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा ॥२१
कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी ॥२२
जगज्जीववती हैमवती माया महालय ।
नाग यज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नागशायिनी ॥२३
नागकन्या देवकन्या गान्धारी किन्नरी सुरी ।
मोहरात्रि महारात्रि दारुणाभा सुरासुरी ॥२४
विद्याधरी वसुमति यक्षिणी योगिनीजरा ।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा ॥२५
श्रुतिस्मृति महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी ।
चिंताचिंता स्वधा स्वाहा निद्रा तंद्रा च पार्वती ॥२६
अपर्णा निश्चला लीला सर्वविद्या तपस्विनी ।
गंगा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा ॥२७
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टि धृतिः क्षमा ।
वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मी लक्ष्मीर्नील सरस्वती ॥२८
स्रोतस्वती स्रोतवती मातंगी विजया जया ।
नन्दीसिन्धुः सर्वमयी तारा शून्य निवासिनी ॥२९
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी ।
सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्वरूपिणी ॥३०
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी ।
रंकिणी टंकिणी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी ॥३१
पद्मा पद्मालया पद्ममुखी पद्मविभूषणा ।
शाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिरप्रिया ॥३२
भ्रान्तिर्भवानी रुद्राणी मृणानी शत्रुमर्दिनी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्स्ना चेन्द्रस्वरूपिणी ॥३३
सूर्य्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान् ।
शक्तिः सूक्तिर्मतिमती भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता ॥३४
सर्वेश्वरी सर्वमता सर्वाणी हरवल्लभा ।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भाव्या भव्या भयापहा ॥३५
कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया ।
तामिस्रा यामिनीस्था च स्थिरा धीरा तपस्विनी ॥३६
चार्वङ्गी चंचला लोलजिह्वाचारु चारित्ररूपिणी ।
त्रपा त्रपावती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती ॥३७
सात्वतीधर्मनिष्ठा च श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी ।
गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसीघृणा ॥३८
भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती ।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुः प्रियाः ॥३९
ऋक्सामाथर्वनिलया रागिणी शोभनस्वरा ।
कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेणुवीणापरायणा ॥४०
वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी ।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता ॥४१
रम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती रमा ।
शंखिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा ॥४२
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्गपाणिनी ।
पिनाक् धारिणी धूम्रा शरभी वनमालिनी ॥४३
वज्रिणी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जटिनी बिम्बिनी नीला लावण्याम्बुधिचन्द्रिका ॥४४
वलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्र माथिनी ।
महिषासुरसहन्त्री वासिनी रक्तदन्तिका ॥४५
रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्तखर्परहस्तिनी ।
रक्तप्रिया मांसरुचिरा सर्वदारक्तमानसा ॥४६
गलच्छोणित मुंडालिकण्ठमाला विभूषणा ।
शवासना चितान्तस्था माहेशी वृषवाहिनी ॥४७
वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभाविनी ।
बालिका तरुणी वृद्धमाता जरातुरा ॥४८
सुभ्रू विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही ।
स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी ॥४९
अमोघाऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगवत्यनुवादिनी ।
मन्दाकिनी मन्दहासा ज्वालामुख्यसुरान्त का ॥५०
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता ।
मदिरा मदिरोन्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी ॥५१
सुमेध्यानन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा ।
जयदा जित्वरा जेत्री जयश्रीर्जयशालिनी ॥५२
सुखदा शुभदा सत्या सभासंक्षोभकारिणी ।
शिवदूती भूतिमती विभूति भीषणानना ॥५३
कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका ।
कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपति प्रिया ॥५४
सगुणा निर्गुणा धृष्ठानिष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठदा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धनिष्ठा धनदा धन्या वसुधा स्वप्रकाशिनी ॥५५
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका ।
महाकुलीना निष्कामा सकामा कामजीवना ॥५६
कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्तकी ।
चिन्तामणि कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला ॥५७
कार्तिकी कीर्तिकाराध्या अयोध्याविषमासना ।
सुमंत्रा मंत्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी ॥५८
त्रैलोक्य जननी हृष्टा निर्मांसा मनोरूपिणी ।
तडाग निम्नजठरा शुष्कमांसास्थि मालिनी ॥५९
अवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्य पावनीश्वरी ।
व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्तिः शर्वरी भीमनादिनी ॥६०
क्षेमंकरी शंकरी च सर्वसम्मोह कारिणी ।
अर्द्ध तेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा ॥६१
अद्वैता भोगिनी पूज्या युवती सर्वमंगला ।
सर्वप्रियकरीं भोग्या धरणी पिशिताशना ॥६२
भयंकरी पापहरा निष्कलं वशंकरी ।
आशा तृष्णा चन्द्रकला निद्रा च वायुवेगिनी ॥६३
सहस्त्रसूर्यसंकाशा चन्द्रकोटि समप्रभा ।
वाह्निनी मन्डलासस्था च सर्वतत्व प्रतिष्ठता ॥६४
सर्वाचारवती सर्वदेवकन्याधिदेवता ।
दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिका ॥६५
इज्या पूज्या विभीभूर्तिः सत्कीर्तिब्रह्मरूपिणी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा कुहुः ॥६६
मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मचारिणी ।
ऋद्धिदा वृद्धिःदा वृद्धिः सर्वदा सर्वदायिनी ॥६७
आधार रूपिणी ध्येया मूलाधार निवासिनी ।
अज्ञा प्रज्ञा पूर्णमनाश्चन्द्रमुख्यनुकूलिनी ॥६८
वावदूका निम्ननाभिः सत्या संध्या दृढ़व्रता ।
आन्वीक्षिकी दंडनीति स्त्रयी त्रिदिवसुन्दरी ॥६९
ज्वलिनी ज्वालिनी शैलतनया विन्ध्यवासिनी ।
अमेया खेचरीधैर्या तुरीया विमलातुरा ॥७०
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फूलिंगिनी ।
भुक्तिः सिद्धिः सदा प्राप्तिः प्रकाम्या महिमाणिमा ॥७१
इच्छासिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वोध्वंनिवासिनी ।
लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी ॥७२
मनोहरा चित्ता दिव्या देव्या देव्युदारा मनोरमा ।
पिंगला कपिला जिह्वारसज्ञारसिकारसा ॥७३
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी नाडिका तथा ।
पाञ्चालीरुक्मिणी राधाराध्याभीमाधिराधिका ॥७४
अमृतातुलसी वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी ।
उग्रचण्डेश्वरी वीरा जननी वीर सुन्दरी ॥७५
उग्रतारा यशोदाख्या दैवकी देवमानिता ।
निरञ्जना चित्रदेवी क्रोधिनी कुलदीपिका ॥७६
कुलवागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणा द्रवा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योगेश्वरी महामारी भ्रामरी बिन्दुरूपिणी ॥७७
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चमरी प्रभा ।
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशंडी प्रकटाकृतिः ॥७८
द्राविणी गोपनी माया कामबीजेश्वरी क्रिया ।
शांभवी मेनकादेवी मूषलास्त्रा तिलोत्तमा ॥७९
अमेय विक्रमा क्रूरा सम्पत्शालात्रिलोचना ।
सुरश्री हव्यवहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरंगदा ॥८०
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणीधरा ।
त्रिखण्डा बोधिनी वश्या सकला शब्दरूपिणी ॥८१
बीजरूपा महामुद्रा योगिनी योनि रूपिणी ।
अनंगकुसुमानगमेखलानंगरूपिणी ॥८२
वज्रेश्वरी च जयिनी सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी ।
षडगयुवती योगयुक्ता ज्वालांशुमालिनी ॥८३
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुर्गरूपिणी ।
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ॥८४
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी ।
त्रिकोण निलया नित्या परमामृतरञ्जिता ॥८५
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुन्डा कुल सुन्दरी ।
त्वरिता भक्ति संसक्ता भक्तवश्या सनातनी ॥८६
भक्तानन्दमयी भक्तभाविका भक्तशंकरी ।
सर्व सौन्दर्य निलया सर्व सौभाग्य शालिनी ॥८७
सर्वसंभोगभवना सर्वसौख्य निरूपणी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमारीपूजनरता कुमारीव्रत चारिणी ॥८८
कुमारीभक्ति सुखिनी कुमारीरूपधारिणी ।
कुमारीपूजकप्रीता कुमारी प्रीतिदा प्रिया ।
कुमारी सेवकासंगा कुमारी सेवकालया ॥८९
आनन्दभैरवी बाला भैरवी बटुक भैरवी ।
श्मशान भैरवी काल भैरवी पुरभैरवी ॥९०
महाभैरवी पत्नी च परमानन्दभैरवी ।
सुधानन्दभैरवी च उन्मादानन्द भैरवी ॥९१
मुक्तानन्द भैरवी च तथा तरुण भैरवी ।
ज्ञानविन्द भैरवी च अमृतानन्द भैरवी ॥९२
महाभयंकरी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी ।
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी ॥९३
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पंचमी पुरवासिनी ।
महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ॥९४
महांकुश स्वरूपा च महा चक्रेश्वरी तथा ।
नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ॥९५
राजराजेश्वरी धीरा महात्रिपुर सुन्दरी ।
सिन्दूर पूर रुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥९६
सर्वाङ्ग सुन्दरी रक्ता वस्त्रोत्तरीयिणी ।
जवा यावक सिन्दूर रक्तचन्दनधारिणी ॥९७
जावा यावक सिन्दूर रक्तचन्दनरूपधृक् ।
चामरी कुटिलभ्रू च निर्मला श्याम केशिनी ॥९८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बज्रमोक्तिक रत्नाढ्य किरीट मुकुटोज्वला ।
रत्नकुण्डल संसक्त स्फुरद्गण्ड मनोरमा ।।९९।।

कुंजेश्वर कुम्भोत्थ मुक्ता रंजित नासिका ।
मुक्ता विद्रुम माणिक्य हाराढय स्तनमण्डला ।।१००।।

सूर्यकान्तेदु कान्ताढय स्पर्शाश्मकंठभूषणा ।
बीजपूरस्फुरद्बीज दन्तपंक्तिरनुत्तमा ।।१०१।।

कामकोदण्डकाभुग्नभ्रूकटाक्ष प्रवर्षिणी ।
मातङ्गकुम्भवक्षोजा लसत्कोकनदेक्षणा ।।१०२।।

मनोज्ञ शुष्कली कर्णा हंसीगति दिडम्बिनी ।
पद्मरागांगद ज्योतिदाश्चतुष्क प्रकाशिनी ।।१०३।।

नानामणि परिस्फूर्जच्छद्र कांचन-कंकना ।
नागेन्द्रदत निर्माणवलयांकित पाणिनी ।।१०४।।

अंगुरीयक चित्रांगी विचित्र क्षुद्रघण्टिका ।
पट्टाम्बर परीधाना कल मंजीर शिंजिनी ।।१०५।।

कर्पुरागरुकस्तूरी कुंकुम द्रव लेपिता ।
विचित्र रत्न पृथिवी कल्प शाखि तलस्थिता ।।१०६।।
रत्नद्वीप स्फुरद्रवत सिंहासन विलासिनी ।
षटचक्र भेदनकरी परमानन्दरूपिणी ।।१०७।।

सहस्रदलपद्मन्तश्चन्द्रमण्डलवर्तिनी ।
ब्रह्मरूपशिव क्रीड़नाना सुखविलासिनी ।।१०८।।

हर विष्णु विरिंचीन्द्र ग्रह नायक सेविता ।
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिववादिनी ।।१०९।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मातंगिनी श्रीमती च तथैवानन्द मेखला ।
डाकिनी योगिनी चैव तथोप योगिनीमता ॥११०॥

माहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी ।
अलम्बुषा वेगवती क्रोधरूपासुमेखला ॥१११॥

गान्धारी हस्तिजिह्वा च इडा चैव शुभंकरी ।
पिंगला ब्रह्मदूती च सुषुम्ना चैव गंधिनी ॥११२॥

आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद् योनिरयोनिजा
भगरूपा भगस्धात्री भगिनी भगरूपिणी ॥११३॥

मगात्मिका भगाधाररूपिणी भगमालिनी ।
लिंगाख्या चैव लिंगेशी त्रिपुराभैरवी तथा ॥११४॥

लिंगगीतिः सुगीतिश्च लिंगस्था लिंगरुपधृक् ।
लिंगमाना लिंगभवा लिंगलिंगा च पार्वती ॥११५॥

भगती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा ।
गृध्ररुपा शिवरुपा चक्रिणी चक्ररुपधृक् ॥११६॥

लिंगाभिधायिनी लिंगप्रिया लिंगनिवासिनी ।
लिंगस्थालिंगनी लिंगरुपिणी लिंगसुन्दरी ॥११७॥

लिंगगीतिर्महाप्रीता भगगीतिर्महासुखा ।
लिंगनामसदानन्दा भगनाम सदागतिः ॥११८॥

लिंगमाला कण्ठभूषा भगमाला विभूषणा ।
भगलिंगामृतप्रीता भगलिंगस्वरुपिणी ॥११९॥

भगलिंगस्य रुपा च भगलिंग सुखावहा ।
स्वयम्भू कुसुमप्रीता स्वयम्भू कुसुमार्चिता ॥१२०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वयम्भू कुसुमप्राणा स्वयम्भू पुष्पतर्पिता ।
स्वयम्भू पुष्पघटिता स्वम्भू पुष्पधारिणी ॥१२१॥

स्वयम्भू पुष्पतिलका स्वयम्भू पुष्प चर्चिता ।
स्वयम्भू पुष्पनिरता स्वयम्भू कुसुमग्रहा ॥१२२॥

स्वयम्भू पुष्पसंज्ञांशा स्वयम्भू कुसुमात्मिका ।
स्वयम्भू पुष्पनिचिता स्वयम्भू कुसुमप्रिया ॥१२३

स्वयम्भू कुसुमादान लालसोन्मत्तमानसा ।
स्वयम्भू कुसुमानन्वलहरी स्निग्धदेहिनी ॥१२४॥

स्वयम्भू कुसुमाधार स्वयम्भू कुसुमाकुला ।
स्वयम्भू पुष्पनिलया स्वयम्भू पुष्पं वासिनी ॥१२५॥

स्वयम्भू कुसुमस्निग्धा स्वयम्भू कुसुमात्मिका ।
स्वयम्भू पुष्पकरिणी स्वयम्भू पुष्पवाणिका ॥१२६॥

स्वयम्भू कुसुमध्याना स्वयम्भू कुसुमप्रभा ।
स्वयम्भ कुसुमज्ञाना स्वयम्भू पुष्पभागिनी ॥१२७॥

स्वयम्भू कुसुमोल्लासा स्वयम्भू पुष्पवर्षिणी ।
स्वयम्भू कुसुमोत्साहा स्वयम्भू पुष्परूपिणी ॥१२८॥

स्वयम्भू कुसुमोन्मादा स्वयम्भू पुष्पसुन्दरी ।
स्वयम्भू कुसुमाराध्या स्वम्भू कुसुमोद्भवा ॥१२९॥

स्वयम्भू कुसुमख्याग्रा स्वगम्भू पुष्पपूर्णिता ।
स्वयम्भू पूजक प्रज्ञा स्वयम्भू होतृ मातृका ॥१३०॥

स्वयम्भू दातृरक्षित्री स्वयभू रक्ततारिका ।
स्वयम्भू पूजकग्रस्ता स्वम्भू पूजकप्रिया ॥१३१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वयम्भू बन्वकाधारा स्वयम्भू निन्दकान्तका ।
स्वयम्भू प्रदसर्वस्वा स्वयम्भू प्रदपुत्रिणी ॥१३२॥
स्वयम्भूप्रद सस्मेरा स्वयम्भू प्रदशरीरिणी ।
सर्वकालोद्भव प्रीता सर्वकालोद्भवात्मिका ॥१३३॥

सर्वकालोद्भवोद्भावा सर्वकालोद्भवा ।
कुण्डपुष्प सदा प्रीति गोलि पुष्पसदारतिः ॥१३४॥

कुण्डगोलोद्भव प्राणा कुण्डगोलोद्भवात्मिका ।
स्वयम्भू वाशिवा धात्री पावनी लोकपावनी ॥१३५॥

कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा शुक्रसुन्दरी ।
अश्विनी कृत्तिका पुष्पा तेजस्का चन्द्रमण्डला ॥१३६॥

सूक्ष्मा सूक्ष्मा बलाका च वरदा भयनाशिनी ।
वरदाभयदा चैव मुक्तिर्बन्ध विनाशिनी ॥१३७॥

कामुका कामदा कान्ता कामाख्य कलसुन्दरी ।
दुखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थं प्रकाशिनी ॥१३८॥

दुष्टादुष्टमतिश्चैव सर्विकार्य विनाशिनी ।
शुक्राधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धु निवासिनी ॥१३९॥

शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूजासदारतिः ।
शुक्रपूज्या शुक्रहोम सन्तुष्टा शुक्रवत्सला ॥१४०॥
शुक्रमूर्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजक पुत्रिणी ।
शुक्रस्था शुक्रणी शुक्र संस्पृहा शुक्रसुन्दरी ॥१४१॥
शुक्रस्नाता शुक्रकरीशुक्र सेव्यति शुक्रिणी ।
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रबृष्टि विधायिनी ॥१४२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुक्राभिधेया शुक्रार्ता शुक्रवन्दक वन्दिता ।
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दभिधायिका ॥१४३॥
शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णा शुक्र मनोरमा ।
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्र निन्दक नाशिनी ॥१४४॥
शुक्रात्मिका शुक्रसम्पदतत् शुक्राकर्षणकारिणी ।
शारदा साधक प्राणा साधका सक्तमानसा ॥१४५॥
साधकोत्तम सर्वस्वा साधकाभक्तरक्तपा ।
साधकानन्द सन्तोषा साधकानन्द कारिणी ॥१४६॥
आत्म विद्या ब्रह्म विद्या परब्रह्मस्वरूपणी ।
त्रित्रकूटस्था पंचकूटा सर्वकूट शरीरिणी ॥१४७॥
सर्ववर्णमयी वर्ण जप माला विधायिनी ॥१४८॥

फल श्रुति

इति श्री कालिका नाम सहस्रं शिवभाषितम् ।
गुह्याद्गुह्यतरं साक्षात् महापातक नाशनम् ॥१४९॥
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
लभते गाणपत्यं स यः पठेत् साधकोत्तमः ॥१५०॥
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदथ ।
सर्वपाप विनिर्मुक्ता: स याति कालिकापुरम् ॥१५१॥
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिन्मानवः स्मरेत् ।
दुर्गं दुर्गशतं तीर्त्वा स याति परमां गतिम् ॥१५२॥
बंध्या वा काकबंध्या वा मृतवत्सा च यांगना ।
श्रुत्वा स्तोत्रमिदं पूजान् लभते चिरजीविनः ॥१५३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम् ।
देवीपाद प्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम् ॥१५४॥

इति श्रीकालिकाकुल सर्वस्वे कालिका सहस्रनाम स्तोत्रं समाप्तम् ।

—*—

अथ ककारादि कालि सहस्रनाम

ध्यानम्

कालिका सहस्रनाम स्तोत्र के उपरान्त साधक को ककारादि काली सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करना चाहिये । क्योंकि ककारादि काली सहस्रनाम दक्षिणकालिका पद्धति के क्रमानुसार साधक को करना परमावश्यक माना गया है ।

शवारूढां महाभीमां घोर दंष्ट्रां हसन्मुखीम्,
चतुर्भुजां खगं मुण्डवराभयकरैर्युताम् ।
मुण्डमाला धरां देवीं जिह्वाललनभीषणाम्,
एवं संचिन्तयेत्काली श्मशानालय वासिनीम् ॥१॥

ॐ क्रीं काली कराली च कल्याणी कमला कला ।
कलाधारा कमलिनी ककारा करुणा कविः ॥२॥

ककार कोटि गुणिता ककार कोटि भूषणाः ।
ककार वर्ण सर्वांगी कला कोटि प्रभूषिता ॥३॥

ककारवर्ण हृदया ककार मनु मंडिता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ककार वर्ण निलया काकशब्द परायण ।।४

ककार वर्ण मुकुटा ककार वर्ण भूषण ।
ककार वर्ण रूपा च कक्शब्द परायण ।।५

कक्वीराकालरता कमलाकरपूजिता ।
कमलाकर नाथा च कमलाकररूप धृक् ।।६

कमलाकर सिद्धिस्था कमलाकर पावदा ।
कमलाकर मध्यस्था कमलाकर तोषिता ।।७।।

कथंकार पदालापा कथंकार परायणा ।
कथंकार परान्तः स्था कथंकार पदार्थ भूः ।।८।।

कमलाक्षी कमलजा कमलाक्षः प्रपूजिता ।
कमलाक्षवरो द्युक्ता ककाराकर्बुराक्षरा ।।६।।

करताराकरच्छिन्ना करश्यामाकरार्णवा ।
कर पूज्याकररता करदाकर पूजिता ।।१०।।

करतोयाकरामर्षा कर्म नाशाकरप्रिया ।
करप्राणाकरकजाकर काकरकान्तरा ।।११।।

करकाचल रूपा च करकाचल शोभिनी ।
करकाचलपुत्री च करकाचल तोषिता ।।१२।।

करकाचल गेहस्था करकाचल रक्षिणी ।
करकाचल सम्मान्या करकाचल कारिणी ।।१३।।

करकाचल वर्षाढ्या करकाचल रंजिता ।
करकाचल कान्तारा करकाचल मालिनी ।।१४।।

करका चल भोज्या च करका चल रूपिणी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करा मलक संस्था च करामलक सिद्धिदा ।।१५।।
करामलक संपूज्या करामलक तारिणी ।
करामलक काली च करामलक रोचिनी ।।१६।।
करामलक माता च करामलक सेविनी ।
करामलकवत् ध्येया करामलक दायिनी ।।१७।।
कंजनेत्रा कंजगतिः कंजस्था कंजधारिणी ।
कंजमालाप्रियकरी कंजरूपा च कंजजा ।।१८।।
कंज जातिः कंज गतिः कंज होम परायणा ।
कंजमंडल मध्यस्था कंजाभरण भूषिता ।।१९।।
कंजसन्मान निरता कंजोत्पत्ति परायण ।
कंजराशिः समाकारा कंजारण्य निवासिनी ।।२०।।
करंज वृक्ष मध्यस्था करंजवृक्ष वासिनी ।
करंज भलभूषढ़्या करंजारण्य वासिनी ।।२१।।
करंजमाला भरणा करवाल परायणा ।
करवाल प्रहृष्टात्मा करवालप्रियागतिः ।।२२।।
करवालप्रिया कन्था करवाल विहारिणी ।
करवालमयी कर्पाकरवाल प्रियंकरी ।।२३।।
कबन्धमाला भरणा कबन्ध राशिमध्यमा ।
कवन्धकूटसंस्थाना कबन्धानन्त भूषणा ।।२४।।
कबन्धनाद संतुष्टा कबन्धासन धारिणी ।
कबन्धगृह मध्यस्था कबन्धवन वासिनी ।।२५।।
कबन्थकांची करणी कबन्धराशिभूषणा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कबन्धमाला जयदा कबन्ध देह वासिनी ।।२६
कबन्धा सनमान्य च कपाल माल्य धारिणी ।
कपालमाला मध्यस्था कपाल व्रत तोषिता ।।२७
कपाल दीप संतुष्टा कपाल दीप रूपिणी ।
कपालदीपवरदाकपालकज्जलस्थिता ।।२८
कपालमालाजयदा कपालजय तोषिणी ।
कपालसिद्धि संहृष्टा कपाल भोजनोद्यता ।।२९
कपालव्रत संस्थाना कपालकमलालया ।
कवित्वामृतसाराच कवित्वामृतसागरा ।।३०
कवित्व सिद्धि संहृष्टा कवित्वादानकरिणी ।
कवि पूज्या कविगतिः कविरूपाकविप्रिया ।।३१
कवि ब्रह्मानन्दरूपा कवित्वव्रत तोषिता ।
कवि मानस संस्थाना कवि वाञ्छाप्रपूरिणी ।।३२
कवि कंठस्थिता कं कं कं कं कवि पूर्तिदा ।
कज्जला कज्जला दान मानसा कज्जलप्रिया ।।३३
कपालकज्जलसमा कज्जलेशप्रपूजिता ।
कज्जलार्णवमध्यस्था कज्जलानंद रूपिणी ।।३४
कज्जलप्रिय संतुष्टाकज्जलप्रियतोषिणी ।
कपालमालाभरणा कपालकरभूषणा ।।३५
कपालकरभूषाढ्या कपालचक्रमंडिता ।
कपालकोटि निलया कपालदुर्गकारिणी ।।३६
कपालगिरि संस्थाना कपालाचवासिनी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कापालपात्रसंतुष्टा कपालार्घ्य परायणा ।।३७
कपालार्घ्यप्रियप्राणा कपालार्घ्यवरप्रदा ।
कपालचक्ररूपा च कपालरूपमात्रगा ।।३८

कदलीकदली रूपा कदलीवन वासिनी ।
कदलीपुष्प संप्रीता कदलीफलमानसा ।।३९

कदलीहोम संतुष्टा कदलीदर्शनोद्यता ।
कदली गर्भमध्यस्था कदलीवनसुन्दरी ।।४०

कदंबपुष्पनिलया कदम्बवनमध्यगा ।
कदंबकुसुमामोदा कदंबबनतोषिणी ।।४१

कदंबपुष्पसंपूज्या कदंबपुष्पहोमदा ।
कदंब पुष्पमध्यस्था कदंब फल भोजिनी ।।४२

कदंबकाननान्तस्था कदंबाचल वासिनी ।
कक्षपा कक्षपाराध्या कक्षपासन सस्थिता ।।४३
कर्णपूरा कर्णनासा कर्णाढ्या कालभैरवि ।
कल प्रीता कलहदा कलहा कलहातुर ।।४४
कर्णयक्षी कर्णवार्ता कथिनी कर्ण सुन्दरी ।
कर्ण पिशाचिनी कर्ण मंजरी कपिकच्छदा ।।४५
कविकक्षस्वरूपाढ्या कविकक्षस्वरूपिणी ।
कस्तूरी मृग संस्थानाकस्तूरी मृग मध्यगा ।।४६
कस्तूरी मृग सन्तोषा कस्तूरी मृग रूपिणी ।
कस्तूरी रस नीलांगीकस्तूरी गन्धतोषिता ।।४७
कस्तूरी पूजक प्राणा कस्तूरी पूजक प्रिया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कस्तूरी प्रेम संतुष्टा कस्तूरी प्राण धारिणी ।।४८

कस्तूरी पूजकानंदा कस्तूरी गंधरूपिणी ।
कस्तूरी मालिकारूपा कस्तूरी भोजनप्रिया ।।४९

कस्तूरी तिलकानंदा कस्तूरी तिलकप्रिया ।
कस्तूरी होम संतुष्टा कस्तूरी तर्पणोद्यता ।।५०

कस्तूरी मार्जनोद्युक्ता कस्तूरी चक्रपूजिता ।
कस्तूरीष्प संपूज्या कस्तूरी चर्वणोद्यता ।।५१

कस्तूरी गर्भमध्यस्था कस्तूरी वस्त्रधारिणी ।
कस्तूरिका मोदरता कस्तूरी वन वासिनी ।।५२

कस्तूरी वन संरक्षा कस्तूरी प्रेम धारिणी ।
कस्तूरी शक्ति निलया कस्तूरी शक्ति कुंडगा ।।५३

कस्तूरी कुंड संस्नाता कस्तूरी कुंडमज्जना ।
कस्तूरी जीव संतुष्टा कस्तूरी जीव धारिणी ।।५४

कस्तूरी परमामोदा कस्तूरी जीवन क्षमा ।
कस्तूरी जातिभावस्था कस्तूरी गंध चुंबना ।।५५

कस्तूरी गंधसंशोभा विराजित कपाल भूः ।
कस्तूरी मदनान्तस्था कस्तूरी मद हर्षदा ।।५६

कस्तूरी कवितानाढ़्या कस्तूरी गृह मध्यगा ।
कस्तूरी स्पर्शक प्राणा कस्तूनी निंद कांतका ।।५७

कस्तूर्यामोदरसिका कस्तूरीक्रीडनोद्यता ।
कस्तूरीदाननिरता कस्तूरी वरदायिनी ।।५८

कस्तूरीस्थापना सक्ता कस्तूरी स्थान रंजिनी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कस्तूरी बन्दकाराध्या कस्तूरीस्थानवासिमी ।।५६
कस्तूरी कुशल प्रश्ना कस्तूरो स्तुतिवन्दिता ।
कहरुपा कहाढ्या च कहानन्दा कहात्मभूः ।।६०
कहपूज्या कहेत्याख्या कहहेया कहात्मिका ।
कहमाला कंठभूषा कहमन्त्र जपोद्यता ।।६१
कहनाम स्मृतिपरा कहनामपरायणा ।
कहपरायणरता कहदेवी कहेश्वरी ।।६२
कहहेतुः कहानन्दा कहनाद परायणा ।
कहमाता कहान्तस्था कह मन्त्रा कहेश्वरी ।।६३
कहगेया हाराध्या कह ध्यानपरायणा ।
कहतंत्राकहकहा कहचर्या परायणा ।।६४
कहाचारा कहगतिः कहतांडव कारिणी ।
कहारण्या कहगतिः कहशक्ति परायणा ।।६५
कहराज्यनता कर्म साक्षिणीकर्भ सुन्दरी ।
कर्म विद्या कर्म गतिः कर्मतंत्र परायणा ।।६६
कर्म मात्रा कर्म गात्रा कर्म धर्म परायणा ।
कर्म रेखा नाश कत्री कर्म रेखा विनोदिनी ।।६७
कर्म रेखा मोहकरी कर्म कीर्ति परायणा ।
कर्म विद्या कर्म सारा कर्मधारा च कर्म भूः ।।६८
कर्मकारी कर्महारी कर्म कौतुक सुन्दरी ।
कर्मकाली कर्मतारा कर्मछिन्ना च कर्मदा ।।६९
कर्म चाण्डालिनी कर्म वेदमाता च कर्म भूः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्म काण्डरतानन्ता कर्मकाण्डानु मानिता ॥७०

कर्मकाण्डपरीणाहा कमठी कमठाकृतिः ।
कमठाराध्यहृदया कमठा कण्डसुन्दरी ॥७१

कमठासन संसेव्या कमठी कर्म तत्परा ।
करुणा करकान्ता च करुणाकर वन्दिता ॥७२

कठोराकरकान्ता कठोरकुचधारिणी ।
कपर्दिनी कपर्हिनी कठिनी कंकभूषणा ॥७३

करभोरुः कठिनदा करभा करभालया ।
कलभाषामयी कल्पाकल्पना कल्पदायिनी ॥७४

कमलस्था कलामाला कमलास्या क्वणत्प्रभा ।
ककुद्मिनी कष्टवत्ती करणीय कथार्चिताः ॥७५

कचार्चिता कचतनुः कच सुन्दर धारिणी ।
कठोर कुच संलग्ना कटिसूत्र विराजिता ॥७६

कर्णभक्षप्रिया कन्दा कथाकन्दगति कलिः ।
कलिनी कलिदूती च कविनायक पूजिता ॥७७

कर्णकक्षानियंत्री च कचित्कवि वरार्चिता ।
कर्त्री च कर्तृकाभूषा करिणी कर्ण शत्रूपा ॥७८

करणेशी करणपा कलवाचा कला निधिः ।
कलना कलनाकारा कलनाकारिकाकरा ॥७९

कलगेया कर्क राशि कर्कराशि प्रपूजिता ।
कन्या राशिः कन्यका च कन्यका प्रियभाषिणी ॥८०

कन्यादान संतुष्टा कन्यका दान तोषिणी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कन्यादान करानन्दा कन्यादान ग्रहेष्टदा ॥८१॥

कर्षणाकक्ष दहना कामिता कमलासन ।
करमालानन्दकर्त्री करमाला प्रपोषिता ॥८२॥

करमालाशयानन्दा करमाला समागमा ।
करमालासिद्धिदात्री करमाला करप्रिया ॥८३॥

करप्रिया कररता करदान परायणा ।
कलानन्दा कलिगतिः कलिपूज्या कलिप्रसूः ॥८४

कलनाद निनादस्था कलनाद वरप्रदा ।
कलनाद समाजस्था कहोला च कहोलदा ॥८५॥

कहोलगेहमध्यस्था कहोलवरदायिनी ।
कहोल कविताधार कहोलऋषिमानिता ॥८६॥
कहोलमानसाराध्या कहोलवाक्यकारिणी ।
कतृरूपा कतृमयी कतृमाता च कर्त्तरी ॥८७॥
कनीया कनकाराध्या कनीनकमयी तथा ।
कनीयानन्द निलया कनकानन्द तोषिता ॥८८॥
कनीनकराकाष्ठा कथार्णवकरी करी ।
करिगम्या करिगतिः करिध्वज परायणा ॥८९॥
करिनाथ प्रिया कंठा कथानक प्रतोषिता ।
कमनीया कमनका कमनीय विभूषणा ॥९०॥
कमनीय समाजस्था कमनीय व्रतप्रिया ।
कमनीय गुणाराध्या कपिलाकपिलेश्वरी ॥९१॥
कपिला राध्य हृदया कपिला प्रिय वादिनी ।
कह चक्रमन्त्र वर्णा कह चक्रप्रसूनका ॥९२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क ए ई ल ह्रीं स्वरूपा च क ए ई ल ह्रीं वरप्रदा ।
क ए ई ल ह्रीं सिद्धि दात्री क ए ई ल ह्रीं स्वरूपिणी ॥९३॥

क ए ई ल् ह्रीं मंत्रवर्णा क ए ई ल ह्रीं प्रसूकला ।
क वर्गा च कपाटस्था कपाटोद्‌घाटन क्षमा ॥९४॥

कंकाकाली च कपाली च कंकालप्रियभाषिणी ।
कंकाल भैरवाराध्या कंकालमानससंस्थिता ॥९५॥

कंकाल मोहनरताकंकालमोह दायिनी ।
कलुषघ्नी कलूषहा कलुषा तिविनाशिनी ॥९६॥

कलिपुष्पा कलादाना कशिपुः कश्यपार्चिता ।
कश्यपा कश्यपाराध्याकलिपूर्ण कलेवरा ॥९७॥

कलेवरकरी कांची कवर्गा च करालका ।
कराल भैरवाराध्या कराल भैरवेश्वरी ॥९८॥

कराला कलनाधारा कपर्दी च वरप्रदा ।
कपर्दीश प्रेमलता कपर्दी मालिकायुत्ता ॥९९॥

कपर्दिजपमालाढ्या करवीर प्रसूनदा ।
करवीर प्रियप्राणा करवीर प्रपूजिता ॥१००॥

कर्णिकार समाकारा कर्णिकार प्रपूजिता ।
करिषाग्निस्थिता कर्षमात्र सुवर्णदा ॥१०१॥

कलशा कलशाराध्या कषाया कषाया करिगानदा ।
कपिला कल कंठी च कलिकल्प लतामता ॥१०२॥
कल्पलता कल्पमाता कल्पकारी च कल्प भूः ।
कर्पूरामोदरुचिरा कर्पूरामोदधारिणी ॥१०३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्पूर माला भरणा कर्पूरावास पूर्तिदा ।
कर्पूरमाला जयदा कर्पूरार्णवमध्यगा ।।१०४

कर्पूर तर्पणरताकटकाम्बरधारिणी ।
कपटेश्वर सम्पूज्या कपटेश्वर रूपिणी ।।१०५

कटु: कपिध्वजाराध्या कलाप पुष्पधारिणी ।
कलाप पुष्प रुचिरा कलाप पुष्प प्रपूजिता ।।१०६
क्रकचाक्रकचाराध्या कथं ब्रूमा करालता ।
कथंकार विनिर्मुक्ताकालीकालक्रियाक्रतुः ।।१०७

कलनी कामिनी पूज्या कामिनी पुष्पधारिणी ।
कामिनीपुष्प निलया कामिनी पुष्पपूर्णिमा ।।१०८

कामिनी पुष्पपूजार्हा कामिनी पुष्प भूषणा ।
कामिनी पुष्प तिलका कामिनी कुण्ड चुम्बना ।।१०९

कामिनी योग सन्तुष्टा कामिनी योग भोगदा ।
कामिनी कुण्ड संमाग्ना कामिनी कुंड मध्यग ।।११०

कामिनी मानसा राध्या कामिनी मान तोषिता ।
कामिनीमाना संचारा कालिकाकाल कालिका ।।१११

कामा च कामदेवी च कामेशी काम संभवा ।
कामभावा कामरता कामार्त्ता काममंडिता ।।११२
काममंजीर रणिता कामदेवप्रियान्तरा: ।
कामकाली कामकाला कालिका कमलार्चिता ।।११३
कादिका कमला काली कालानल समप्रभा ।
कल्पान्त दहना कान्ता कान्तार प्रिय वासिनी ।।११४

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालपूज्या कालरता कालमाता च कालिनी ।
कालवीराकालघोराकालसिद्धा च कालदा ॥११५
कालांञ्जन समाकारा कालंजरनिवासिनी ।
काल ऋद्धिः काल वृद्धि कारागृह विमोचिनी ॥११६
कादि विद्या कादिमाता कादिस्था कादि सुन्दरी ।
काशी कांची च कांशीशा काशीशवरदायिनी ॥११७
क्रीं बीजा चैव क्रां बीजा हृदयाय नमः स्मृता ।
काम्याकाम्य गतिः काम्य सिद्धिदात्रीचकामभृत् ॥११८
कामाख्या कामरूपा च कामचाप विमोचिनी ।
कामदेव कला रामा कामदेवकलालया ॥११९
कालरात्रिः कामदात्री कान्तारा चकवासिनी ।
कालरूपाकालगतिः कालयोग परायण ॥१२०
काम संमर्दनरत्ता कामगेहविकाशनी ।
कामभैरवभार्या च काल भैरवकामिनी ॥१२१
कालभैरव योगस्था कालभैरव योगदा ।
कामधेनुः कामदोग्धी काममाता च कान्तिदा ॥१२२
कामुका कामुका राध्या कामुकानन्द बर्धिनी ।
कार्पवीर्या कार्तिकेया कार्तिकेय प्रपूजिता ॥१२३
कार्याकारणदाकार्य कारिणीकारणान्तरा ।
कान्ति गम्या कान्तिमय कात्यायनी चका ॥१२४
काम सारा च काश्मीरा काश्मीरा चारतत्परा ।
कामरूपा चाररता कामरूपप्रियवदा ॥१२५

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामरूपा चारसिद्धिः कामरूपमनोमयी ।
कार्तिकी कार्तिकाराध्याकांचनारप्रसून भूः ॥१२६
कांचनार प्रसूनाभा कांचनार प्रपूजिता ।
कांचरूपा कांचभूमिः कांस्य पात्रप्रयोजिनी ॥१२७
कांस्यध्वनिमयी काम सुन्दरी काम चुम्बना ।
कांस पुष्प प्रतीकाशा कामद्रुम समागमा ॥१२८
काम पुष्पा कामभूमिः काम पूज्या च कामदा ।
कामदेहा कामगेहा कामबीजपरायणा ॥१२९
कामध्वज समारूढ़ा कामध्वज समास्थिता ।
काश्यपी काश्यपाराध्या काश्यपानन्द दायिनी ॥१३०
कालिन्दी जलसंकाशा कालिन्दी जलपूजिता ।
कादेवपूजा निरत्ता कामदेव परमार्थिदा ॥१३१
कार्मणा कर्मणाकारा कामकार्मण कारिणी ।
कार्मण त्रोटनकरी, काकिनी कारणाह्वया ॥१३२
काव्यामृता च कालिंगा कालिंज मर्दनोद्धता ।
काला गुरू विभूषाढ्या कालागुरु विभूषिता ॥१३३
कालाला सुगन्धा च काला गुरु प्रतर्पणा ।
कावेरी नीर संप्रीता काबेरी नीरवासिनी ॥१३४
कालचन्द्र प्रभाकारा काल चक्र निबासिनी ।
कानना काननाधारा कारुः कारुणि कामिनी ॥१३५
काम्पिल्य वासिनी काष्ठा काम पत्नी च काम भूः ।
कादम्बीरा पानरता तथा कादम्बरी कला ॥१३६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामबन्ध्या च कामेशी कामराज प्रपूजिता ।
कामराजेश्वरी विद्या कामकौतुक सुन्दरी ॥१३७
कांबोजजाकाञ्छिनदा कांस्य कांचन कारिणी ।
काननाद्रि समाकारा कांचनाद्रि प्रदा नदा ॥१३८
कामकीर्तिः कामकेशी कारिका कान्तराश्रया ।
कामभेदी च कामार्तिः नाशिनी कामभूमिका ॥१३९
काल निर्णाशिनी काव्य वनिता काम रूपिणी ।
कायस्था काम संदीप्तिः काव्यदा काल सुन्दरी ॥१४०
कामेशी कारण वरा कामेशी पूजनोद्यता ।
कांचीनूपुरभूषाढ्या कुंकमा भरणान्विता ॥१४१
कालचक्रा कालगतिः कालचन्द्र मनोभुवा ।
कुंदमध्या कुंद पुष्पा कुंद पुष्पप्रिया कुजा ॥१४२
कुजमाता कुजाराध्या कुठार वरधारिणी ।
कुंजरस्था कुशरत्ता कुशेशय विलोचना ॥१४३
कुनटी कुररी कुद्रा कुरंगी कुटजाश्रया ।
कुंभीनस विभूषा च कुंभीनस बधोद्यता ॥१४४
कुंभकर्ण मनोल्लासाकुल चूडामणिः कला ।
कुलाल गृह कन्या च कुलचूडामणिः प्रिया ॥१४५
कुलपूज्या कुलाराध्या कुल पूजा परायणा ।
कुलभूषा तथा कक्षिः कुररी गण सेविता ॥१४६
कुलपुष्पा कुलरता कुल परायणा ।
कुलवस्या कुलाराध्या कुल कुन्ड समप्रभा ॥१४७

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुल कुंड समोल्लासा कुंड पुष्पपरायणा ।
कुंड पुष्प प्रसन्नास्या कुंड गोलोद्भवात्मिका ॥१४८
कुंड गोलद्भवाधरा कुंड गोल मयी कुहुः ।
कुंड गोलप्रिया प्राणा कुंड गोल प्रपूजिता ॥१४९
कुंड गोलमनोल्लासा कुंड गोल बलप्रदा ।
कुंड देवरता क्रुद्धा कुलसिद्धि करापरा ॥१५०
कुंडसिद्धिः कुंड ऋद्धिः कुमारीपूजनोद्यता ।
कुलकुंड समाकारा कुल कुंड समान भूः ॥१५१
कुमारीपूजक प्राणा कुमारी पूजकालया ।
कुमारी काम संतुष्टा कुमारी पूजनोत्सुका ॥१५२
कुमारी व्रत संतुष्टा कुमारी रूपधारिणी ।
कुमारी भोजनप्रीता कुमारी च कुमारदा ॥१५३
कुमारी माता कुलदा कुलयोनिः कुलेश्वरी ।
कुललिंगा कुलानन्दा कुलरम्या कुमर्कधृक् ॥१५४
कुन्ती च कुलकान्ता च कुलमार्गपरायणा ।
कुल्ला च कुरुकुल्ला च कुल्लुका कुलकामदा ॥१५५
कुलिशाङ्गी कुब्जिका च कुब्जिकानन्दवर्धिनी ।
कुलीना कुंजर गतिः कुंजरेश्वर गामिनी ॥१५६
कुलपाली कुलवत्ती तथैव कुलदीपिका ।
कुलयोगेश्वरी कुडा कुकुमारुणविग्रहाम् ॥१५७
कुंकुमानन्द सन्तोषा कुंकुमार्णव वासिनी ।
कुसुमाकुसुमप्रीता कुलभूः कुलसुन्दरी ॥१५८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद्वती कुमुदिनी कुशला कुलटालया ।
कुलटालयमध्यस्था कुलटा संगतोषिता ॥१५९
कुलटाभवनोद्युक्ता कुशावर्ता कुलार्णवा ।
कुलार्णवाचाररता कुण्डली कुण्डला कृतिः ॥१६०
कुशलाकृति रूपा च कूर्चबीज धरा चकः ।
कुं कुं कुं कुं शब्दरता क्रुं क्रुं क्रुं क्रुं परायण ॥१६१
कुमती च कुलश्रेष्ठा कुल श्रेष्ठाकुलचक्र परायण ।
कूटस्था कुटदृष्टिश्च कुन्तला कुन्तलाकृतिः ॥१६२
कुं कुं कुं कुं शब्द निलयाकुक्कुरालय वासिनी ।
कुक्कुरा संग संयुक्ता कुक्कुरानन्त विग्रहा ॥१६३
कूर्चा रंभा कूर्चबीजा कूर्च जाप परायण ।
कुच स्पर्शन संतुष्टा कुचालिंगनहर्षदा ॥१६४
कुगतिघ्नी कुबेरार्च्चा कुचभूः कुलसुन्दरी ।
कुगायना कुचधरा कुमाता कुन्द दन्तिनी ॥१६५
कुगेया कुहराभासा कुगेया कुघ्नदारिका ।
कीर्तिःकिरातिनी क्लिन्नाकिन्नेरीकिन्नरीप्रिया ॥१६६
क्रींकारा क्रीं जपासक्ता क्रीं हूँ स्त्रींमंत्र रुपिणी ।
किर्मीरित्त दृशपांगीकिशोरी च किरीटिनी ॥१६७
कीटभाषा कीटयोनिः कीटमाता च कीटदा ।
किंशुका कीरभाषा च क्रियासारा क्रियावती ॥१६८
कीं कीं शब्दपरा क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं मंत्र रुपिणी ।
कांकींकूं कैं स्वरुपाचकः फट् स्वाहा स्वरुपिणी ॥१६९

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केतकीभूषणानन्दकेतकी भरणान्विता ।
कैकदा केशनी केशी केशी सूदन तत्परा ॥१७०
कोटयनन्तसंत्र युता केरूपा केरलाश्रया ।
केरलाचार निपुणा केरलेन्द्र गृहस्थिता ॥१७१
केदाराश्रय संस्था च केदारेश्वर पूजिता ।
क्रोधरूपा क्रोधपदा क्रोधमाता च कौशिकी ॥१७२
कोदण्डधारिणी क्रौंच कौशिल्या कौलमार्गगा ।
कौलिनीकौलिकाराध्या कौलिकागार बासिनी ॥१७३
कौतुकि कौमदी कौला कुमारी कौरकार्चिता ।
कौण्डिया कौशिकी क्रोधाज्वालाभासुरूपिणी ॥१७४
कोटिकालानलज्वाला कोटिमार्तण्ड बिग्रहा ।
क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा मंत्ररूपणि ॥१७५

इति श्री दक्षिणकालिकाताः सर्व साम्राज्य मेधा-दायक सहस्त्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

❀❀❀

ककारादि काली सहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करने के उपरान्त साधक को महाकाली सहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करना चाहिये ।

१- कालीकासहस्त्रनाम स्तोत्र ।
२- ककारादि कालीसहस्त्रनाम ।
३- महालीसहस्त्रनामस्तोत्र ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन तीनों सहस्त्रनामों द्वारा साधक जगत् कल्याण के लिए अनेकों प्रकार के टरे, टोटके; जादू टोनों का प्रयोग करते हैं।

श्रीराम द्वारा काली सहस्त्रनाम से जानकी की स्तुति करना।

महाकालीसहस्रनामस्तोत्र

ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वारामः कमलोचनः।
प्रोन्मील्य शनकै रक्षि वेपमानो महाभुजः ॥१
प्रणम्य शिरसा भूमौ तेजसा चापि विह्वलः।
भीतः कृताञ्जालिपुटः प्रोवाचपरमेश्वरीम् ॥२

रामउवाच

का त्वं देवि विशालाक्षि शशां वयवाकिते।
न जाने त्वां महादेवि यथावद्ब्रूहि पृच्छते ॥३
रामस्य वचनं श्रुत्वा ततः सा परमेश्वरी।
व्याजहार रघुव्याघ्रं योगिनामभयप्रदा ॥४

परमेश वरीउवाच

माँ विद्धि परमां शक्तिं महेश्वरसमाश्रयाम्।
अनन्यामन्यामेकां यांपश्यन्तिमुमुक्षवः ॥५
अहं वै सर्वभावानामात्मा सर्वान्तरा शिवाः।
शाश्वती सर्वविज्ञाना सर्वमूर्तिप्रर्वातिका ॥६
अनन्तानन्तमहिमा ससाराणंवतारिणी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिव्यददामि ते चक्षुः पश्यमेपदमैश्वरम् ॥७
इत्युक्त्वाविररामैया रामोऽपश्यच्च तत्पदम ।
कोटिसूर्यप्रतीकाशं विश्वक्तेजो निराकुलम् ॥८
ज्वालावलीसहस्त्राढ्यं कालानलशतोपमम्
दंष्ट्राकरालं दुर्धर्षं जयमण्डलमण्डितम् ॥९
त्रिशूलवरहस्तं च घोर रुपं भयावहम् ।
प्रशान्यत्सौम्यवदनन्मनभश्वैर्यसंयुतम ॥१०
चन्द्रावयवलक्ष्माढ्यं चन्द्रकोटिसमप्रभम् ।
किरीटिनंगदाहस्तं नूपुरैरुपशोभितम् ॥११
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
शङ्खचक्रकरंकाव्यं त्रिनेत्रं कृत्तिवाससम् ॥१२
अन्तः स्थ चाण्डवाह्यस्थं वाह्यरभ्यन्तरतः परम ।
सर्वशक्तिमयं शान्तं सर्वाकारं सनातनम् ॥१३
ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रयोगीन्द्रैरीडयमानपदाम्बुजम् ।
सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोक्षिशिरोमुखम् ॥१४
सर्वमावृत्य तिष्ठन्तं ददर्श पदमैश्वरम् ।
दृष्टवा च तादृशं रूपंदिव्य माहेश्वरम् पदम् ॥१५
तथैव च समाविष्टः स रामोहृतमानसः ।
आत्मन्याधाय चात्मानमोङ्कारं समनुस्मरन् ॥१६
नाम्नामष्टसहस्त्रेण तुष्टाव परमेश्वरीम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीमहाकालीसहस्रनाम स्तोत्र प्रारम्भ

रामउवाच

ॐ-सीतोमापरमा शक्तिनन्तानिष्कलामला ॥१७॥
शान्ता माहेश्वरीनित्या शाश्वती १० परमाक्षरा ।
अचिन्त्याकेवला नन्ता परमात्मिका ॥१८॥
अनादिरव्ययाशुद्धादेवात्मा २० सर्वगोचरा ।
एकानेकविभागस्था मायातीता सुनिर्मला ॥१९॥
महामाहेश्वरी शक्ता महादेवीनिरञ्जना ।
काष्ठा ३० सर्वान्तरस्था च चिच्छक्तिरतिलालसा ॥२०॥
जानकी मिथिलानन्दा राक्षसान्तविधायिनी ।
रावणान्तकरी रम्या रामवक्षःस्थलालया ॥२१॥
उमा सर्वात्मिका ४० विद्या ज्योतिरूपायुताक्षरी ।
शान्तिः प्रतिष्ठा सर्वे । निवृत्तिरमृतपदा ॥२२॥
व्योममूर्तिर्व्योममयी व्योमधारा ५० ऽच्युतालता ।
अनादिनिधना योषा कारणात्मा कला कला ॥२३॥
नन्दप्रथमजा नाभिरमृतस्यान्तसंश्रया ।
प्राणेश्वरप्रिया ६० मातामही महिषवाहना ॥२४॥
प्राणेश्वरी प्राणरूपा प्रधानपुरुषेश्वरी ।
सर्वशक्तिः कला काष्ठा ज्योत्स्नेन्दो ७०र्महिमास्पदा ॥२५॥
सर्वकार्यनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरेश्वरी ।
अनादिरव्यक्तगुणा महानन्दा सनातनी ॥२६॥
आकाशयोनि योगस्था सर्वयोगेश्वरेश्वरी ८० ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शवासना चितान्तस्था महेशी बृषवाहना ॥२७॥
बालिकातरुणी बृद्धा बृद्धमाता जरातुरा।

महामाया ९० सुदुष्पूरामूलप्रकृतिरीश्वरी ॥२८॥
संसारयोनिः सकला सर्वशक्तिसमुद्भवा।

संसार सारा दुर्वारा दुर्निरीक्ष्यादुरासदा १०० ॥२९॥
प्राणशक्तिः प्राणबिद्यायोगिनीपरमा कला।

महाविभूतिर्दुर्घर्षा मूलप्रकृतिसम्भवा ॥३०॥
अनाद्यनन्तविभवा परात्मा पुरुषो बली ११० ।

सर्गस्थित्यन्तकरणी सुदुर्वाच्यादुरत्यया ॥३१॥
शब्दयोनिश्शब्दमयी नादाख्या नाद विग्रहा।

प्रधानपुरुषातीता प्रधानपुरुषात्मिका ॥३२॥
पुराणी १२० चिन्मयी पुंसामादिः पुरुषरूपिणी।

भूतान्तरात्मा कूटस्था महापुरुषसंज्ञिता ॥३३॥
जन्म मृत्युजरातीता सर्व शक्तिसमन्विता।

व्यापिनी चानवच्छिन्ना १३० प्रधाना सुप्रवेशिनी ॥३४॥
क्षेत्रज्ञा शक्तिरव्यक्तलक्षणामलवर्जिता ।

अनादिमायासम्भिभान्नितचाप्रकृतिर्गुणः १४० ॥३५॥
महामाया समुत्पभातामसीपौरुषं ध्रुवा।

व्यक्ताव्यक्तात्मिकाकृष्णा रक्तशुक्लाप्रसूतिका ॥३६॥
स्वकार्या १५० कार्यजननी ब्रह्मास्या ब्रह्मसंश्रया।

व्यक्ता प्रथमजा ब्राह्मीमहती ज्ञानरूपिणी ॥३७॥
वैराग्यैश्वर्यधर्मात्मा ब्रह्ममूर्ति १६० हृदिस्थिता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जयदा जित्वरीजैत्री जय श्रीर्जयशालिनी ॥३८॥
सुखदा शुभदा सत्या शुभा १७० संक्षोभकारिणी।
अपो योनिः स्वयम्भूतिमानिसी तत्वसम्भवा ॥३९॥
ईश्वराणी च सर्वाणी शंकरार्द्धशरीरणी।
भवानी चैव रूद्राणी १८० महालक्ष्मीरथाम्बिका ॥४०॥
माहेश्वरी समुत्पन्ना भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
सर्वेश्वरी सर्ववर्णा नित्या मुदितमानसा ॥४१॥
ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रनमिता शंकरेच्छानुवर्तिनी १९०।
ईश्वरार्द्धासनगता रघूत्तमपतिव्रता ॥४२॥
सकृद्विभाविता सर्वा समुद्र परिशोषिणी।
पार्वतीहिमवत्पुत्री परमानन्ददायिनी ॥४३॥
गुणाढ्या योगदा २०० योग्या ज्ञानमूर्तिविकाशिनी।
सावित्रीकमला लक्ष्मीश्रीरनन्तोरसि स्थिता ॥४४॥
सरोजनिलया शुभ्रा योगनिद्रा २१० सुदर्शना।
सरस्वती सर्वविद्या जगज्ज्येष्ठा सुमंगला ॥४५॥
वासवी वरदा वाच्या कीर्तिः सर्वार्थसाधिका २२०।

वागीश्वरी सर्वविद्या महाविद्या सुशोभना ॥४६॥
गुह्यविद्यात्मविद्या च सर्वविद्यात्मभाविता।

स्वाहाविश्वम्भरी २३० सिद्धिः स्वधा मेधा धृतिः श्रुतिः ॥४७॥
नाभिःसुनाभिः सुकृतिर्माधवी नरवाहिनी २४०।

पूजा विभावरी सौम्या भगिनी भोगदायिनी ॥४८॥
शोभा वशंकरी लीलामानिनीपरमेष्ठिनी २५०।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रैलोक्यसुन्दरी रम्या सुन्दरीकामचारिणी ॥४९॥
महानुभावमध्यस्थामहामहिषमर्दिनी ।
पद्ममालापापहराविचित्रमुकुटानना ॥५०॥
कान्ता २६० चित्राम्बरधरादिव्यभरणभूषिता ।
हंसाख्या व्योमनिलया जगत्सृष्टिविवर्द्धिनी ॥५१॥
निर्यन्त्रा मन्त्रवाहस्था नन्दिनीभद्रकालिका ।
आदित्यवर्णा २७० कौमारी मयूरवरवाहिनी ॥५२
वृषासनगता गौरी महाकाली सुरार्चिता ।
अदितिर्नियता रौद्रीपद्मगर्भा २८० विवाहना ॥५३॥
विरूपाक्षी लेलिहाना महासुरविनाशिनी ।
महाफलानवद्यांगीकामपूराविभावरी ॥५४॥
विचित्ररत्नमुकुटाप्रणतर्ध्दिविवर्दिनी २९० ।
कौशिकी कर्षणीरात्रिस्त्रिदशार्त्तिविनाशिनी ॥५५॥
विरूपा च सुरूपा च भीमा मोक्षप्रदायिनी ।
भक्तार्तिनाशनीभव्या ३०० भवभावविनाशिनी ॥५६॥
निर्गुणा नित्यविभवा निःसारानिरपत्रपा ।
यशस्विनीसामगीतिर्भवांगनिलयालया ॥५७॥
दीक्षा ३१० विद्याधरी दीप्ता महेन्द्रविनिपातिनी ।
सर्वातिशायिनी विद्या सर्वशक्तिप्रदायिनी ॥५८॥
सर्वेश्वरप्रिया तार्क्षी समुद्रान्तरवासिनी ।
अकलङ्का निराधारा ३२० नित्यसिद्धा निरामया ॥५९॥
कामधेनुर्वेदगर्भा धीमत्री मोहनाशिनी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निः संकत्वा निरातंका विनयाविनयप्रदा ३२० ॥६०॥
ज्वाखामालासहस्राढ्यादेवदेवी सन्मोन्मनी ।
उर्वी गुर्वी गुरुः श्रेष्ठा सगुणा षढ्गुणात्मिका ॥६१॥
महाभगवती ३४० भव्या वसुदेवसमुद्भवा ।
महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी भक्ति गम्यपरायणा ॥६२॥
ज्ञानज्ञेया जरातीतावेदान्तविषया गतिः ।
दक्षिणा ३५० दहना बाह्या सर्वभूदनमस्कृता ॥६३॥
योगमाया विभावज्ञामहामोहामहोयसी ।
सत्यासर्वसमुन्द्भूतिर्ब्रह्मवृक्षाश्रया ३६० मतिः ॥६४॥
वीजांकुरसमुन्द्रूतिर्महाशक्ति र्महामतिः ।
ख्यातिः प्रतिज्ञा चित्सविन्महायोगेन्द्रशायिनी ॥६५॥
विकृतिः ३७० शङ्करी शास्त्री गन्धर्वा यक्षसेविता ।
वैश्वानरीमहाशालादेवसेना गुहप्रिया ॥६६॥
महारात्री शिवानन्दा शची ३८० दुःस्वप्ननाशिनी ।
पूज्याऽपूज्या जगद्धात्रीदुर्विज्ञेयस्वरूपिणी ॥६७॥
गुहाम्बिका गुहोत्पतिर्महापीठा मरुत्सुता ।
हव्यवाहान्तरा ३९० मार्गीहव्यवाहसमुद्भवा ॥६८॥
जगद्योनिर्जगन्माता जगन्मृत्युर्जरातिगा ।
बुद्धिर्माता बुद्धिमती पुरुषान्तरवासिनी ४०० ॥६९॥
तपस्विनी समाधिस्था त्रिनेत्रा दिविसंस्थिता ।
सर्वेन्दियमनोमाता सर्वभूतहृदिस्थिता ॥७०॥
संसारतारिणी विद्या ब्रह्मवादिमनोलया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्माणी वृहती ४१० ब्राह्मीब्रह्मभूता भयाविन: ।।७१।।
हिरण्यमयी महारात्रिः संसारपरिवर्तिका ।
सुमालिनी सुरूपा च तारिणी भाविनी ४२० प्रभा ।।७२।।
उन्मीलनी सर्वसहासर्वप्रत्ययपसाक्षिणी ।
तपिनी तापिनीविश्वा भोगदा धारिणी धरा ४३० ।।७३।।
सुसौम्या चन्द्रवदना ताण्डवासक्त मानसा ।
सत्वशुद्धिकरी शुद्धिर्मलत्रयविनाशिनी ।।७४।।
जगत्प्रिया जगन्मूर्ति स्त्रिमूर्तिरमृताश्रया ४४० ।
निराश्रया निराहारानिरंकुशरणोद्भवा ।।७५।।
चक्रहस्ता विचित्रांगी स्त्रग्विणी पद्मधारिणी ।
परापरविधानज्ञा महापुरुपूर्वजा ।।७६।।
विद्येश्वरप्रिया ४५० ऽविद्या विद्युज्जिह्व जितश्रमा ।
विद्यामयीसहस्त्राक्षी सहस्त्रश्रवणात्मजा ।।७७।।
सहस्त्ररश्मिपद्मस्था महेश्वरपदाश्रया ।
ज्वालिनि ४६० सद्मना व्याप्ता तैजसी पद्मरोधिका ।।७८।।
महादेवाश्रया मान्या महादेव मनोरमा ।
व्योमलक्ष्मीः सिंहरथा के चितान्यमितप्रभा ४७० ।।७९।।
विश्वेश्वरी विमानस्थाविशोका शोकनाशिनी ।
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी पद्मवासिनी ।।८०।।
शतानन्दा सतां कीर्तिः ४८० सर्वभूताशयस्थिता ।
वाग्देवता ब्रह्मकला कलातीताकलावती ।।८१।।
ब्रह्मर्षिब्रह्महृदया ब्रह्म विष्णुशिवप्रिया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्योमशक्तिः क्रियाशक्ति ४६० जैनशक्तिः परागतिः ।८२
क्षोभिकारौद्रिकाभेद्याभेदाभेदविवर्जिता ।

अभिन्ना भिन्नसंस्थाना बंशिनी बंशहारिणी ४०० ।८३।
गुह्याशक्तिगुणातीता सर्वदा सर्वतोमुखी ।

भगिनी भगवत्पत्नी सकला कालकारिणी ।।८४।।
सर्ववित्सर्वतोभद्रा ५१० गुह्यातीता गुहावलिः ।

प्रक्रिया योगमाता च गन्धा विश्वेश्वरेश्वरी ।८५।
कपिला कपिलाकान्ता कनकाभा कलान्तरा ५२० ।

पुण्या पुष्करिणी भोक्त्री पुरन्दरपुरः सरा ।८६।
पोषिणी परमैश्वर्यभूतिता भूतिभूषणा ।

पञ्चब्रह्मसमुत्पत्तिः परमात्मात्मविग्रहा ।८७।
नर्मोदया ५३० भानुमती योगिज्ञेया मनोजवा ।

वीजरूपा रजोरूपा वंशिनी योगरूपिणी ।८८।
सुमन्त्रामन्त्रिणी पूर्णा ५४० ह्लादिनी क्लेशनाशिनी ।

मनोहरिर्मनोरक्षी तापसी वेदरूपिणी ।८९।
वेदशक्ति र्वेदमाता वेदविद्या प्रकाशिनी ।

योगेश्वरेश्वरी ५५० मालामहाशक्तिर्मनोमयी ।९०।
विश्वावस्था वीरमुक्ति र्विद्युन्माला विहायसी ।

पीवरी सुरभी वन्द्या ५६० नन्दिनी नन्दवल्लभा ।९१।
भारती परमानन्दा परापरविभेदिका ।

सर्वं प्रहरणोपेता काम्या कामेश्वरेश्वरी ।९२।
अचिन्त्याऽचिन्त्यमहिमा ५७० दुर्लेखा कनकप्रभा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कूष्माण्डी धनरत्नाढ्या सुगन्धा गन्धदायिनी ॥९३॥
त्रिविक्रमपदोद्भूता धनुष्पाणिः शिरोहया ।
सुदुर्लभा ५८० धनाध्यक्षा धन्या पिंगलोचना ॥९४॥
भ्रान्तिः प्रभावती दीप्तिः पंकजायतलोचना ।
आद्या हृत्कमलोद्भूता परामाता ५९० रणप्रिया ॥९५॥
सत्क्रिया गिरिजा नित्यशुद्धापुष्पनिरन्तरा ।
दुर्गा कात्यायनी चण्डी चर्चिका शान्तविग्रहा ६०० ॥९६॥
हिरण्यवर्णा रजनी जगन्मन्त्रप्रवर्तिका ।
मन्दराद्रिनिवासा च शारदा स्वर्णमालिनी ॥९७॥
रत्नमाला रत्नगर्भा पृथ्वी विश्वप्रमादिनी ६१० ।
पद्मासना पद्मनिभा नित्यतुष्टाऽमृतोद्भवा ॥९८॥
धुन्वती दुष्प्रकम्पा च सूर्यमातारषदूती ।
महेन्द्रभगिनी माया ६२० वरेण्यावरदर्पिता ॥९९॥
कल्याणी कमला रामापञ्चभूतवरप्रदा ।
वाच्या वरेश्वरी नन्द्या दुर्जया ६३० दुरतिक्रमा ॥१००॥
कालरात्रिर्महावेगा वीरभद्रहितप्रिया ।
भद्रकाली जगन्माता भक्तानां भद्रदायिनी ॥१०१॥
करालापिंगलाकारा नामवेदा ६४० महानदा ।
तपस्विनी यशोदा च यथाध्वपरिवर्तिनी ॥१०२॥
शङ्खिनी पद्मिनी सांख्या सांख्ययोगप्रवर्तिका ।
चैत्रीसंवत्सरा ६५० रुद्रा जगत्सम्पूरणीन्द्रजा ॥१०३॥
शुम्भारिः खेचरी खस्था कम्बुग्रीवा कलिप्रिया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खरध्वजा खरारूढा ६६० परर्घ्यापरमालिनी ॥१०४॥
ऐश्वर्यरत्ननिलया विरक्ता गरुडासना ।

जयन्ती हृद्गुहारम्या सत्ववेगा गणाग्रणीः ॥१०५॥
सङ्कल्पसिद्धा ६७० साम्यस्था सर्वविज्ञानदायिनी ।

कलिकल्मषहन्त्री च गुह्योपनिषदुत्तमा ॥१०६॥
नित्यदृष्टिः स्मृतिर्व्याप्तिः पुष्टिस्तुष्टि ६८० क्रियावती ।

विश्वामरेश्वरेशाना भुक्तिर्मुक्तिः शिवामृता ॥१०७॥
लोहिता सर्वयाता च भीषणा वनमालिनी ६९० ।

अनन्तशयनाऽनाद्या नरनारायणोद्भवा ॥१०८॥
नृसिंही दैत्यमथिनी शङ्खचक्रगदाधरा ।
सङ्कर्षणसमुत्पत्तिरम्बिजात संश्रया ॥१०९॥

महाज्वाला महामूर्तिः ७०० सुमूर्तिः सर्वकामधुक् ।
सुप्रभा सुतरांगौरी धर्मकामार्थमोक्षदा ॥११०॥
भ्रूमध्यनिलयाऽपूर्वा प्रधानपुरुषा बली ।
महाविभूतिदा ७१० मध्या सरोज नयनासना ॥१११॥
अष्टादशभुजा नाट्या नीलोत्पलदलप्रभा ।

सर्वशक्त्या समारूढा सर्वधर्मा धर्मानुवर्जिता ॥११२॥
वैराग्यज्ञान निरता निरातालोका ७२० निरिन्द्रिया ।

विचित्रगहना धीरा शाश्वतस्थानवासिनी ॥११३॥
स्थानेश्वरी निरानन्दा त्रिशूलवर धारिणी ।

अशेष देवतामूर्तिदेवतापरदेवता ७३० ॥११४॥
गणात्मिका गिरेः पुत्री निशुम्भविनिपातिनी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अवर्णां वर्णरहितानिर्वर्णां बीजसम्भवा ।।११५।।
अनन्त वर्णाऽनन्यस्था शंकरी ७४० शान्तमानसा ।

अगोत्रा गोमती गोप्त्री गुह्यरूपा गुणान्तरा ।।११६।।
गोश्रीर्गव्यप्रिया गौरी गणेश्वरनमस्कृता ।

सत्यमात्रा ७५० सत्यसन्धा त्रिसन्ध्या सन्धिवर्जिता ।।११७।।
सर्ववादाश्रया सांख्या सांख्ययोगसमुद्भवा ।

असख्येयाऽप्रमेयाख्या शून्या शुद्धकुलोद्भवा ७६० ।।११८।।
बिन्दुनादसमुत्पत्तिः शम्भुवामा शशिप्रभा ।

बिसंगा भेदरहिता मनोज्ञा मधुसूदनी ।।११९।।
महाश्रीः श्रीसमुत्पत्ति ७७० स्तमः पारेप्रतिष्ठिता ।

त्रितत्वमाता त्रिविधा सुसूक्ष्मपद संश्रया ।।१२०।।
शान्त्यतीता मलातीता निर्विकारा निराश्रया ।

शिवाख्या चित्रनिलया ७८० शिवज्ञानस्वरूपिणी ।।१२१।।
दैत्यदानवनिर्मात्री काश्यपी कालकर्णिका ।

शास्त्रयोनिः क्रियामूर्तिश्चतुर्वर्गप्रदर्शिका ।।१२२।।
नारायणी नवोत्भूता कौमुदी ७९०लिङ्गधारिणी ।

कामुकी ललिता तारा परापरविभूतिदा ।।१२३।।
परान्तजातमहिमा वडवा वामलोचना ।

सुभद्रा देवकी ८०० सीता वेदवेदांगपारगा ।।१२४।।
मनस्विनीमन्युमाता महामन्युसमुद्भवा ।

अमृत्युरमृताअमृत्यमृता स्वादापुरुहूता पुरुप्लुता ।।१२५।।
अशोच्या ८१० भिन्नविषया हिरण्यरजतप्रिया ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिरण्या राजती हैमो हेमाभरण भूषिता ॥१२६॥
विभ्राजमाना दुर्ज्ञेया ज्योतिष्टोमफलप्रदा ।
महानिद्रा ८२० समुद्भूतिर्बलीन्द्रासत्यदेवता ॥१२७॥
दीर्घांकुद्मिनी विद्या शान्तिदा शान्तिवर्द्धिनी ।
लक्ष्मय दिशक्तिजननी शक्तियक्रप्रवर्तिका ॥१२८॥
त्रिशक्ति जननी ८३० जन्या षडूर्मिपरिवर्जिता ।
स्वाहा च कर्मकरणीयुगान्तदलनात्मिका ॥१२९॥
सङ्कर्षणा जगद्धात्री कामयोनिः किरीटिनी ।
ऐन्द्री ८४० त्रैलोक्यनमिता वैष्णवीपरमेश्वरी ॥१३०॥
प्रद्युम्नदयिता दान्ता युग्मदृष्टिस्त्रिलोचना ।
महोत्कटाः हंसगतिः प्रचण्डा ८४० चण्डविक्रमा ॥१३१॥
बृषागिरिशा वियन्मात्रा विन्ध्यपर्वतवासिनी ।
हिमवन्मेरुनिलया कैलासगिरिवासिनी ॥१३२॥
चाणूरहन्त्री धनया नीतिज्ञा कामरूपिणी ।
वेदविद्या व्रतरता धर्मशीलाऽखिलाशना ॥१३३॥
अयोध्यानिलया वीरा महाकालसमुद्भवा ।
विद्याधरक्रित्या सिद्धा विद्याधरनिराकृतिः ॥१३४॥
आप्यायन्ती ८७० वहन्ती च पावदी पोषणी खिला ।
मातृजा मन्मथोद्भुता वारिजा वाहनप्रिया ॥१३५॥
करीषिनी स्वधा वाणी ८८० वीणावादनतत्परा ।
सेविता सेविका सेवा सिनीवाली गरुत्मती ॥१३६॥
अरुन्धती हिरण्याक्षी मणिदा श्रीवसुप्रदा ८४० ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वसुमती वसोधाँरा वसुधातः समुद्भवा ॥१३७॥
वरारोहा वरार्हा च वपुः संगसमुद्भवा ।
श्रीफली श्रीमती श्रीशा श्रीनिवासा ९०० हरिप्रिया ॥१३८॥
श्रीधरी श्रीकरी कम्पा श्रीधरा ईशवीरणी ।
अनन्तदृष्टिरक्षुद्रा धात्रीशा धनदप्रिया ९१० ॥१३९॥
निहन्त्री दैत्यसिंहानां सिंहिका सिंहवाहिनी ।
सुसेना चन्द्रनिलया सुकीर्तिश्छिन्नसंशया ॥१४०॥
बलज्ञा बलदा बामा ९२० लेलिहानाऽमृतास्रवा ।
नित्योदिता स्वयंज्योतिरुत्सुकामृतजीवनी ॥१४१॥
वज्रदंष्ट्रा वज्रजिह्वा वैदेही वज्रविग्रहा ९३० ।
मंगल्या मंगला माला मलिना मलहारिणी ॥१४२॥
गान्धर्वी गारुडी चान्द्रीकम्बलाश्वतरप्रिया ।
सौदामिनी ९४० जनानन्दा भ्रुकुटीकुटिलानना ॥१४३॥
कर्णिकार करा नन्दा कंसप्राणापहारिणी ।
युगन्धरा युगावर्त्ता त्रिसन्ध्याहर्षवर्धिनी ॥१४४॥
प्रत्यक्ष देवता ९५० दिव्यदिव्या गन्धा दिवापरा ।
शक्त्यासनगता शाक्तिः साध्वी नारी शवासना ॥१४५॥
इष्टा विशिष्टा ९६० शिष्टेष्टा शिष्टा शिष्ट प्रपूजिता ।
शतरूपा शतावर्त्ता विनीता सुरभिः सुरा १४६॥
सुरेन्द्रमातासुद्युम्ना ९७० सुषुम्ना सूर्यसंस्थिता ।
समीक्षा सत्प्रतिष्ठा च निर्वृत्तिज्ञानपारगा ॥१४७॥
धर्मशास्त्रार्थ कुशला धर्मज्ञा धर्मवाहना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धर्माधर्म विनिर्मात्री ९८० धार्मिकाणाँ शिवप्रदा ॥१४८॥
धर्मशक्ति धर्ममयी विधर्मा विश्वधर्मिणी ।

धर्मान्तरा धर्ममध्या धर्मपूर्वा धनप्रिया ॥१४९॥
धर्मोपदेशा ९९० धर्मात्मा धर्मलभ्या धराधरा ।

कपाली साकलामूर्तिः कलाकलित विग्रहा ॥१५०॥
सर्वशक्तिविनिर्मुक्ता सर्वशक्त्याश्रया सदा ।

सर्वा सर्वेश्वरी १००० सूक्ष्मासुसूक्ष्मज्ञानरूपिणी ॥१५१॥
प्रधानपुरुषेशाना महापुरुषसाक्षिणी ।

सदाशिवा वियन्मूर्तिदेवमूर्तिरमूर्तिका १००८ ॥१५२॥
एवं नाम्नांसहस्त्रेण तुष्टाव रघुनन्दनः ।

कृताञ्जलिपुटो भूत्वा सीतां हृष्टतनूरुहाम् ॥१५३॥
भारद्वाज महाभागो यश्चैतस्तोत्रमद्भुतम् ।
पठेद्वापाठयेद्वापि जपन्हृष्टो स याति परमं पदम् ॥१५४॥
ब्रह्म क्षत्रिय विडयोनिर्ब्रह्म प्राप्नोति शाश्वतम् ।
शूद्र सद्गतिमान्प्रोति धनधान्यविभूतयः ॥१५५॥
भवन्ति स्त्रोत्रमाहात्म्यादेतत्स्वस्त्ययनं महत् ।
मारीभये राजभये तथा चोराग्निजे भये ॥१५६॥
व्याधीनां प्रभवे घोरे शत्रूत्थाने च संकटे ।
अनावृष्टिभये विप्र सर्वशान्तिकरं परम् ॥१५७॥
यद्यदिष्टतमंयस्य तत्वसर्वं स्तोत्रतोभवेत् ।
यत्रै तत्पठ्यते सम्यक् सीतानाम सहस्त्रकम् ॥१५८॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामेण सहिता देवी तत्र तिष्ठत्यसंशयम् ।
महापापातिपापानिविलयं यान्ति सुव्रत ॥१५६॥

इत्यार्षे श्री मद्रामायणे वाल्मीकीये आदि काव्ये अद्भुतोत्तरकाण्डे सीतासहस्रनाम स्तोत्रकथनं नाम पञ्चविंशतितमः सर्गः ॥२५॥

※ अथदेव्याः श्रीकर्पूर स्तवराजः ※

अथ श्री महाकालप्रणीतंकर्पूर स्तोत्रं प्रारम्भ ।

साधक को चाहिए कि सहस्रनाम पाठ करने के उपरान्त शान्त मन से देवी का श्री कर्पूर स्तवराज का पाठ करना चाहिए ।

कर्प्पूरम्मध्यमान्त्यस्वरपररहितं सेन्दु वामाक्षियुक्तम्बीजन्ते मातरेतत्त्रिपुरहरवधुस्त्रिष्कृतं ये जपन्ति ।
तेषाङ्गद्यानिपद्यानि च मुखकुहरादुल्लसन्तोव वाचः,
स्वच्छन्दध्वान्तधाराधर रुचिरुचिरे सर्व सिद्धिङ्गतानाम् ॥१॥

ईशानस्सेन्दुवामश्रवणपरिगतम्बीजमन्यन्महेशि,
द्वन्द्वन्तेमन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकङ्कदाचित् ।
जित्वा वाचामधीशन्धनदमापिचिरम्मोहयत्यम्बुजाक्षी,
वृन्दञ्चन्द्रार्द्धचूडे प्रभवति स महाघोररावर्वतंसे ॥२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईशो वैश्वानरस्थः शशिधरविलसद्वामनेत्रेण युक्तम्बीजन्ते
द्वन्द्वमन्यद्विगलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति ।
द्वेष्टारन्ते निहन्ति त्रिभुवनमृदितेवश्यभावन्नयन्ति,
सृक्कद्वन्द्वास्त्रधाराद्वयधर वदने दक्षिणेकालिकेति ॥३॥

ऊर्ध्ववामे कृपाणङ्करकमलतलेच्छिन्नमुण्डन्तथाऽध,
सव्येजीतिम्वरञ्चत्रिजगधहरे दक्षिणेकालिके च ।
जप्त्वैतन्नामवर्णन्तवमनुविभवम्भावयन्तदर्थन्तेषामष्टौकरस्थाःप्रक-
टितवदनेसिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ॥४॥

वर्गाद्यम्वह्निसंस्थं विधुरतिललितन्तत्रयङ्कूर्चयुग्मं-
लज्जाद्वन्द्वञ्चपश्चात्स्मितमुखि त्वदधष्ठद्वयंयोजयित्वा ।
मातर्ये ये जपन्ति स्मरहरमहिलेभावयन्ते स्वरूपन्ते
लक्ष्मीलास्यलीलाकमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥५॥

प्रत्येकम्वा द्वयम्वा त्रयमपि च परम्बीजमत्यन्तगुह्यन्त्व-
न्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदाभाववन्तो जपन्ति ।
तेषान्नेत्रारविन्दे विहरति कमलावक्त्रशुभ्रांशुविम्बे-
वाग्देवीदिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कण्ठपीनस्तनाढ्ये ॥६॥

गतासूनाम्बाहु प्रकरकृतकाञ्चीपरिलसन्नितम्बान्दिग्वस्त्रा-
न्त्रिभुवन विधात्रीन्त्रिनयनाम् ।
श्मशानस्थे तल्पेशवहृतमहाकालसुरतप्रसक्तान्त्वान्ध्याय-
ञ्जननि ! जड़चेता अपि कविः ॥७॥

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवहमुण्डास्थिनिकरैः,
परं सङ्कीर्णायाम्प्रकटितचितायाँहर वधूम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रविष्टां , सन्तुष्टामुपरिसुरतेनाऽतियुवतीं,
सदा त्वान्ध्यायन्तिक्वचिदपि न तेषांपरिभवः ॥८॥

वदामस्तेकिम्बा जननि ! वयमुच्चैर्जडधियो,
न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम् ।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमसिते,
तदेतत्क्षन्तव्यो न खलु पशुरोषः समुचितः ॥९॥

समन्तादापीनस्तनजघनधृग्यौवनवतीरतासक्तो नक्तं
यदि जपति भक्तस्तव मनुम् ।
विवासास्त्वान्ध्यायन्गलितचिकुरस्तस्य वशगाः,
समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरञ्जीवति कविः ॥१०॥

शमा स्वस्थो भूतो जपतिविपरीतो यदि सदा,
विचिन्त्यत्वान्ध्यायन्नतिशयमहाकाल सुरताम् ।
तदातस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः,
कराम्भोजे वश्याः स्मरहरवधूसिद्धिनिवहाः ॥११॥

प्रसूने संसारञ्जननि जगतीम्पालयति वा,
समस्तङ्क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च ।
अयस्त्वोंत्वां धाताऽपित्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि,
महेशोऽपि प्रायः सकलमापि किं स्तौमिभवतीम् ॥१२॥

अनेके सेवंतेभवदधिकगीर्व्वाण निवहाः
विमूढास्ते मातः ! किमपि न हि जानन्ति परमम् ।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविच्यादिविबुधैः,
प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्द निरताम् ॥१३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धरित्रीकीलालंशुचिरपि समीरोऽपि गगनन्त्वमेका:
कल्याणीगिरिशरमणीकालि ! सकलम् ।
स्तुतिं काते मातर्निजकरुणया मामगति-
र्प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ।
श्मशानस्थः स्वस्थोगलितचिकुरो दिक्पटधरः
सहस्त्रं त्वर्क्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम् ।
जपंस्त्वत्प्रत्येकम्मनुमपि तव ध्यान निरतो,
महाकालि ! स्वैरं स भवति धरित्री परिवृढः ।।१५।।
गृहे सम्माजर्ज्न्यापरिगलित वीर्य्यं हि कुसुमं,
समूलम्मध्याह्ने वितरतिचितायां कुजदिने ।
समुच्चार्यप्रेम्णामनुमपि सकृत्कालि ! सततं,
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः ।।१६।।
स्वपुष्पैराकर्णंङ् कुसुमधनुषो मन्दिरमहो,
पुरोध्यायन्ध्यायञ्जपतियदिभक्तस्तवमनुम् ।
सगन्धर्वश्रेणीपतिरपि कवित्वामृतनदी,
नदीनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति ।।१७।।
त्रिपञ्चारे पीठेशवशिवहृदि स्मेरवदना
म्महाकालेनोच्चैर्म्मदनरस लावण्यनिरताम् ।
समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्द निरतो,
जनो यो ध्यायेत्वामपि जननि स स्यात्स्मरहरः ।।१८।।
सलोमास्थिस्वैरम्पलमपि मार्ज्जारमसिते,
परञ्चौष्ट्रम्मैषन्नरमहिषयोश्छागमपि वा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुष्पन्ते नैवेद्यामिकञ्च क्कचिदपि न कृतं-
नाऽपिभावो न भक्तिः ।
न न्यासो नैव पूजा न च गुणकथनंनापि-
चाऽऽचर्चकृता ते क्षन्तव्यो ॥६॥
जानामि त्वां न जाऽहं भवभयहरणीं सर्व्वसिद्धिप्रदात्रीं,
नित्यानन्दोदयाढ़्यांत्रितयगुणमयीन्नित्यशुद्धोदयाढ़्याम् ।
मिथ्याकर्म्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीड़ितो
दुखसङ्घैः क्षन्तव्यो० ॥७॥
कालाभ्रां श्यामलाङ्गीं विगलितचिकुराखड्ग-
मुण्डाभिरामांत्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपणशिरो-
मालिनीं दीर्घ नेत्राम् ।
संसारस्यैकसारामभवजननहरामभावितो-
भावनाभिः क्षन्तव्यो० ॥८॥
ब्रह्मा विष्णुस्तथेशः परिणमति सदात्वत्पादाम्भोज-
युग्मं भाग्या भावान्नचाऽहम्भवजननि !
भवत्पादयुग्मंभजामि ।
नित्यं ल्लोभप्रलोभैःकृतविवशमतिः कामुक-
स्त्वाम्प्रयाचे क्षन्तव्यो० ॥९॥
रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः
कार्य्याकार्य्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः।
क्क ध्यानन्ते क्क चाऽऽचर्चा क्क चमनुजपनन्नं-
वकिञ्चित्कृतोऽहं क्षन्तव्यो० ॥१०॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता,
निद्रालस्य प्रसक्तस्सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा ।
किन्ते पूजाविधानं त्वयिक्वच्चा (?) नुमतिः
क्वाऽनुरागः क्वचाऽऽस्था क्षन्तव्यो ॥११॥
मिथ्याव्वामोहरागैः परिवृत्तमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य-
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरणविरहिणः पापकर्म्म प्रवृत्तेः ।
दारिद्रस्यक्वधर्म्मः क्व च जननि ! रुचिः क्व स्थितिः
साधुसङ्घैः क्षन्तव्यो० ॥१२॥
मातस्तातस्य देहाज्जननिजठरगः संस्थितस्त्वद्वशे-
ऽहन्त्वं हर्त्रीकारयित्रीकरणगुणमयी कर्महेतुस्वरूपा ।
त्वम्बुद्धिश्चित्तसंस्थाऽप्यहमसि भवती सर्व-
मेतत्क्षमस्व क्षन्तव्यो० ॥१३॥
त्वम्भूस्त्वं जलञ्च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा-
त्वञ्चाकाशम्मनश्चप्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्व्वपूर्वा ।
आत्माऽत्वञ्चाऽसिमातः परमसि भवती-
त्वत्परन्नैवकिञ्चित्क्षन्तव्यो० ॥१४॥
त्वं कालीत्वञ्च तारा त्वमसिगिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वं
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं
हि लक्ष्मीः शिवा त्वम् ।
धूमा मातङ्गिनी त्व त्वमसि च बलगा मङ्गलादि-
स्तवाऽऽरव्या क्षन्तव्यो० ॥१५॥
स्तोत्रेणाऽनेन देवीम्परिणमति जनो यः सदाभक्ति युक्तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुष्कृत्याद्दुर्ग्गसङ्घस्परितरति शतस्म्बिघ्नता नाश मेति ।
नाधिर्व्याधिः कदाचिद्भ्भवति यदिपुनस्सर्वदा सापराधः-
सर्वन्तत्कामरूपे त्रिभुवन जननि!क्षाम्यपुत्र बुद्धया।।१६।।
ज्ञाता वक्ता कवीशोभवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा
निष्पापी निष्कलङ्की कुलपतिकुशलस्सत्यवाग्धार्मिकश्चा ।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखः सत्पथाचारशीलः
संसाराब्धिबमुखेन प्रतरतिगिरजा पादयुग्मावलम्बात्।।१७।।

❀ इति श्रीमहकाली स्तोत्रम् समाप्तम् ❀

श्रीकाली जयति ।

श्री गणेशाय नमः ।

ॐ

नक्षत्रमालाख्यम् ।

❀ श्रीकालीस्तोत्रम् ❀

साधक को चाहिए कि मन को एकाग्र करके और मौन होकर श्री महाकाली स्तोत्र के उपरान्त नक्षात्र-माला व्याख्यान श्री काली स्वोत्र का पाठ करना चाहिए ।

सिन्दूरभूषितललामललाटपट्टे !
बालातलेन्दुशकलाङ्कितभालपट्टे ! ।
कालाभ्रसन्निभवविज्ञवक्त कचाभिरामे !
भक्तार्तिभंजिनि ! वरांजनभूधरामे ! ।।१।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोमानलार्ककररंजितचारुदीप्त-
रक्तासवातिशयपान विघूर्णिताक्षि !।
कर्णप्रकल्पितकिशोरशवावतंसे !
संसारबन्धनवरं मम मोचयाशु ॥२॥
हा कालि ! हा हरदिहारिणि ! हा दयार्द्रे !
लोलारुणामल सरोरुह रक्त जिह्वे !।
शोणारविन्दकलिकाग्रविकाश शोभा-
सम्भ्राजितस्मितमुखेऽरुणिताधरोष्ठे ! ॥३॥
ताम्बूलपूरितमहारुणवक्त्रकोशे !
दन्त प्रभर विजित दाड़िम बीजलेखे ।
सृक्कद्वयप्रगलिताऽमृतरक्तधारा-
सम्भूषितेऽरिरुधिरंपिबविश्ववन्द्ये ! ॥४॥
मुण्डावलीवरविभूषितकम्बु कण्ठे,
दक्षे ! वराभयविराजितपाणिपद्मे !।
सव्ये ! नृमुण्डकरवाललसत्कराब्जे,
मय्यम्ब ! शवितर भक्षय जाड्यशत्रून् ॥५॥
विद्युत्प्रभारुचिरभूषणभूषिताङ्गि !
गर्वाख्यवृन्दवरसाधकसिद्धिसङ्घे !।
घोरे ! निशाचरकुलान्तकभीमरावे !
शत्रुन्निषूदय ममाम्ब ! सहोग्ररूपे ! ॥६॥
घोराहिकन्धरफणीन्द्रकरप्रसक्त-
शाणोग्रधारतड़िदाभमहासिनाम्ब !।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुम्भादिदानवविदारणशालिनाऽलम् ,
सन्दारयाशु दुरितारिदलं दयार्द्रे ! ॥७॥
घोरेषु शीर्षभुजगेन्द्रसमानबाहु-
र्यातिः सहस्त्रभुजदैत्यवधेप्रवृत्तः ॥
छित्वा शिरोद्रुतमसूनपि सञ्जहार,
छिन्द्यात् करालकरवालधरो ममारीन् ॥८॥
धृत्वारुण्यनन्तमनोहरपुष्परत्न-
मालासुपीनकुचकुम्भविराजिताङ्घ्रि ! ॥
रोमावलीपरिलसत्त्रिवलीविचित्र-
शोभान्विसोदरदरेऽम्बुजनाभिमूले ! ॥९॥
ताराप्रसूनकलिकालतिकाङ्कचारु-
व्योमाम्बरे ! शवकरावलिमेखलाढ्ये !
आनन्दमन्दरसमद्युति पूर्णरूपे !
रम्भादिरूपवरदे ! कुरु शकुलाढ्ये ! ॥१०॥
ब्रह्माच्युतेश्वरमसन्मुकुट प्रसक्त-
सद्रत्नराजिपरिराजितपादपद्मे ! ॥
विद्युतत्प्रभारुचिरनूपुररावलोले !
धर्म्मार्थकामवरसाधिनि ! मोक्ष सद्मे ! ॥११॥
चञ्चत्सुचारुवररत्नविचित्रमुद्रे !
आपादचण्डमुखमुण्डकमालिकाढ्ये ! ॥
पीयूषपुञ्जपरमापरमैक्यमूर्ते !
मारूपालयाशुकमले ! कुरु मा विलम्बम् ॥१२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आनन्दकन्दकरुणापरिपूर्णशीले !
गीर्वाणवृन्दरमणीकरलालितांघ्रे ! ॥
पाया: कृपार्द्रे नयने ! शरणागतं मां
विद्याविशुद्ध हृदयं कमनो ऽभिरामे ॥१३॥
मुक्तात्मकेशशवपीठवरेऽधिरूढा,
भीमैः शिवागणरवैः परमोदयुक्ता ॥
नित्यं श्मशाननिलयाखिलयोगिनीभि-
र्भूताधि भैरवगणैरनिशं वृता हि ॥१४॥
मांसाशिनी वरसुरापरिपानमत्ता,
सानन्दमीशसुरतादिविलीनचित्ता ॥
नृत्य करोषि सततं श्रवणं कथन्ते,
दीनस्य मे विलपनं विविक्षन्तदा स्यात् ॥१५॥
दीनोऽधुनाम्ब ! करुणापरिपूर्णलीले
किं यामि देवि ! परदेवपदं क्षुधार्त्त : ॥
संसार पाश पतितं परमोचयाशु,
मामात्मभक्तिमचलां वितरामरज्ये ॥१६॥
सम्मोचिताः सुरमुनीन्द्रगणा भयत्या,
भीता हि शुम्भमधुकैटभसौरिभाद्यै : ॥
तत् सुन्दरी शिरसि संस्थित केशबन्धः
सम्मोचितोऽस्ति करुणाकरि ! मां स्मरस्वम् ॥१७॥
नो मोचयिष्यसि यदि स्मर पातितं मां,
संसारशत्रु निवहैः करुणाकराढ्ये ॥
लोको हसिष्यति एवंव दयार्द्र नेत्रे !

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तस्मात् विलम्बमिह माचर मोचयाशु ॥१८॥
संसारसागरजले विषयोग्रवीचि-
मालाकुले मकर मोहगणावृतेम्ब ! ॥
मामग्नमुद्धर महेशि ! सरोरुहाक्षि !
जालीकृतामलदयाधृत हस्तकेन ॥१९॥
माता सुभोजनविभूषणवस्त्रबृन्दैः,
सन्तोषयत्यभिभवात् परिपाति बालान् ॥
ध्यानार्चनादिरहितानपि प्रश्यति स्वं म्,
स्वीकारलालनपरा परमोत्सवाढ्या ॥२०॥
आज्ञायि सा ऽखिल जगज्जननि ! त्वमित्थ;
नि स्त्रह ताम्मयि कथं तनुषे प्रजाढ्ये ॥
स्नेह जगत् स्वतनये कुरुतेऽविलम्बं,
मामात्मजं स्मितमुखेऽम्ब ! कथन्न पास !॥२१॥
स्मेराननेऽमरमुनीन्द्रगणाः कृतार्वे,
स्वाभीष्टपूर्णमनसोऽमललोचनेन ॥
येनाम्ब ! तेन वरदे ! शरणागतं मां,
पश्यातिदीनमतिहीनमचिन्त्यतत्वे ! ॥२२॥
अम्बाऽनुकम्पय कटाक्षनिरीक्षणेन,
दुर्बोधदावदहनैः परिदह्यमानम् ॥
मान्दीनमात्मतनयंभवभीतिभङ्गे !
सौभाग्यमाशु विपुलंमयि देर्ग ॥२३॥
दन्तैर्विदारय विभीषयभीमरावैः,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सञ्छेदयाशु करवालकरेणशत्रून् ॥
दारिद्र्यामम्ब ! परिभञ्जय रोगसङ्घान्,
दुष्टांश्च नाशय महाविकरालरूप ! ॥२४॥
हृदयकमलकोशे रक्तरोचिर्विचित्रे,
कुसुमरससमूहैर्मोदितैरङ्ग बुद्ध्या ॥
नटनमनिशमीहे ज्ञानमुद्रावबोधे,
रचय वितर बिद्याऽऽमोदलक्ष्मींशिवे ! मे ॥२५॥
माता काली मत्पिता कालिका च,
काली बन्धुः कालिका पालिका च ॥
सर्वस्व मे कालिकाभीष्टदात्री,
नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥२६॥
त्वद्रूपकान्तिगुणचिन्तनमप्य साध्यं,
मातर्विरिञ्चिकमलेशमहेशमुख्यैः ॥
ईशे ! तथापि जड़बुद्धिमतामयैतत्-
स्तोत्रार्पणं कृतमल चरणे तवाम्ब ! ॥२७॥
यः स्तोत्रमेतदमलं प्रपठेत् त्रिकाल-
मेकाग्रधीः शिवशिवाभवनेऽम्बिकायाः ॥
तस्याशुभक्तिपरमोदविभूतिविद्या-
वंशायुषांभगवती प्रकरोति वृद्धिम् ॥२८॥
॥ इति श्री नक्षत्रमालाख्य श्रीकालीस्तोत्र समाप्तम् ॥

❀ श्रीकालिकार्पणमस्तु ❀

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

र्जनास्त्वं पुरीं मूर्तिमत्युतमास्ते ॥१०॥
जनान् दुःखसिन्धोः समुद्धर्तुं कामा,
पथस्तानन्नेकान् प्रदिश्यप्रकृष्टान् ।
दयार्द्रं स्वभावेतिविख्यातकीर्ति,
स्त्वमेकैव पूज्यापराशक्तिरूपा ॥११॥
सदा ते पदाब्जे मनः षट्पदो मे,
पिबन् तद्रसं निर्वृतः संस्थितोऽस्तु ।
इति प्रार्थनाँ मे निशम्याऽऽशु मात,
र्विधेहिस्वदृष्टिं दयार्द्रामपीषत् ॥१२॥
इति संस्तुत्य सा गौरी त्रिपुराँ परमेश्वरीम् ।
स्तोत्रेण ज्ञानकलिकाख्येनध्यानं समास्थिता ॥१३॥

❀ इति ज्ञानकालिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ❀

सुधाधाराकाली स्तोत्र

नक्षत्र माला व्याख्यान श्रीकालीस्तोत्र का पाठ समाप्त करने के उपरान्त साधक को चाहिए कि जब वह ज्ञान कालिका स्तोत्र का पाठ समाप्त करे। तब उसके उपरान्त साधक को एकाग्र मन द्वारा सुधाधाराकाली स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

ओम् अचिन्त्यामिताकारशक्तिस्वरूपा,
प्रतिव्यक्त्यधिष्ठान सत्वैक मूर्तिः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुणातीत निर्द्वन्द्व बोधैकगम्या,
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥१॥
अगोत्राकृतित्वादनैकान्तिकत्वा-
दलक्ष्यागमत्वादशेषाकरत्वात् ॥
प्रपंचालसत्वादनारम्भकत्वात्-,
त्वमेकापरब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥२॥
असाधारणत्वादसम्बन्धकत्था-
दभिन्नाश्रयत्वादनाकारकत्वात्-
अविद्यात्मकत्वादनाद्यन्तकत्वात्-
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥३॥
यदा नैवधाता न विष्णु नं रुद्रो,
न कालो न वा पंचभूनानि नाशा ॥
तदा कारणीभूत सत्वैकमूर्ति
स्त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥४॥
न मीमाँसका नैव कालादितर्का,
न साँख्या न योगा न वेदान्तवेदाः ॥
न देवा विदुस्ते निराकारभामं,
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥५॥
न ते नामगोत्रे न बे जन्म मृत्यु,
न ते धामचेष्टे न ते दुःख सौख्ये ॥
न ते मित्र शत्रू न ते बन्धमोक्षौ,
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न वाला न च त्वाँ वयस्था न वृद्धा,
न च स्त्री न षण्ढः पुमान्नैव च त्वम् ॥
न च त्व सुरी नासुरे नो नरो वा;
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥७॥
जले शीतलत्वं शुचौदाहकत्वं,
विधौनिर्मलत्वं रवौ तापकत्वम् ॥
तवैवाम्बिके यस्स कस्यापि शक्ति-
स्त्वमेका परब्रह्मरूपेणसिद्धा ॥८॥
पपौ क्ष्वेडमुग्रं पुरा यन्महेशः,
पुनः संहरत्यन्तकाजे जगच्च ॥
तवैव प्रसादान्न च स्वस्य शक्त्या,
त्वमेका परब्रह्म रूपेण सिद्धा ॥९॥
करालाकृतीन्याननानि श्रयन्ती,
भजंती करास्त्रादि बाहुल्य मित्थम् ॥
जगत्पालनाया सुराणाँ बधाय,
त्वमेका परब्रह्म रूपेण: सिद्धा ॥१०॥
रुवन्ती शिवाभिर्वहन्ती कपालं,
जयन्ती सुरारीन् वधन्ती प्रसन्ना ॥
नटन्ती पतन्ती चलन्ती हसन्ती,
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥११॥
अपादापि वाताधिकं धावसि त्वं
श्रुतिभ्याँ विहीनापि शब्दं शृणोषि ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनासापि जिघ्रस्य नेत्रापि पश्य-
स्वजिह्वापि नानारसास्वाद विज्ञा ॥१२॥
यथाब्धिस्त्वमेक खेरम्बरस्थं,
प्रतिछाच्चयया यावदेकोदकेषु ॥
समुद्भासतेऽनेकरूप यथावत्,
त्वमेका परब्रह्मरूपेण सिद्धा ॥१३॥
यथा भ्रामयित्वा मृद चक्र मध्ये;
कुलाँली विधने शरावं घटं च ।
महामोह यन्त्रेषु भूतान्यशेषान्,
तथा मानुषास्त्वं सृजस्यादि सर्गे ॥१४॥
तथा रज्जुरज्वक्रेदृष्टिरवकस्मा-
न्नृणां रूपदर्वीकरास्दुभ्रमः स्यात् ॥
जगत्यत्र तत्तन्मये तद्वदेव
त्वमेकैव तत्तन्नितत्तौ समस्तम् ॥१५॥
महाज्योति एकार सिंहासनं वत्,
त्वकीयान् सुरान् वाहयस्युग्रमर्ते ॥
अवष्टभ्य पद्भ्यां शिवं भैरवं च,
स्थिता तेन मध्ये भवत्येव मुख्या ॥१६॥
कुयोगासने योगमुद्राभिः नोतिः,
कुगोसायुपोतस्य वालाननं च ॥
जगन्मातरादृक् तवापूर्वलीला,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कर्यंकारमस्मद्विधैर्देविगम्या ॥१७॥

विशुद्धपरा चिन्मयी स्वप्रकाशा-
मृतानन्दरूपा जगद्व्यापिका च ॥
तवेद्दग्विधा या निजाकार मूर्तिः-
किमस्माभिरन्तर्हृदि ध्यायितव्या ॥१८॥

महाघोर कालानल ज्वालज्वाला-
हित्यत्यन्तवासा महाट्टाट्टहासा ॥
जटाभारकाला महामुण्डमाला-
बिशाला त्वदीद्दय मयाऽध्यायशऽम्ब ॥१९॥

तपो नैव कुर्वन् वपुः संदयामि,
व्रजन्नापि तीर्थे पदे खञ्जयामि,
पठन्नापि वेदान् चीनं यापयामि,
त्वदंघ्रिद्वय मङ्गलं साधयामि ॥२०॥

तिरस्कुर्वतोऽन्यामारोपासनार्चे,
परित्यक्तधर्माऽध्वरस्यास्य जन्तोः ॥
त्वदाराधनान्यस्त चित्तस्य किं मे,
करिष्यन्त्यमी धर्मराजस्य दूताः ॥२१॥

न मन्ये हरिं नो विधातारमीशं,
न वाह्निं न ह्यर्कं न चेन्द्रादि देवान् ॥
शिवोदीरितानेक वाक्यप्रबन्ध-
स्त्वदर्चाविधानं विशत्वम्ब मत्याम् ॥२२॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नरा मां विनिन्दन्तु नाम,
त्यजेद्बान्धवा ज्ञातयः सन्त्यजन्तु ॥
यमीयाभटा नारके पातयन्तु,
त्वमेका गतिर्मे त्वमेका गतिर्मे ॥२३॥

ओ३म् महाकाल रुद्रोदित स्तोत्रतत्,
सदाभक्तिभावेन यो ऽध्येति भक्तः ॥
न चापन्न शोको न रोगो न मृत्यु
र्भवेत् सिद्धिरन्ते च कैवल्यलाभ ॥२४॥

इदं शिवायाः कथितं सुधाधाराख्यं स्तवम् ।
एतस्य सतताभ्यासात् सिद्धिः करतले स्थिता ॥२५॥

एतत् स्तोत्रं च कवचं पदमे त्रितयसम्पदः ।
पठनीयं प्रयत्नेन नैमित्तिक समर्हणे ॥२६॥

सौम्येन्दीवरनीलनीरदघटा प्रोद्दामदेहच्छटा ।
लास्योन्माद निनादमङ्गल चयैः श्रोण्यन्तदोलज्जटा ॥
सा काली करवाल कालकलना हन्त्वश्रियं चंडिका॥२६॥

कालीक्रोध कराल कालभयदोन्माद प्रमोदालया,
नेत्रोपान्त कृपान्त दैत्य निवहा प्रोछाम दैहामया ॥
पायाद्वो जयकालिका प्रवलिका हुँकारधोरानना,
भक्तानामभयप्रदा विजयदा विश्वेशसिद्धासन ॥२७॥

करालोन्मुखी कालिका भीमकान्ता,
कटिव्याघ्र चर्माबृताः दानवान्ता ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हूँ हूँ कड्मंडीनादिनी कालिका तु,
प्रसन्ना सदा नः प्रसन्नान् पुनातु ॥२८॥

॥ इति श्री सुधाधाराख्य काली स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

❀ अथ् श्रीशान्तिस्तोत्र प्रारम्भः ❀

साधक को चाहिए कि सुधाधारा काली स्तोत्र के उपरान्त साधक श्री शान्ति स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ करे।

नस्यन्तु प्रेत कूष्माडा नस्यन्तु दूषका नराः ॥
साधकानां शिवा सन्तु आम्नायपरिपालनम् ॥१॥
जयन्तु मातरः सर्वा जयन्तु योगिनी गणाः ॥
जयन्तु सिद्ध डाकिन्यो जयन्तु गुरु पंक्तयः ॥२॥
नन्दन्तु अणिमासिद्धा नन्दन्तुभैरवादयः ॥
नन्दन्तुदेवताः सर्वाः सिद्ध विद्या धरादयः ॥३॥
ये चाम्नायविशुद्धायेमंत्रिणः शुद्ध बुद्धयः ॥
सर्वदा नन्द हृदयः नन्दन्तुमम भक्तिः ॥४॥
नक्षत्राणि ग्रहायोगाः करणाश्चं तथापरे ॥
सर्वेतु सुखिनो यान्तु सर्वानिन्दाश्चपक्षिणः ॥५॥
पशवस्तरवश्चैवपर्वता कन्दरा गुहा ॥
ऋषयो ब्राह्मणाः सर्वं शान्ति कुर्वन्तु मे सदा ॥६॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुभा मेदिवसायान्तामित्रास्तिष्ठन्तुमेसदा ॥
साधका जपिनः सन्तुशिवातिष्ठन्तुपूजका ॥७॥
ये ये चापधियाः स्वभूषणरत्ता सनिन्दका,
पूजने देवाचारविसर्गं नष्टहृदयादुष्टाश्चप्ये ॥
बान्धबा दृष्टा च क्रमपूर्वं जातहृदयोयैकालिका,
दूषका तैते यान्ति विनाशमंत्र समये श्रीभैरवस्याज्ञया॥८॥
द्वेष्टारः साधकानां च स देवाम् शाप दूषका ॥
डाकिनीनां मुखे यान्तु सर्वास्तापिशितैस्तुताः ॥९॥
शत्रवो नाश मायान्तु ममनिन्दा कराश्चये ॥
द्वेष्टारः साधकानां च विनश्यन्तु शिवाज्ञया ॥१०॥
येनिन्दकास्तेप्रलय प्रयान्तु के साधकास्तै-
प्रभबन्तु सिद्धा सर्वत्रदेवी करुणावलोकाः पुरः
परेशी ममसन्धिताँः

॥ इति श्री शान्ति स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

❀ श्रीकालिकाष्टक ध्यानं ❀

साधक को चाहिए कि मन को एकाग्र करके और मौन होकर श्री कालिकाष्टक स्तोत्र के उपरान्त नक्षत्र-माला व्याख्यान श्री काली स्तोत्र का पाठ करना चाहिये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गलद्रक्तमुण्डावलीकण्ठमाला,
महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला ।।
विवस्त्रा श्मशानालयामुक्तकेशी,
महाकालकामाकुला कालिकेयम् ।।१।।
भुजेवामयुग्मे शिरोऽसिं दधाना;
वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव ।।
सुमध्यापि तुङ्गस्तना भारनम्रा,
लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या ।।२।।
शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी,
लसत्प्रेतपाणिं प्रयुक्तैककाँची ।।
शवाकारमञ्चाधिरूढा शिवाभि-
श्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाभिरेजे ।।३।।

❀ स्तुति ❀

विरंच्यादिदेवास्त्रयस्ते गणास्त्रीम्,
समाराध्य कालीं प्रधाना बभूबुः ।।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।।१।।
जगन्मोहिनीयम् तु वाग्वादिनीयम्,
सुहृद्पोषिणी शत्रुसंहारणीयम् ।।
वचस्तम्भनीयम् किमुच्चाटनीयम्;
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ।।२।।
इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनोजास्तु कामान्यथार्थं प्रकुर्यात् ॥
तथा ते कृतार्था भवन्तीतिनित्य,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दति देवाः ॥३॥

सुरापान मत्ता सुभक्तानुरक्ता;
लसत्पूतचित्ते सदाविर्भवस्ते ॥
जपध्यान पूजासुधाधौतपंका,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्तिः देवाः ॥४॥

चिदानन्दकन्दं हसन्मन्दमन्दं,
शरच्चन्द्र कोटिप्रभापुञ्जबिम्बम् ॥
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतयन्तं,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः ॥५॥

महामेघकाली सुरक्तापि शुभ्रा,
कदाचिद्विचित्राकृतिर्योगमाया ॥
न बाला न बृद्धा द कामातुरारि,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दति देवाः ॥६॥

क्षमस्वापराधं महागुप्तभाव,
मयालोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत् ॥
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्,
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दति देवाः ॥७॥

यदि ध्यान युक्तं पठेद्योमनुष्य,
स्तदा सर्वलोकेबिशालोभवेच्च ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गृहे चाष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्ति-
स्वरूपं त्वदीय न विन्दन्ति देवाः ॥८॥

❀ इति श्री कालिकाष्टम् समाप्तम् ❀

❀ श्रीकाली स्तवन ❀

साधक को चाहिए कि श्री काली स्तवन का पाठ करने के उपरान्त मौन होकर शान्त चित्त द्वारा श्री महाकाली स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

नमामि कृष्ण रूपिणीं कृष्णाङ्गयष्टिधारिणीम्।
समग्रतत्वसागरमपारतत्वगह्वराम् ॥१॥
शिवाप्रभां समुज्जवलां स्फुरच्छशांकशेखराम्।
ललाटरत्नभास्करां जगत्प्रदीप्तिभास्कराम् ॥२॥
महेन्द्र कश्यपार्चितां सनत्कुसंस्तुताम्।
सुरासुरेन्द्रवन्दितां यथार्थ निर्मलाद्भुताम् ॥३॥
अतर्क्यरोचिर्र्जितां विकार दोष वर्जिताम्।
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितां विशेष तत्व सूचिताम् ॥४॥
मृतास्थिनिर्मितस्त्रजां मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम्।
सुशुद्धतत्वतोषणां त्रिवेदपारभूषणाम् ॥५॥
भुजङ्गहारहारिणीं कपालखण्डधारिणीम्।
सुधार्मिकौपकारिणीं सुरेन्द्रवैरिधातिनीन् ॥६॥
कुयारपाशचापिनीं कृतान्तकामभेदिनीन्।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शुभां कपालमालिनीं सुवर्णकल्पशाखिनीम् ॥७॥
श्मशानभूमि वासिनीं द्विजेन्द्रमौलिभाविनीम् ।
तमोऽन्धकारयामिनीं शिवस्वभावकामिनीम् ॥८॥
सहस्रसूर्यराजिका धनञ्जयोग्रकारिकाम् ।
सुशुद्ध काल कन्दलां सुभृङ्गवृन्दमञ्जुलाम् ॥९॥
प्रजायिनीं प्रजावतीं नमामि मातरं सतीम् ।
स्वकर्मकाररोगसिंहरिप्रियाङ्क पार्वतीम् ॥१०॥
अनन्तशक्तिकान्तिदां यशोऽर्थभुक्तिमुक्तिदाम् ।
पुनः पुनर्जगद्धितां नमाम्यहं सुरार्चिताम् ॥११॥
जयेश्वरि त्रिलोचने प्रसीद देविपाहिमाम् ।
जयन्ति ते स्तुवन्ति ये शुभलभन्त्यमोक्षतः ॥१२॥
सदैव ते हतद्विषः परं भवन्ति सज्जुषः ।
जराः परे शिवेऽधुनाप्रसाधिमां करोमिकिम् ॥१३॥
अतीव मोहितात्मनो वृथा विचेष्टितस्य मे ।
कुरु प्रसादितं मनो यथास्मि जन्म भंजनः ॥१४॥
तथा भवंतु तावका यथैव घोषितालकाः ।
इमां स्तुतिं ममेरितां पठंति कालिसाधकाः ॥
न ते पुनः सुदुस्तरे पतंतिमोहगह्वरे ॥१५॥

❀ इति श्री कालीस्यवः समाप्तम् ❀

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

।। अथ श्री महाकालीसूक्तम् ।।

साधक को चाहिये कि वह इतना पाठ करने के उपरान्त देवी काली माता का ध्यान करता हुआ काली स्तव का पाठ करने उपरान्त श्री महाकाली सूक्त का पाठ करता है, उसकी समस्त कामना पूर्ण होती हैं। इसके द्वारा जादू, टोना, मारण, उच्चाटन आदि अनेक प्रयोग किये जाते हैं।

❀ ॐ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता ❀

ॐ अस्य श्री महाकालीसूक्तस्य ॐ सदाशिव ऋषिः ।। ॐजगती छंदः ।।ॐश्रीमहाकाली देवता।।ॐऔं बीज ।। ॐ ह्रीं शक्तिः ।। ॐ स्वाहा कीलक ।। ॐ श्रीमहाली-प्रीत्यर्थं महाकालीसूक्त परायणे विनियोगः ।।

❀ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः षडंगन्यासः ❀

अथ् करन्तासः

ॐ ह्रां अ गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां वषट् ।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हूं ।
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां बौषट्।
ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अथ हृदयादिन्यासः

ॐ ह्लां हृदयाय नमः ॥
ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा ॥
ॐ ह्लूं शिखायै वषट् ॥
ॐ ह्लैं कवचाय हुम् ॥
ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥
ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ॥

॥ अथध्यानं ॥

ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

घोरां भीमपराक्रमांदशकरैः खड्गेशूलं गदां ॥
चक्रं पाशुभुशुंडिके च परशु चापं शिरो बिभ्रतीं ॥
वागींशां मधुकैटभ प्रमथिनीं प्रह्लार्तिहंत्री परां ॥
त्रिशल्लोचनमंडितां दशमुखीं वंदे महाकालिकम् ॥

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥१॥
ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

सदाशिव उवाच

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥२॥
ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

सुन्दरी त्रिपुरा कामा कामिनी साधकप्रिया ॥
अमोघसत्यवचना विमोहामोहरूपिणी ॥

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥३॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

अमृतेशी च कल्याणी कारुण्या करुणालया ॥
कलातीता कोमलांतः करणा विश्व नायिका ॥

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥४॥

ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

विघ्नकर्त्री विघ्नहर्त्री विघ्नेशी विघ्नयक्षिणी ॥
कामाख्या कामनिलया कामेशी मनमालिनी ॥

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥५॥

ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

त्रिखंडा यनिमुद्रा च धेनुमुद्रा च खेचरी ॥
पाशांकुशाद्राविणी च महिनी मदभंजिनी ॥

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥६॥

ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

मदप्रिया दुराध्या काला कालविनाशिनी ॥
काष्ठा कुलेशी कल्याणी सुकल्या कलयकारिणी ॥

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥७॥

ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

कोमलांगीविश्वमाता युगेशानी युगधरी ॥
ब्रह्मविष्णुमहेशानमोहिनी स्तंभिनीपरा ॥

ॐ ह्लीं ओं मः न ह्लीं ॐ ॥८॥

ॐ ह्लीं ॐ नमः ॐ ह्लीं ॐ

अमोघा सत्यसंकल्पा सत्यासत्य विनाशिनी ॥
सत्यग्रामा सत्यवहा सत्यवश्या जनप्रिया ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं ओं नमः ह्रीं ॐ ॥९॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ
शरीरवासिनी थासा निर्मदा वामदक्षिणा ॥
कपालकुंडला काली कालिका कालनाशिनी ॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१०॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ
गानप्रिया च गीतांगी सुगीता धर्मशालिनी ॥
विश्वयोनिर्विश्वमाता विश्ववद्या क्रियामयी ॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥११॥
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ
तुष्टाव वाग्भिर्दिव्याभिर्महाकालीं महेश्वरः ॥
वेदवाणीं सुतत्वाभिर्लोकानां हितकाम्यया ॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१२॥
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ
सदाशिवउवाचभिर्लोकानां हितकाम्यया ॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१३॥
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ
शिवात्मकन्यां विविध प्रभावां कालीं कलामालिनी
कमालिनीं विश्ववंद्याम् ॥
कपालखट्वांगधरां नृमुंडमालाविभीषां मृगचर्मशोभाम् ॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१४
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुशुष्कमांसांचशवासनस्थांविभीषणांभीषयंतींसुरारीन्॥
रक्तप्रियां मांसमदाविपूर्णां कालींशरण्यांशरणं ब्रजामि॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१५॥
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ

सुधोरवीजं च कपीश्वरश्च चिंतामणिः कुब्जिककामरूपे॥
विद्यासु विद्यासुच कामराजंकामःकलामालिनीकालराजं॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१६॥
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ

वह्नेवधुर्मन्त्रराजोयमीशो विश्वं पुनानीश्वरि देवि वंद्ये॥
मन्त्रेण चानेन सिध्यंति सर्वाः सुसिद्धयः सर्वजगन्निवासे॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१७॥
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ

पंचारयुग्मं च त्रिकोणयुग्मं पुनश्च पंचारयुगेन बद्धम्॥
कलाप्रकोष्ठं किलभूगृहं च यंत्रेश्वरं ते च पदाब्जवासम्॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१८
ॐ ,, ॐ नमः ॐ ,, ॐ

संपूज्य यंत्रं तव विश्वनायिके निष्पापिनस्ते सहसा भवंति॥
ये साधकास्तव मार्गानुसारिणः कुलानुवृत्या परमाः पवित्राः॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥१९॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्धिर्ऋद्धि च योनुगम्यां नृणां वशीकृत्यभवन्ति
भूपा ॥
स्तमंत्रेण विधाय चांगं न्यासादिकं भक्तिसुभावयुक्ताः॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥२०॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ
किंकरीकृत्य गृणंति देवानित्से जगत्येकविभूतियुक्ते ॥
वदामि चान्य न श्रृणोमि चान्यं न गृणामि चान्यं
न विचिंतयामि ॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥२१॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ
स्मरामि चान्यं न भजामि चान्यं न ध्यायामि चान्यं
न वितर्कयामि ॥
गायामि चान्यं तव पादमंत्रात्वां विश्वयोनिं शरणं
प्रपद्ये ॥
ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥२२॥
ॐ ह्रीं ओं नमः ओं ह्रीं ओं
ऋषिरुवाच चान्यं तव पादमंयात्वां विश्वयोनिं शरणं
प्रपद्ये ॥
ॐ ह्रीं ओं नमः ह्रीं ॐ ॥२३॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ
इतिवाक्यं समाकर्ण्य परमामृतसन्निभम् ॥
प्रसन्नाभून्महाकाली व्रियतामीप्सितो वरः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥२४॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ

इत्युक्त्वा च विशालाक्षी शंभोरानंददायिनी ॥
प्रसन्ना परमाह्लादसंयुता शिवभाषणात् ॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥२५॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ

श्री देव्युवाच संयुता शिवभाषणात् ॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ

व्रियतां मनसोऽभीष्टो वरो जगति दुर्लभः ॥
दास्याम्यद्यांभिदालब्धां तव स्तुत्या वशी कृता ॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥२६॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ

सदाशिव उवाच तव स्तुत्या वशीकृता ॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥
ॐ ह्रीं ॐ नमः ॐ ह्रीं ॐ

कुलाचारेण ते देवि मतिर्मास्तु कदाचन ॥
शिथिला देवदेवेशि सूक्तं च सफलं तव ॥

ॐ ह्रीं ओं मः न ह्रीं ॐ ॥२७॥
ॐ ह्रीं ओं नमः ओं ह्रीं ओं

श्री देव्युवाच

ओं ह्रीं ओं मः न ह्रीं ओं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ओं ह्रीं ओं नमः ओं ह्रीं ओं
शृंणुध्वं प्रीतिसंयुक्ता ब्रह्मविष्णु महेश्वराः ॥
देवी सूक्त परं ध्यायन् भविष्यतिवरार्थदम् ॥
ओं ह्रीं ओं मः न ह्रीं ओं ॥२८

❀ ओं ह्रीं हूँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रीं क्लीं स्वाहा ❀

❀ इति महाकाली सूक्तम् सम्पूर्णम् ❀

—❀—

अथोपनिषद्

साधक को चाहिये कि जब वह श्रीमहाकाली सूक्त का पाठ करले तब कालिकोपनिषद् का पाठ करना चाहिये।

अथ हैनाम्ब्रह्मरन्ध्रे ब्रह्मस्वरूपिणी माप्नोति सुभगां कामरेफेन्दिरां समष्टिरूपिणीमादौ तदन्वकतुं बीजद्वयकूर्च्चबीजन्तद्धोमषष्ठस्वरबिन्दुमेलनरूपन्तदनुभुवनाद्वय भुवनातु व्योमज्वलनेन्दिराशून्यमेलनरूपादक्षिणे कालिके वेत्यभिमुखंङ्कृता तदनुबीज सप्तकमुच्चार्यबृहद्भानुजायामुच्चरेत्।

अयं सर्वमन्त्रोत्तमोत्तम इमं सकृज्जपन् सतु विश्वेश्वरः स तु नारीश्वरः स तु वेदेश्वरः स सर्व्वगुरुः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वनमस्यः सर्वेषु वेदेष्वधिश्रितो भवति स सर्वेषु तर्थेषु स्नातो भवति सर्वेषु यज्ञेषु दीक्षितोभवति स स्वयं सदाशिवः। त्रिकोणन्त्रिकोणन्त्रिकोणम्पुनश्चैवन्त्रिकोणन्त्रिकोणन्ततो वसुदलं सद्वं चन्द्रकेसरयुग्मशो विलिख्य सम्भूतम्भूपुरकेन युतं सर्वज्ञेनाऽभ्यच्र्य तस्मिन्देवीदले रेखायां विन्यस्य ध्येया अभिनवजलदवदनाघनस्तनी-कुटिलदंष्ट्रा शवासना वराभयखड्गमुण्डमण्डितहस्ता कालिकाध्येया कालीकपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी विप्रचित्तेति षट्कोणगाः, उग्राः, उग्रप्रभादीप्ता-नीलाघना बलाकामात्रामुद्रा मितेति नवकोणगाः इत्थम्पञ्चदशकोणगाः।

ब्राह्मी नारायणी माहेश्वरी चामुण्डा कौमारी-अपराजिता वाराहीनारसिंहीत्यष्टपत्रगाः।

चतुष्कोणगाश्चत्वारो देवाः माधवरुद्रविनायकसौरः। चतुर्दिक्षु इन्द्रयमवरुणकुबेराः।

देवीं सर्वाङ्गेनाऽऽदौ सम्पूज्य भगोदकेन तर्पणम्पञ्चमकारेण पूजनमेतस्याः सपर्यायाः किमधिकन्नो शक्यम्ब्रह्मादिपदं हेयं हेलया प्राप्नोति।

एतस्या एकद्वित्रिक्रमेणमनवो भवन्ति नारिमित्रादि-लक्षणमत्रवर्त्तते। अमुष्यमन्त्रपाठकस्यगतिरस्ति नान्यस्येहगतिरस्ति।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एतस्यास्ताराभनोर्दुर्गामनोर्वा सिद्धिः ! ।

इदानीन्तु सर्वाः स्वप्नभूता असितैव जागर्तिइमाम-सिताङ्गाकुपनिषदं यो वाऽधीते सोऽपुत्रः पुत्री भवति निर्द्धनो धनाधतिधर्मार्थकाममोक्षाणाम्पात्रीयति ।

अन्यस्य वरदः दृष्टा जगन्मोहयतिक्रोधस्तञ्जहाति गङ्गादितीर्थ क्षेत्राणाञ्ग्निष्टोमादि यज्ञानां फलभागीयति ।

❀ इति कालिकोपनिषत् समाप्ता ❀

सामान्य पूजा विधि

साधक को सर्व प्रथम सामान्य रूप से प्रातः कृत्यादि करके काली मन्त्र द्वारा आचमन करें ।

क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ॐ आत्मतत्वाय नमः स्वाहा ।
दक्षिणे कालिके ॐ विद्या तत्वाय नमः स्वाहा ।
क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॐ शिव तत्वाय नमः स्वाहा ।
क्रीं क्रीं क्रीं हु हु ह्रीं ह्रीं दक्षिण्ञे-ॐ सर्व तत्वाय नमः स्वाहा ।
कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

साधक को इस मन्त्र से दोनों ओष्ठों का दो बार मार्जन करना चाहिये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१—ॐ कालयै नमः ।

२- ॐ कपालयै नमः ।

तदुपरान्त-

ॐ कुल्यायै नमः ।

साधक को इस मंत्र से हस्त प्रक्षालन करना चाहिये ।

ॐ कुरु कुरु कुल्यायै नमः ।

साधक इस मन्त्र से मुखशुद्धि करे ।

ॐ विरोधिन्यै नमः ।

साधक को इस मन्त्र से दक्षिण कालिका को

ॐ विप्रचितायै नमः ।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा वाम नासिका को स्पर्श करना चाहिये ।

ॐ उग्रायै नमः ।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा दक्षिण नेत्र स्पर्श करना चाहिये ।

ॐ उग्रप्रभायै नमः ।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा वाम नेत्र का स्पर्श करना चाहिये ।

ॐ दीप्तायै नमः ।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा दक्षिण कर्ण का स्पर्श करना चाहिये ।

ॐ नीलायै नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक को इस मन्त्र के द्वारा वाम कर्ण का स्पर्श करना चाहिये।

ॐ घनायै नमः।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा नाभि का स्पर्श करना चाहिये।

ॐ बलाकायै नमः।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा छाती का स्पर्श करना चाहिये।

ॐ मात्रायै नमः।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा मस्तक का स्पर्श करना चाहिये।

ॐ मुद्रायै नमः।

साधक को इस मन्त्र के द्वारा दाएं कन्धे का स्पर्श करना चाहिये।

तथा

ॐ नित्यायै नमः।

साधक को इस नित्या मन्त्र के द्वारा बायें कन्धे का स्पर्श करना चाहिये।

साधक जब इस प्रकार आचमन करले, तब सामान्य पूजा पद्धति के अनुसार नियम पूर्वक भूत-शुद्धि तक का कार्य करने के उपरान्त साधक को चाहिये कि मां काली बीज 'क्रीं' के द्वारा साधक को यथाविधि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्राणायाम करना चाहिये। जब प्राणायाम करले, तब साधक को यथा विधि ऋष्यादिन्यास करें। ऋष्यादिन्यास विधि इस प्रकार से आगम और निगमादिकों में वर्णित है।

ऋष्यादिन्यास

विनियोगः

अस्य मन्त्रस्य भैरव ऋषि, रुष्णिकछन्दो दक्षिण कालिका देवता ह्रीं बीज हूं शक्तिः क्रीं कीलकं पुरुषार्थं सिद्धयर्थं विनियोगः ॥

'काली' तन्त्र मे लिखा हुआ है कि आदि बीज का कीलक चतुर्वर्ग के फल प्राप्त को कराने वाला है।

कीलक की विधि इस प्रकार है–

शिरसि भैरव ऋषये नमः।

मुखे उष्णिकछन्द से नमः।

हृदि दक्षिण कालिकायै देवतायै नमः।

गुह्ये ह्रीं बीजाय नमः।

पादयोः हूं शक्तये नमः।

सर्वाङ्गे क्रीं कीलकायै नमः।

इसके उपरान्त साधक को चाहिये कि कराङ्गन्यास करे। 'कालीतन्त्र' में उल्लिलित करांगन्यास के सम्बन्ध यह कहा गया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंगन्यास करन्यासौ यथावदभिधीयते ।
भैरबोऽस्य ऋषिः प्रोक्त उष्णिकछन्द उपाहृतम् ।।
देवता कालिका प्रोक्ता लज्जा बीजं तु बीजकम् ।
कीलकं चाद्य बीजंस्याच्चतुर्वर्ग फल प्रदम् ।।
शक्तिश्च कूर्चबीस्यादनिरुद्धा सरस्वती ।
कवित्वार्थो विनियोग स्यादित्यादि तेन मायया ।।
षड्दीर्घमात्राबीजेन प्रणवाद्येन कल्पयेत् ।

इसके उपरान्त साधक को 'वीरतन्त्र' में उल्लखित करांगन्यास की विधि के अनुसार न्यास करना चाहिये ।

करांगन्यास की विधि

ॐ ह्राँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।।
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् ।
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां हुम् ।
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।
ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् ।

साधक को चाहिए कि वह इस प्रकार से करन्यास करने के उपरान्त ॐ हृदयाय नमः इत्यादि क्रम के अनुसार अंगन्यास करे ।

अथवा

ॐ क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।

ॐ क्रं मध्यमाभ्यां वषट् ।

ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां हुम् ।

ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।

ॐ क्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां फट् ।

इस क्रम के अनुसार 'क' वर्ण में दीर्घस्वर मिलाकर कराङ्गन्यास करना चाहिये ।

साधक को चाहिये कि वह कराङ्गन्यास करने के उपरान्त वर्णन्यास करे । साधक प्रेमी जनों के लिये चाहिये कि वर्णन्यास २ की विधि के अनुसार करें । वर्णन्यास की विधि का इस प्रकार उल्लेख करते हैं । जो तन्त्र शास्त्र में जगह-जगह देखने को प्राप्त होता है ।

वर्णन्यास

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं नमः इति हृदये ॥

एं ऐं ओं औं अं अः खं गं घं नमः इति दक्षिबाहौ ॥

ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः इतिवामबाहौ ॥

णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः इति दक्षिणपादे ॥

मं यं रं लं बं शं वं सं हं क्षं नमः इतिवामपादे ॥

साधकों के लिए चाहिये वह 'विरूपाक्ष' के मतानुसार सबिन्दुरीति (अर्थात् अं, आंञादि) । के द्वारा वर्णन्यास करना चाहिए ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ इँ चँ छँ जँ झँ ञँ ईं तर्जनीभ्याँ नमः ।
ॐ उँ टँ ठँ डँ ढँ णँ ॐ मध्यमाभ्याँ नमः ।
ॐ एँ ताँ थँ दँ धाँ नँ ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्याँ नमः ।
ॐ अं यं रं लां वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादिषडङ्गन्यासा

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः ।
ॐ इं चं छं जं झं ञां ईं शिरसे स्वाहा ।
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ॐ शिखायै वषट् ।
ॐ एं तं थं दं नं ऐं कवचाय हुम् ।
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय बौषट्
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लाँ क्षं अः अस्त्राफट् ।

ध्यानम्

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभज्य मुखदोर्हृत्पद्म वक्षः स्थनाँ

भास्वन्मौलिनिबद्ध चन्द शकला मापीन तुङ्ग स्तनीम् । मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विजा च हस्ताम्बुजै र्विभ्राणां विशदप्रभा त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ।।

कण्ठस्थषोडशदलपद्मे अंकारादिषोडशस्वरान्न्यसेत् ॐ अं आं इं ईं उं ॐ ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हृदयथे द्वादशदलपद्मे कादिठान्तान्न्यसेत्
ॐ कँ खं गँ घँ ङ चं छँ जँ झं ञ टँ ठँ।

नाभौदशदलपद्मे ड डिफातान्न्यसेत्

ॐ डँ ढँ णं तँ थँ दँ धं नँ पँ फं

ॐ बँ भं मँ यँ रं लँ

तदधःलिङ्गषड्दलेबादिलान्तान्न्वसेत्

आधारेगुदे चर्दले वादिसान्तान्न्यसेत्

ॐ वं शं षं सं।

ललाटे द्विदले।

ॐ हं क्ष इति द्वौ वर्णौ विन्यसेत्।

ध्यानम्

आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटित हृदये तालुमूले ललाट द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के वासान्ते बालमध्ये डफ कठ सहिते कण्ठदेशे स्वरणां हं क्षं तत्वार्थयुक्त सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥

बन्धूकाभाँ त्रिनेत्राँ पृथुजघनल सत्कुक्षिमुद्रक्तवस्त्राँ पीनो तुङ्गप्रवृद्धस्तनजघनभराँ यौवनारम्भ रुढाम् ॥

सर्वालङ्कार युक्तो सरसिजवदनामिन्दु सङ्क्रान्त मोलि हयम्बां पाशाङ्क शेष्टाभयवरद कराम्बिकाँतां नमामि ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथा

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ॐ आत्मतत्वाय स्वाहा।

साधक को चाहिए कि इस मन्त्र द्वारा चरणों से लेकर नाभि पर्यन्त न्यास करे।

दक्षिणे कालिके ॐ विद्यातत्वाय स्वाहा।

साधक को चाहिए कि इस मन्त्र द्वारा नाभि से लेकर हृदय पर्यन्त न्यास करे।

क्रीं क्रीं क्रींहूं हूं ह्रींह्रीं स्वाहा ओमशिव तत्वाय स्वाहा।

साधक को चाहिए कि मन्त्र द्वारा हृदय से लेकर मस्तक पर्यन्त न्यास करना चाहिए।

बीजन्यास

साधक को चाहिए कि जब वह तत्वन्यास पूर्ण विधि के साथ करले, तब उसे बीजन्यास करना चाहिए।

यथा

ब्रह्मरन्ध्र में-क्रीं नमः
भ्रूं मध्य में-ह्रीं नमः
ललाट में-क्रीं नमः
नाभि में-हूं नमः।
गुह्य में-हूं नमः।
मुख में-ह्रीं नमः।
सर्वाङ्ग में-ह्रीं नमः।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक के लिए पूर्वोक्तमहाषोढ़ान्यास, तत्वन्यास और बीज न्यास ये तीनों ही न्यास 'काम्य' हैं अर्थात् नित्य पूजा में इन तीनों प्रकार के न्यासों को बिना किए भी पूजा अङ्गहीन नहीं होती।

॥ अथ अन्तर्मातृकान्यास प्रयोगः ॥

अस्य श्री अन्तर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः देवी गायत्रीच्छन्दः अन्तर्मातृका सरस्वती देवता हलाःबीजानि स्वराः शक्तयः बिन्दवः कीलकम् अनुष्ठीयमान श्रीपूजनः पूर्वक श्रीमहाकालीरुद्राभिषेककाङ्गत्वेन न्यासे विनियोग श्री दक्षिण कालिकाङ्ग त्वेन

ऋष्यादिन्यासाः

ॐ ब्राह्मणे नमः। शिरसि।
ॐ गायत्रीच्छन्द से नमः। मुखे।
ॐ अन्तर्मातृकासरस्वती देवतायै नमः हृदि
ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः। गुह्ये।
ॐ स्वरेभ्योशक्तिभ्यो नमः। पादयो।
ॐ बिन्दुभ्यकीलकाय नमः। सर्वांग॥

प्राणायाम त्रयं कृत्वा–

करन्यासाः

ॐ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आँ अंगुष्ठाभ्यां नमः!

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वारा समस्त मातृकावर्णों को संपुटित करके मातृका-वर्ण द्वारा 'ह्रीं' इस बीज को संपुटित करके सब स्थानों में साधक को न्यास करना चाहिये ।

यथा

ललाट में-ह्रीं अं ह्रीं नमः ।
मुख में-ह्रीं आँ ह्रीं नमः । इत्यादि ।
ललाट में-अं ह्रीं अं नमः ।
मुख में-आं ह्रीं आँ नमः । इत्यादि ।

साधक को चाहिए कि इसके उपरान्त ललाट में-'क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं लॄं क्रीं क्रीं नमः 'इत्यादि तथा ललाट में ऋं ॠं लृं लॄं क्रीं क्रीं ऋं ॠं लृं लॄं नमः ।

साधक को इस क्रम के द्वारा मातृका स्थान में न्यास करना चाहिये ।

साधक को इसके उपरान्त मूलमन्त्र द्वारा मातृका वर्ण को संपुटित करके तथा मातृकावर्ण द्वारा मूल-मन्त्र को सम्पुटित करके साधक लोग पूर्वोक्त स्थान में न्यास कार्य को किया करते हैं ।

यथा

ललाट में क्रीं अं क्रीं नमः
मुख में-क्रीं आँ क्रीं नमः । इत्यादि ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक को भी इसी तरह से अनुलोम तथा विलोम न्यास करके मूलमन्त्र द्वारा १०८ बार 'व्यापक' न्यास करना चाहिए।

इस तरह से 'महाषोढान्यास' करने पर समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

तत्वन्यास

साधक जब महाषोढ़ा न्यास करले, उसके पश्चात् साधक के लिए चाहिए कि वह 'तत्वन्यास' करे तत्व न्यास की विधि इस प्रकार से तन्त्रग्रन्थों उल्लेखित है। पूर्वोक्त काली आद्या का मन्त्र बाईस अक्षर का है। आद्या काली पूर्वोक्त मन्त्र जो बाईस अक्षर का है। उसे तीन भागों में विभक्त करले।

पहले खण्ड में सात अक्षर होने चाहिए।
दूसरे खण्ड में छः अक्षर होने चाहिए।
तीसरे खण्ड में नौ अक्षर होने चाहिए।

पहले खण्ड के अन्त में ॐ आत्मतत्वाय स्वाहा कहकर न्यास करना चाहिए।

दूसरे खण्ड के अन्त में ॐ विद्या तत्वाय स्वाहा कहकर न्यास करना चाहिए।

तीसरे खण्ड के अन्त में ॐ शिवतत्वाय स्वाहा कहकर न्यास करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और 'काली' तन्त्र के क्रमानुसार निर्बिन्दु रीति (अर्थात् अआ आदि के) द्वारा वर्णन्यास करना चाहिये।

परन्तु साधक चाहे तो सबिन्दु-न्यास करे अथवा निर्बिन्दु करे। दोनो हीं रीति साधक के लिये युक्ति संगत हैं।

अर्थात फलदायिनी हैं। अब साधक के ऊपर निर्भर करता है कि वह सबिन्दु न्यास करता है, या निर्बिन्दु-न्यास करता है।

महाषोढ़ा न्यासः

साधक को चाहिए कि वर्णन्यास करने के बाद में महाषोढा न्यास करना चाहिए।

'वीर तन्त्र' में उल्लेखित किया गया है।

साधक को पहले केवल मातृकान्यास करना चाहिए फिर मातृकान्यास के उपरान्त दुबारा समस्त मातृका वर्णों को 'ॐ' इस मन्त्र से संपूटित करके मातृकान्यास के स्थान में न्यास करना चाहिए और मातृकावर्णद्वारा ॐ' इस मन्त्र को संपृटित करके साधक को न्यास करना चाहिए।

यथा

ललाट में–ॐ अं ॐ नमः।

मुख में–ॐ आँ ॐ नमः। इत्यादि।

ललाट में–अं ऊँ आँ नमः।

मुख में–आँ ॐ अं नमः। इत्यादि।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साधक को चाहिये कि तत्पश्चात् श्रीं बीज श्रीं वर्ण द्वारा समस्त मातृकावर्णों को संपुटित करके उसी तरह मातृकान्यासोक्त स्थान में न्यास करना चाहिए। और समस्त मा तृकावर्णो द्वारा इस 'श्रीं' बीज को संपुटित करके पूर्ववत् न्यास करना चाहिए।

यथा

ललाट में–श्रीं अं श्रीं नमः।
मुख में–श्रीं आँ श्रीं नमः। इत्यादि
ललाट में–अं श्रीं अं नमः।
मुख में–आँ श्रीं आं नमः। इत्यादि।

साधक को तदुपरान्त काम बीज क्लीं के द्वारा समस्त मातृकावर्णोंको संपुटित करके मातृकान्यास के स्थान में तथा मातृकावर्ण द्वारा काम बीज क्लीं को संपुटित करके पूर्ववत् साधक को न्यास करना चाहिए

यथा

ललाट में-क्लीं अं क्लीं नमः।
मुख में-क्लीं आँ क्लीं नमः। इत्यादि।
ललाट में-अं क्लीं अं नमः।
मुख में-आँ क्लीं आँ नमः। इत्यादि।

साधक को चाहिए इसी प्रकार शक्तिबीज 'ह्रीं'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्णाङ्गवर्ण मालाङ्गीं भारतीं भाललोचनाम् ।
रत्नसिंहासनां देवीं वन्देऽहं सिद्धमातृकाम् ॥

॥ इति अन्तर्मातृकान्यास प्रयोगः ॥

॥ अथ बहिर्मातृकान्यास प्रयोगः ॥

अस्य श्री बहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्री च्छन्दः बहिर्मातृका सरस्वती देवता हलोः बीजानिस्वराः शक्तयः बिन्दवः कीलकम् अनुष्ठीयमान श्री पूजनपूर्वक श्री दक्षिणकालिका ङ्गत्वेनन्यासे विनियोगः

ऋष्यादिन्यासाः

ॐ ब्रह्मणे नमः । शिरसि ।
ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः । मुखे ।
ॐ बहिर्मातृका सरस्वती देवतायै नमो । हृदि ।
ॐ हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः । गुह्ये ।
ॐ स्वरेभ्योः शक्तिभ्यो नमः । पादयोः ।
ॐ बिन्दुभ्यो नमः सर्वाङ्गे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ अँ नमः । मौलौ ।

ॐ आँ नमः । मुखबृत्ते ।

ॐ इँ नमः । दक्षिणनेत्रे ।

ॐ ईँ नमः । वामनेत्रे ।

ॐ उँ नमः । दक्षिणकर्णे ।

ॐ ऊँ नमः । वामकर्णे ।

ॐ रिषं नमः । दक्षिणनासापुटे ।

ॐ रिषं नमः । वामनासापुटे ।

ॐ लृँ नमः । दक्षिकपोले ।

ॐ लॄँ नमः । वामकपोले ।

ॐ एँ नमः । ऊर्द्ध्वंदन्तपङ्क्तौ ।

ॐ ऐं नमः । अधोदन्तपङ्क्तौ ।

ॐ ओं नमः । ऊर्ध्वोष्ठे ।

ॐ औं नमः । अधरोष्ठे ।

ॐ अँ नमः । जिह्वामूले ।

ॐ अँ नमः । ग्रीवायाम् ।

ॐ क्रँ नमः । दक्षिणवाहुमूले ।

ॐ खँ नमः । दक्षिणकूपूरे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ गँ नमः । दक्षिणमणिबन्धे ।

ॐ घँ नमः । दक्षिणकराङ्गलिमूले ।

ॐ ङँ नमः । दक्षिणेकराङ्गल्यग्र ।

ॐ चं नमः । वामबाहुमूले ।

ॐ छं नमः । वामकूर्परे ।

ॐ जं नमः । वाममणिबन्धे

ॐ झं नमः । वामाङ्गुलिमूले ।

ॐ ञं नमः । वामकराङ्गल्ग्रे ।

ॐ टं नमः । दक्षिणपादमूले ।

ॐ ठं नमः । दक्षिणजानुनि ।

ॐ डं नमः । दक्षिणगुल्फे ।

ॐ ढं नमः । दक्षिणपादाङ्गुलिमूले

ॐ णं नमः । दक्षिणपादाङ्गल्ग्रे ।

ॐ तं नमः । दामपादमूले ।

ॐ थं नमः । बामजानुनि ।

ॐ दं नमः । वाम गुल्फे ।

ॐ धं नमः । वामपादाङ्गलिमूले ।

ॐ नँ नमः । वामपादाङ्गुल्ग्रे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

४. साधक चाहे तो विद्वेषण प्रयोग घोड़े की चर्म का आसन लगाकर विद्वेषण प्रयोग सिद्ध करे।

५. अगर किसी का मारण प्रयोग करना हो तो उसमें 'महर्षि' चर्म का आसन प्रयोग करे।

६. मोक्ष प्राप्ति के लिये अगर कोई प्रयोग करें तो उसे उस समय 'गज' चर्मासन का प्रयोग करना चाहिए। ये सब आसन तुरन्त लाभ प्रदान करते हैं।

॥ अथ् काली मातृकान्यासः ॥

ॐ अस्य श्री दक्षिण कालिका न्यासस्य भैरवऋषिः उष्णिक् छन्दः । श्री दक्षिण कालिका देवता श्री दक्षिण कालिका न्यासे विनयोग, ॥

ॐ भैरव ऋषये नमः । शिरसि ।

ॐ उष्णिकछन्दसे नमः मुखे ।

ॐ दक्षिण कालिकायै नमः हृदये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ क्रुं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ क्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः ।
ॐ क्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ क्रां हृदयाय नमः ।
ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ क्रूं शिखायै वषट् ।
ॐ क्रैं कवचाय हुँ ।
ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ क्रः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

शवारुढ़ां महाभीमाघोर दंष्ट्रां हसन्मुखीम् ।
चतुर्भुजां खड्ग मुन्ड वराभयं करैर्युताम् ।
मुन्ड मालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम् ।
एवं संचितयेत्कालींश्मशानालय वासिनीम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ गुरु मंडल ध्यात्वा ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं काल्यै नमः । शिरसि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं कपालिन्यै नमः । मुखवृत्ते ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं कुल्लायै नमः । दक्षनेत्रे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं कुरुकुल्लायै नमः । वामनेत्रे
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं विरोधिन्यैं नमः । दक्षकर्ण ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं विप्रचित्तायै नमः । वामकर्णे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं उग्रायै नमः । दक्ष नासाभ्यां
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रिषं उग्रप्रभायै नमः । वाम नासाभ्यां
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लृं दीप्तायै नमः । दक्ष गण्डे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लॄं नीलायै नमः । वाम गण्डे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं घनायै नमः । उत्तरोष्ठे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं बलाकायै नमः । अधरोष्ठे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं मात्रायै नमः । ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं मुद्रायै नमः । अधः दन्तपंक्तौ
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं मितायै नमः । जिह्वायाम् ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः ब्राह्मयै नमः । कण्ठे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं नारायण्यै नमः । दक्ष स्कंधे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं खं माहेश्वर्यै नमः। दक्ष कर्पूरे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गं कौमार्यै नमः। दक्ष मणिबंधे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं घं चामुण्डायै नमः। दक्षांगुलमूले।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ङं अपर जतायै नमः दक्षअंगुल

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं चं वाराह्यै नमः। वामस्कन्धे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छं नारसिंह्यै नमः। वामकूर्परे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं भैरव्यै नमः। वाममणि बन्धे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं झं महाभैरव्यै नमः। वामकरां-गुलि मूले।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जं सिंह भैरव्यै नमः। वामकरांगुलिअग्रे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं टं क्रोध भैरव्यै नमः। दक्ष पादमूले।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ठं उन्मत भैरव्यै नमः। दक्ष जानुनि।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं डं धूम्रभैरव्यै नमः। दक्ष गुल्फे।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ढं वशीकरण भैरव्यै नमः। दक्ष पादमूलें।

ॐ ऐं ह्रीं श्री णं मोहनभैरव्यै नमः। दक्ष पाद-गंल्यग्रें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं तं दुन्द्रदेत्यै नमः । वाम पादमूले ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं थं आग्नेय्यै नमः । वाम जानुनि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दं याम्यै नमः । वाम गुल्फे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धं नैऋत्यै नमः । वामपादांगुलिमूले ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नं वायव्यै नमः । वामापादांगुल्यग्रे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं वारुण्यै नमः । दक्षकुक्षौ ।
ॐ ऐं ह्रीं फं नमः । कुबेरायये नमः । वामकुक्षौ ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बं ईषान्यै नमः । पृष्ठे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं ब्रह्मरुपायै नमः । नाभौ ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मं अनन्तायै नमः । जठैर ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं वज्रायै नमः । हृदये ।
ॐ ऐं श्रीं रं शक्तये नमः । दक्ष स्कंधे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं दण्डये नमः । ककुक्षि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वं खड्गाय नमः । बामस्कंधे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं पाशाय नमः । दक्षहस्ते ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं अ कुशाय नमः । बामहस्ते ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं गदायै नमः । दक्षपादे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं त्रिशूलाय नमः । वामपादे ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं चक्राय नमः । कट्याधाय ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं पद्माय नमः । कटिऊर्ध्व भागे ।

॥ इति दक्षिणकालिका न्यासः सम्पूर्णः ॥

॥ मन्त्र जप प्रयोगः ॥

ॐ अस्य श्री दक्षिण कालिका मन्त्रस्य भैरव ऋषिः उष्णक् छन्दः । श्री दक्षिण कालिका देवता बीजं हुं शक्ति ह्रीं कीलकम् । श्री दक्षिण कालिका प्रीत्यर्थे जपेविनियोगः

अथ् ऋष्यादिन्यासः

श्री भैरव ऋषये नमः । शिरसि ।
श्री उष्णिक् छन्द से नमः । मुखे ।
श्री दक्षिण कालकायै नमः । हृदये ।
श्री क्रीं बीजाय नमः । गुह्ये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीं हूँ शक्तये नमः । पादयो ।
श्रीं ह्रीं कीलकाय नमः । नाभौ ।

❀ अथ् करन्यासः ❀

ओं क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ क्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः ।
ॐ क्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

❀ अथ् हृदयादिन्यासः ❀

ॐ क्रां हृदयाय नमः ।
ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ क्रूं शिखायै वषट् ।
ॐ क्रैं कवचाय हुम् ।
ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ क्रः अस्त्राय फट्

❀ ध्यानम् ❀

सद्यश्छिन्न शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीम् ।
घोरास्यां शिरसासृजासुरु चिरामुन्मुक्तकेशावलिम् ।
सृक्कसृग प्रवहांश्मशान निलयां श्रुत्यः शवालंकृतिम् ।
श्यामांगी कृत मेखलां शवकरै र्देवीं भजेकालिकाम् ॥

॥ मंत्र ॥

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं स्वाहा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ मुखशुद्धि ॥

❀ आद्या-काली ❀

मन्त्र—क्रीं हूँ ह्रीं ओं ओं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं

॥ अथ श्री दक्षिण कालिका खड्ग माला ॥

ॐ अस्य श्री दक्षिण कालिका खड्ग माला मन्त्रस्य भगवान् महाकाल ऋषिः । उष्णिक् छन्दः । शुद्धककारत्रय श्रीभट्टारक महाकालेश्वरांक निलया श्री महाकाली देवता ह्रीं बीजं हूँ शक्तिः । क्रीं कीलकम् । श्री दक्षिण कालि का देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

मूलेन प्राणायामयं कृत्वा ऋष्यादि षडंग विधाय—क्रां क्रीं क्रूं क्रौं क्रः ।

॥ ध्यानम् ॥

सद्यश्छिन्न शिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीम्, ।
घोरास्यां शिरसासृजासुरूचिरामुन्मुक्तकेशावलिम् ॥
सृक्वयस्त्रक् प्रवहां श्मशान निलयां श्रुत्योः शवालं कृतिम् ।
श्यामाँगीकृत मेखला शवकरैः देवीं भजे कालिकाम् ॥

मानसोपचारैः संपूज्य आवाहनादि मुद्रां प्रदर्श्य ।
शरीरँ चिन्तयेदादौनिज श्रीं चक्ररूपकम् ।
त्वगाद्याकार निर्मुक्तं ज्वलत्कालाग्नि सन्निभम् ।
वैन्दवं ब्रह्म रँध्रस्यात् मस्तके च त्रिकोणकम् ॥
पुनः त्रिकोणँ भ्रूमध्ये कँठमध्ये त्रिकोणकम् ।
पुनस्त्रिकोण हृदये त्रिकोणँ मणिपूरके ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वाधिष्टानेऽष्टारपत्रं मूलाधारं च भूपुराम् ।
एवं क्रमेण ध्यात्वा शपूजा वर्णं यथा विधि ।।

मंत्रराजमिदं प्रोक्तं चक्र शिवयोर्वपुः ।
तादृशं खड्गं माप्नोतियेन हस्तस्थिते नवे ।।
अष्टादश महाद्वीप सम्राट् भोक्ता भविष्यति ।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा हृदय देविसिद्ध कालिका मयी श्री पादुकाँ पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ओं सिरोदेवि महाकालिकामयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।

ओं शिश्वा देविहृयकालिकामयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ कवचँ देविश्माशान कालिकामयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ नेत्र देविभद्रकालिकामयी श्री पादुकाँ पूजया मितंयामि नमः ।

ॐ अस्यदेवि दक्षिणकालिकामयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।।१।।

समस्त चक्र स्वामिनी श्री दक्षिण कालिका चैवम् ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभीष्ट सिद्धि मेदेहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पयेतुभ्य षडगावरणार्चनम् ।

ॐ जपासिद्धिमयी पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विजया सिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि नमः ।२।

ॐ जपासिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ अजितासिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि-नमः ।३।

ॐ अपराजिता सिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।४।

ॐ नित्यासिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि-नमः ।५।

ॐ विलासिनीसिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।६।

ॐ दोग्ध्री सिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।७।

ॐ अघोरासिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि-नमः ।८ ।

ॐ सर्वमंगला सिद्धिमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।९।

इति पीठ शक्ति प्रपूज्य ब्रह्मरंध्रे बिन्दु चे मूल मंत्र मुच्चार्य मानसोपचारैः संपूज्य ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री सर्वानन्दमय चक्रस्वामिनी श्री दक्षिण कालिकायै नमस्ते-नमस्ते-नमस्ते स्वाहा ।

अभीष्ट सिद्धि मेदेहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।१।

श्री चक्रबिंदु संदिरान्तकल्पकोटि कन्दर्पं

कान्ति अणिमादि भरासेव्येगुरु पंक्ति स्वरूपिणी

ॐ क्रीं क्रीं गुरुनाथमयी श्रीपादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।१।

ॐ क्रीं परमगुरुनाथमयी श्रीपादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।२।

ॐ क्रीं परमेष्ठि गुरुनाथमयश्री पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।३।

ॐ क्रीं परात्पर गुरुनाथमयी श्रीं पादुकाँ पूजयामितर्पतयामि नमः ।४।

पुनः गुरुपंक्ति मध्ये

ॐ क्रीं श्रीं महादेव्यम्बामयी श्रीगुरुपादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।१।

ॐ क्रीं श्रीं महादेवानन्दनाथमयी श्रीगुरुपादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।।

ॐ क्रीं श्रीं त्रिपुराम्बानन्दनाथमयी श्रीगुरुपादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रीं श्रीं त्रिपुर भैरवानन्दनाथ मयी श्रीगुरु पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।।४।।

।। इति दिव्यौघाः गुरुः प्रथमपंक्तौ ।।

ॐ ब्रह्मा नन्दनाथमयी श्रीगुरुनाथ पादुकाँ पूजयामि-तर्पयामि नमः ।।१।।

ॐ क्रीं श्रीं पूर्णानन्दनाथमयी श्रीगुरुनाथ पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।।२।।

ॐ क्रीं श्रीं सच्चिदानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकाँ पुज-यामितर्पयामि नमः ।।३।।

ॐ क्रीं श्रीं चलचित्तानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकाँ-पूजयामितर्पयामि नमः ।।४ ।।

ॐ क्रीं श्रीं चलचलानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकाँ-पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं कुमारानन्दनाथमयी श्रीगुरुपादुकां पूज-यामितर्पयामि नमः ।५।

ॐ क्रीं श्रीं क्रोधानन्दमयी श्री गुरु पादुकाँ पूजयामि-तर्पयामि नमः ।६।

ॐ क्रीं श्रींवरदानन्दाथमयी श्रीगुरुपादुकाँ पूजयामि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तर्पयामि नमः । ७ ।

ॐ क्रीं श्रीं स्मरद्वीपानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः । ८ ।

ॐ क्रीं श्रीं मयोक्तानन्दनाथमयी श्रीगुरुपादुकां पूजयामितर्पं यामि नमः । ९ ।

ॐ क्रीं मायावत्यानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।१०।

।। इति ब्रह्मनोः द्वितीय पंक्ती ।।

ॐ क्रीं श्रीं विमलानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं कुशलानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं भोजदेवानन्दमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्री प्राजापत्यनन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामित्तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं भीमसेनानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं सुधाकरानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं श्रीमानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं गोरक्षानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्री श्रीं रतिदेवानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयमितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्री मूलदेवानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्री विघ्नेश्वरानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां-पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं हुताशनानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं सन्तोषानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं श्मशानानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रीं श्रीं समग्रानन्दनाथमयी श्रीगुरु पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

श्री सर्वानन्दनाथमयी गुरुनाथ स्वरुपिणी श्री दक्षिण कालिका यै नमस्ते नमस्ते स्वाहा ।

अभीष्ट सिद्धिं मेदेहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्य द्वितीयावरणार्चनम् ।।२।।

ॐ क्रीं श्रीं कालीनित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं कपालिनी नित्यामयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं कुल्लानित्यामयीं श्रींपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं कुरूकुल्लानित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं विरोधिनीनित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयाम्मि नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रीं श्रीं विप्रचित्ता नित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं उग्रानित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं उग्रप्रभा नित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं दीप्तानित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं नीलानित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रींघना नित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं बलाकानित्यामयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं मात्रानित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं मुद्रानित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं मितानित्यामयी श्रीपादुकां पूजयामितर्प-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यामि नमः ।

श्री महा नित्यामयी सर्वेप्सित दात्री चक्र स्वामि-
श्री दक्षिणा कालिकायै नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते स्वाहा ।

अभीष्ट सिद्धि मेदेहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीया वरणार्चनम् ॥३॥

ॐ क्रीं श्रीं ब्राह्मीदेवीमयी श्रीपादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं नारायणी देवीमयी श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं माहेश्वरी देवीमयी श्रीपादुकां पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं चामुण्डादेवीमयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं कौमारी देवीमयी श्री पादुकाँपजयामि-
तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं अपराजिता देवीमयी श्रीपादुकां पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रीं श्रीं बाराही देवीमयी श्री पादुकाँ पूजयामि-तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं नारसिंही देवीमयी श्री पादुकाँ पूजयामि-तर्पयामि नमः ।

सर्व देवीमयी सर्वेप्सित दात्री चक्रस्वामिनी ।
श्री दक्षिणकालिकायै नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते, स्वाहा ।

अभीष्ट सिद्धिं मेदेहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥४॥

ॐ क्रीं श्रीं असितांग भैरवमयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं रूरु भैरवमयी श्री पादुकाँ पूजयामि-तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं चन्डभैरमयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्प-यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं क्रोध भैरवमयी श्री पादुकाँ पूजयामि-तर्पयामि नमः

ॐ क्रीं श्रीं उन्मत भैरवमयी श्रीपादुकाँ पूजयामि-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तर्पयामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं कपाल भैरवमयी श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं भीषण भैरवमयी श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं संहारभैरवमयी श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।

॥ एषां समीपे ॥

ॐ क्रीं श्रीं भैरवीमयी श्री पादुकाँ पूजयामितर्पयामि
नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं महाभैरवीमयी श्री पादुकाँ पजयामितर्प-
यामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं सिंहभैरवीमयी श्रीपादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं धूम्रभैरवीमयी श्री पादुकाँ पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं भीमभैरवीमयी श्री पादुकाँ पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं उन्मत्तभैरवीमयी श्री पादुकाँ पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।
ॐ क्रीं श्रीं वशीकरणभैरवीमायी श्री पादुकाँ पूजया-
मितर्पयामि नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ क्रीं श्रीं मोहन भैरवीमयी श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि नमः ।

सर्व भैरवभैरवीमयी सर्वेप्सितकामदायी चक्रस्वामिनी ।
श्रीदक्षिण कालिकायै नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते स्वाहा ।

"शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे" ।

अभीष्ट सिद्धि मेदेहि शरणात वत्सले ।।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ।।५।।

ॐ क्रीं श्रीं हेतुबटुकानन्दनाथमयी श्रीपादुकां पूज-
यामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं त्रिपुरान्तकबटुकानन्दनाथमयी श्री पादुकाँ
पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं वह्नि जिह्वा बटुकानन्दनाथमयी श्री-
पादुकाँ पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं बेतालबटुकानन्दनाथमयी श्री पादुकाँ पूज-
यामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं कालबटुकानन्दनाथमयी श्री पादुकाँ पूज-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं वरुणदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं वायुदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं वायुदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं कुबेरदेवीमयी श्रीं पादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं ईशानदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं ब्रह्मदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्प-
यामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं अनन्तदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्-
यामि नमः ।

सर्वं देवीमयी सर्वेप्सित फलदात्री चक्रस्वामिनी ।
श्री दक्षिणकालिकायै नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते स्वाहा ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥७॥

ॐ क्रीं श्रीं वज्रदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं शक्तिदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं दण्डदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं खड्गदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं पाशदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं अंकुशदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं गदादेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

ॐ क्रीं श्रीं त्रिशूलदेवीमयी श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि नमः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तेपि संपूजिताः सन्तुदेवाः देवीग्रहा स्तथा ॥
सिध्या साध्या श्चगन्धर्वाः भैरवाः वसवोऽश्विनौ,
मुनयो मरुतश्चैवविश्वे देवाश्शच योष्मपाः ।
रुद्रा दित्यास्तु पित्तरः पन्नगाः यक्ष चारणाः,
योगेश्वरो पासकाः येचनर वानर किनाराः ॥
नागाः गावोदानवेन्द्राः भूता; प्रेताः पिशाचका ।
शस्त्राणि सर्वशास्त्राणि मन्त्र यंत्रार्चना क्रियाः ॥
शान्ति कुरुमहामाये सर्वसिद्धिमयी तथा ।

सर्व चक्र स्वामिनी श्रीदक्षिणकालिकायै नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते स्वाहा ।

॥ स्वाह ॥

सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वेप्सित फलप्रदे-सर्वज्ञानी मयी सर्व व्याधि विनाशिनी सर्वाधार स्वरूप सर्वपापविनाशिनी ।

सर्व रक्षा रूपिणी सर्व मंगल दायिके चक्रस्वामिनी श्रीदक्षिणकालिकायै नमस्ते, नमस्ते, नमस्ते स्वाहा ॥

॥ इति श्रीदक्षिणकालिकादेव्याः खड्ग माला सम्पूर्णम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुद्रा–विवरण

मृगी कनिष्ठ तर्जन्यौ यदि-
मुक्ते तदा भवते ।

१, मृगी मुद्रा

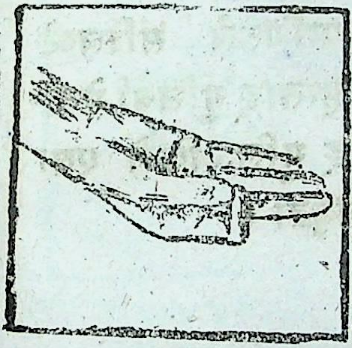

तर्जन्यङ्गुष्ठकौ सक्तावग्रतो विन्यसेद् हृदि ।

वामहस्तो भुजंवाम जानु-मूर्ध्नि विन्यसेत् ज्ञानमुद्रा भवे-देषा ॥

२. ज्ञान मुद्रा

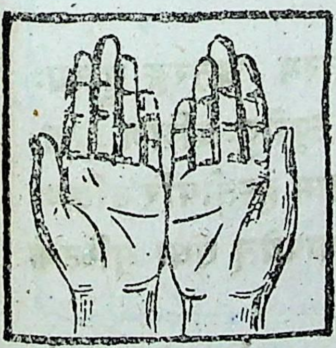

ऊर्ध्वाञ्जलिमधः कुर्यात् इयमावाहनी भवेत् ।

३. आवाहनीयमुद्रा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

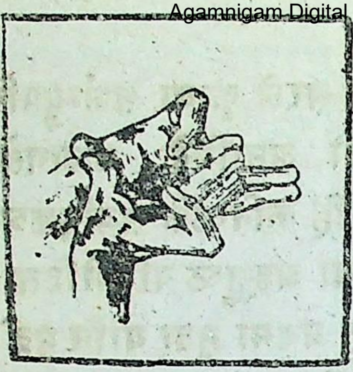

१०. त्रिखण्डा मुद्रा

परिवृत्य करौ, स्पृष्टावङ्गुष्ठौ कारयेत् समौ अनामान्तर गतौ कृत्वा तर्जन्यौ कुटिलाकृती- कनिष्ठ के नियुञ्जीत निज- स्थाने महेश्वरि त्रिखण्डे गं समारव्याला ।

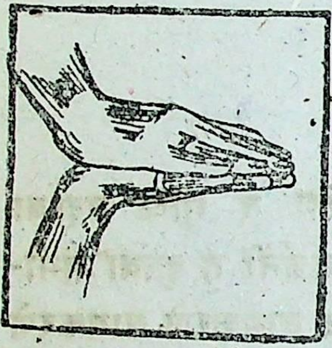

११. वन्दन मुद्रा

प्रसृताङ्गुलिकौ हस्तौमिथश्लि- ष्टौ च सम्मुखौ कुर्यात् स्व हृदये सेयं मुद्रा वन्दन संज्ञका ।

१२. धेनु मुद्रा

अङ्गुलीः संहितां कृत्वाकर योर्वामदक्षयः दक्षानामासमा युक्ता वामहस्त कनिष्ठिका वामा नामा समायुक्तां दक्ष- हस्त कनिष्ठिका । दक्षस्य मध्यमाः क्रान्ता वामहस्तस्य तर्जनीवाम मध्यमयाक्रान्ता दक्षहस्तस्य तर्जनी संयुक्तौ कारयेद्विद्वानङ्ग गुष्ठबुभयो- रपि । धेनुमुद्रानिग दिता गो- पिता साधकोत्तमैः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१३. गालिनी मुद्रा

कनिष्ठाङ्गुष्ठकौ सक्तौकर-योरितरेतरम् तर्जनी मध्यमानामा संहता भुग्न वर्जिता मुद्रैषा गालिनी प्रोक्ताशंख तोय विशोधने ॥

१४. संस्थापिनी मुद्रा

ऊर्ध्वाञ्जलिमधः कुर्यात् इयमावाहिनी भवेत् इयं विपरीतास्यात् तदा संस्थापिनी भवेत् ।

१५. संनिधापिनी मुद्रा

मिलितं मुष्टि युगलं सन्निधापन रूपिणी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

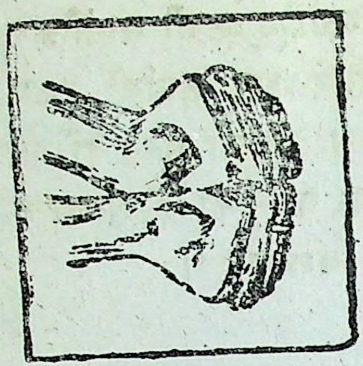

१६. सन्निरोधन मुद्रा

अन्तरांङ् गुष्ठ मुष्टिभ्यां
संन्निरोधन रुपिणी ।

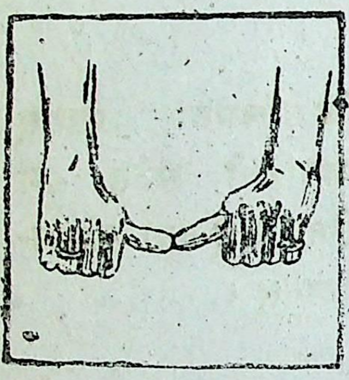

१७. संमुखीकरणी मुद्रा

उत्तानमुष्टि युगला संमुखी
कर णीमता ।

१८. अवगुण्ठनी मुद्रा

अन्योन्य तर्जनीयुग्म भ्रमणा
दवगुण्ठिनी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

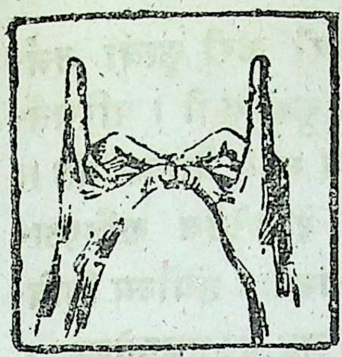

१९. सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा

मध्यमामध्यमेकृत्वा, कनिष्ठेऽङ्गुष्ठरोधिते । तर्जन्यौ दण्डवत्कृत्वा, मध्यमोपर्यनामिके ॥

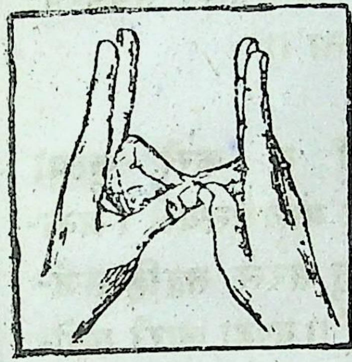

२० सर्व विद्राविणी

एतस्या एव मुद्राया, मध्यमे सरलेयदा । क्रियते परमेशानि, सर्व विद्राविणी भवेत् ॥

२१. सर्वाकर्षिणी

मध्यमा तर्जनीभ्यां च कनिष्ठानामिके समे । अङ्कुशाकार रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि ॥ अङ्गुष्ठन्तु नियुञ्जीत कनिष्ठानामकोपरि । इयमाकर्षिणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षणक्षम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२२. सर्व वशंकरी

पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्ज-
न्यावङ्कुशाकृती । परिवर्त-
क्रमेणैव मध्य मेतद्धोयते ।।
क्रमेण देवितेनैव कनिष्ठा-
नामिकाद्वयः । संयोज्य निवि-
डासर्वा अङ.गुष्ठावप्रदेशतः ।
मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्य-
वरी मता ।।

२३. सर्वोन्मादिनी

सम्मुखौ तु करौ कृत्वा
मध्यमा मध्यमेन्तयजे । अना-
मिका तु सरले तद्बहिस्तर्ज-
नीद्वयम् ।। दण्डाकारौ ततो-
ऽङ्गुष्ठौ मध्यमानखदेशगौ ।
मुद्रैषोन्मादिनी नाम क्ले-
दिनी सर्वयोषिताम् ।।

२४. सर्वमहांकुशा

अस्यास्त्वनामिका युग्ममधः
कृत्वाऽङ्कुशाकृति । तर्जन्या-
वपितेनैव क्रमेण विनियोज-
येत् । इयं महाङ.कुशामुद्रा
सर्वकामार्थ साधिनी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२५. सर्व खेचरी मुद्रा

सव्यं दक्षिण देशे तु सव्य देशेतु दक्षिणम् । बाहुं कृत्वा महादेवि हस्तौ सम्परिवर्त्य च ॥ कनिष्ठानामिकादेवि युक्तानेनक्रमेण तु वर्जन्यां समाक्रान्तै पूर्वार्द्धमपि मध्यमे अंगुष्ठौ च महेशानि सरलावपि कारयेत् । इयं सा खेचरी मुद्रा पार्थिवस्थानयं जिता ॥

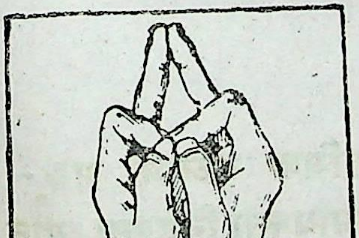

२६. सर्वबीज मुद्रा

परिवर्त्य करौ स्पष्टावर्धचन्द्राकृतिप्रिये । तर्जन्यङ्गुष्ठ युगल युगपत्कारयेत्ततः । अधःकनिष्ठावष्टब्धे मध्यमे विनियोजयेत् । तथैव कुटिले याज्ये सर्वाधस्ताद नामिके । बीजमुद्रेयमचिरात् सर्वसिद्धि प्रवर्धिनी ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

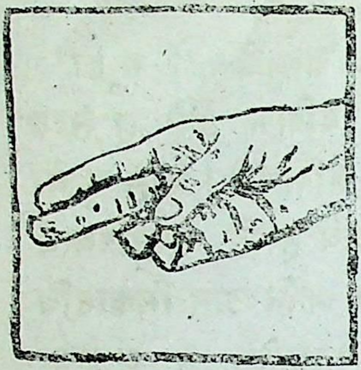

२७. प्राण मुद्रा

अंगुष्ठेन समायुक्ता कनिष्ठानामिकातथा । प्राणमुद्रा समाख्याता प्राणाहुवन कर्मणि ॥

२८. अपान मुद्रा

तर्जनी मध्यमाङ्गुष्ठे स्त्रिभिरेकीकृतं यदि स्यादपानहुतौ मुद्रा ॥

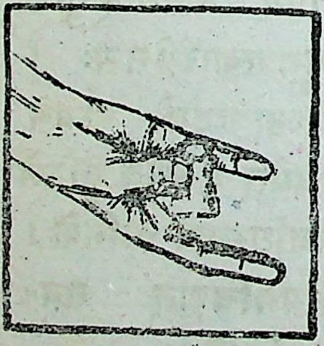

२९. व्यान मुद्रा

तथानामिक मध्यमा अङ्गुष्ठेनसमायुक्ता नियुक्ता व्यान होमके ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३०. उदान मुद्रा

निष्कनिष्ठेन या मुद्रा सोदान
हवने स्मृता ॥

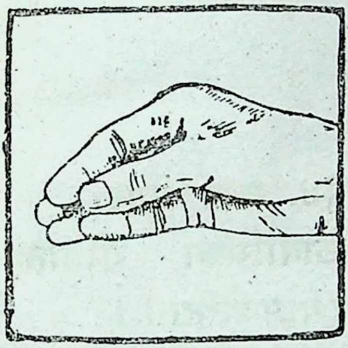

३१. समान मुद्रा

सर्वाभिः सस्मृतामुद्रा समाना-
हुत कर्मणि ।

नेत्रयोः मीलनकृत्वा देवता-
ध्यान पुरस्सरंनैवेद्य समर्प-
णम् । ब्रह्मार्पण मुद्रा ॥

३२. ब्रह्मार्पण मुद्रा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३३. ग्रास मुद्रा

अंगुलयः कुटिलीभूता विरलाग्रापरस्परम् । ग्रासमुद्रा समाख्याता सत्यं पाणौनिजिता ।

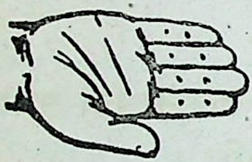

३४. तत्व मुद्रा

अङ्गुष्ठानामिका योगात् तत्व मुद्राप्रकीर्तिता ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"काली मन्त्र भेदाः"

"क्रीं" इत्येकाक्षरी विद्या

"क्रीं हूं ह्रीं" इति त्र्यक्षरी विद्या

"क्रीं हूं ह्रीं हुं फट्" इति पंचाक्षरी विद्या

"क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं इति षडक्षरी विद्या 'क्रीं कालिके स्वाहा' षडक्षरीं।

"क्रीं कालिकायै नमः" इति सप्ताक्षरी विद्या

"क्रीं हूं ह्रीं हुं फट् स्वाहा' सप्ताक्षरी गूढ़विद्या

"ऐं हूं ओं ऐं ह्रीं फट् स्वाहा इत्यष्टाक्षरी विद्या

।।ॐ।। क्रीं क्रीं कालिके स्वाहा। अष्टाक्षरी

क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा। दशाक्षरी विद्या

ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं। दशाक्षरी गुप्तविद्या

क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं हू ह्रीं स्वाहा। चतुर्दशाक्षरी विद्या

क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वावाहा। (द्वाविंशा त्यक्षरी विद्या)

ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ॥ (एक विंशत्याक्षरी विद्या)
"हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं
"क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥ (द्वाविंश त्यक्षरीऽविद्या)

॥ मंत्रानुष्ठान विधिः ॥

परमदयालु माता श्री दक्षिणकालिका के प्रीत्यर्थं तथा शीघ्र सिद्धि के लिए साधक को सर्व प्रथम श्री गुरुजी से विधिवत् दीक्षा ग्रहण करके ही इस साधना का प्रारम्भ करना चाहिए। क्योंकि ये सभी विद्याऐं बिना गुरु से दीक्षा लिए सिद्ध नही होती। दीक्षोपरान्त किसी एकान्त भूमि में नदी तट, पर्वत, गौशाला, भगवती का मन्दिर अथवा गृह में बैठकर पहिले १ हजार बार गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए। तदुपरान्त विधि पूर्वक यन्त्र पूजन करके पंचाग का पाठ करके भगवीकी मंत्र साधना करना श्रेयस्कर है। १ लक्ष जाप करने से अनुष्ठा पूर्ण होता है। नित्य प्रति के जप में न्यूनाधिकता न हो इसलिए प्रथम दिन जितनी संख्या जप करे अनुष्ठान समाप्तिपर्यन्त बराबर उतना ही जप रोज करना चाहिए। संख्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्ण हो जाने पर दशांश का हवन करे तथा हवन के दशांश का तर्पण करे बाद में ब्राह्मण भोजन एवं सुवासिनी तथा कन्या बटुकों को भोजन करावे तब मन्त्रानुष्ठान पूर्ण होता है। अनुष्ठान के मध्य एकाहार यदि बन जाये तो हविष्याऽन्न का ग्रहण करे। भूमि पर शयन करे। काली भक्त को स्त्री निन्दा तथा स्त्री का अपमान नहीं करना चाहिए। रात्रि में यह साधना करने से शीघ्र फल प्राप्त होता है। तथा साधक सभी इच्छाओं को पूर्ण करते हैं।

॥मंत्र प्रयोग॥

क्रीं इस मन्त्र को सात बार जल को अभिमंत्रित करके पान करने से सकल रोगों की बृत्ति होती है।

एक हजार मन्त्र जाप करने से जिसे चाहे उसका आकर्षण होता है।

सातबार मन्त्र से चन्दन को अभिमंत्रित कर मस्तक पर लगाने से सभी जीव वश में होते हैं।

रक्त पुष्पों की सहस्त्र आहुति से धन प्राप्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"सहस्त्र विल्व पत्र की आहुति से राज्य प्राप्त होता है।

"सरसों-काली मिर्च लेकर सहस्त्र आहुति से शत्रु नाश होता है।

'पुष्प को सात बार मन्त्र से अभिमंत्रित करके वैरी के घर में डालने से उच्चाटन हो जाता है।

यहाँ पर मुख्य प्रयोग बतलाये गये हैं। विशेष विशेष रीति से श्यामा रहस्य आदि ग्रन्थों में इस मन्त्र की अनेक सिद्धियों का वर्णन किया गया है।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवीमातगणनम्

अथ श्री देवीमानगणनमष्टाङ्ग निरुप्यते

युगः, परिवृत्तिः, वर्षः, मासः; दिन; नित्या, वारः, घटिका चेति तान्यष्टाङ्गानि । एतानि जपादेः दक्षिण-कालिका देश्च संकल्पे क्रमशः, पारायणादेस्तु वारघटिका दिन-नित्यावर्ष-मास-युग-परिवृत्तितः ग्राह्याणि ।

तद्विवेकः युगाः षट् त्रिंशदकादयः । अकादयो नाम-अकार एकः स्वरः सानुस्वारः, ककारादयः क्षकारान्ताः पञ्चत्रिंशद्व्यञ्जनानिच सानुस्वाराणि, शिवादिषट् त्रिंशतत्वख्यानि ।

१	अं	शिवतत्वम्	१३	ठं	प्रकृतिः	२५	भं	पायुः
२	कं	शक्तिः	१४	डं	अहंङ्कारः	२६	मं	उपस्थः
३	खं	सदाशिवः	१५	ढं	बुद्धिः	२७	यं	शब्द
४	गं	ईश्वरः	१६	णं	मनः	२८	रं	स्पर्शः
५	घं	शुद्ध विद्याः	१७	तं	श्रोत्रम्	२९	लं	रुपम्
६	ङं	मायाः	१८	थं	त्वक्	३०	वं	रसः
७	चं	कलाः	१९	दं	चक्षुः	३१	शं	गन्धः
८	छं	अविद्याः	२०	धं	जिह्वा	३२	षं	आकाशः
९	जं	रागः	२१	नं	घ्राणः	३३	सं	वायुः
१०	झं	कालः	२२	पं	वाक्	३४	हं	वाह्निः
११	ञं	नियतिः	२३	फं	पाणिः	३५	ळं	जलम्
१२	टं	पुरुषः	२४	बं	पादः	३६	क्षं	पृथिवी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यथा अं शिवतत्वयुगः, कं शक्तितत्वयुगः, खं सदाशिवतत्वयुगः, इत्यादयः । प्रतियुगं परिवृत्तयोऽपि षट्त्रिंशदकादयः । यथा अं शिवतत्वपरिवृत्तिः, कं शक्तितत्वपरिवृत्तिरित्यादयः । एवमन्यत्रापि षट्-त्रिंशदकादयः तत्तन्नामाङ्किता ऊह्याः ।

प्रतिपरिवृत्ति वर्षा अपि षट्त्रिंशदकादयः ।

प्रतिवर्षं मासाःषोडश अकारादि-सानुस्वारस्वरात्मानः ।

ते च अमृतानि चन्द्रकलानामानः, निवृत्यादि सदाशिव-कलाख्याना वा, दक्षिणे काली काल्यादि महानित्यान्त नित्यानाभानो वा ।

१ अं अमृतकला	निवृत्तिकला	काली
२ आं मानदा	प्रतिष्टा	कपालिनी
३ इं पूषा	विद्या	कुल्ला
४ ईं तुष्टि	शान्ति	कुरुकुल्ला
५ उं पुष्टि	इन्धिका	विरोधिनी
६ ऊं रति	दीपिका	विप्रचित्ता
७ ऋं धृति	रेचिका	उग्रा
८ ॠं शशिनी	मोचिका	उग्रप्रभा
९ लृं चन्द्रिका	परा	दीप्ता
१० ॡं कान्ति	सूक्ष्मा	नीला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

११ ए	ज्योत्स्ना	सूक्ष्मामृत्ता	घना
१२ ऐं	श्रीं	ज्ञाना	बलाक्षा
१३ ओं	प्रीति	ज्ञानामृत्ता	मात्रा
१४ औं	अङ्गदा	आप्यायनी	मुद्रा
१५ अं	पूर्णा	व्यापिनी	मिता
१६ अः	पूर्णामृत्ता	व्योमरुपा	महानित्या

यथा–अं अमृतकला मासः, अं निवृत्तिकला–मासः, अं काली नित्या मासो वा प्रतिमासं दिनानि षट्त्रिंशदकादीनि ।

प्रतिदिन मेकानित्या । नित्याश्चविसर्जनीयेतर–स्वरात्मानः सानुस्वाराः। दक्षिणेकाली काल्यादि मिता–न्तनामाङ्कितास्ताः पञ्चदशुक्लपक्षे यथाक्रमं चरन्ति । कृष्णपक्षे च विलोमेन । यथा शुक्लपक्षे प्रतिपदि अं शुक्लकाली दिननित्या, ततः आं शुक्ल कपालिनीदिन–नित्या इत्याद्याः, अं शुक्ल मिता दिननित्या इत्यन्ताः। कृष्णपक्षे च अं कृष्णमिता दिननित्या, औं कृष्ण मुद्रा–दिननित्या इत्याद्याः अं कृष्ण काली दिननित्या इत्य–न्ताः ॥

प्रतिमास वाराश्चत्वारः । प्रतिवारं अ-लृ-क-च-ट-त-प-य षादिवर्णादिमाः पुनः पठति प्रथम वर्णान्ताः अनु-स्वराः प्रकाशानन्द नाथात्मानांनववासराः यथा-अं-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आं-इं-ईं-उं-ऊं-ऋं-ॠं-अं प्रकाशानन्दना - थवासरा लृं-ॡं-एं ऐं-ओं-औं-अं-अः लृं विमर्शानन्द नाथ-वासरः इत्यादयः ॥

---

१ प्रकाशानन्दनाथ २ विमर्शानन्दनाथ ३ आनन्दानन्दनाथ ४ ज्ञानानन्दनाथ ५ सत्यानन्दनाथ ६ पूर्णानन्दनाथ ७ स्वाभावानन्दनाथ ८ प्रतिभानन्दनाथ ९ सुभगानन्दनाथेति ।

प्रतिवासरं घटिकाः षष्टि संख्याकाः अ-ए-इ-ल-याद्यन्यतमाख्यौ दयघटिकाद्याः । ताश्च विसर्जनीय-स्वररहित मातृकार्णास्मानः क्रमशः पञ्चाशत् पुनरारब्धा एवदशेति । यथा-अकारघटिका, आकारघटिका इत्यादयः । अकारोदय घटिका एकारोदय घटिका इत्यादयोऽपि ॥

सर्वाण्येतान्यष्टाङ्गानि सृष्ठ्यादितः, तत्तुल्यारम्भ कल्पादितो वासाध्यानिः ॥

॥ तत्साधनप्रकारः ॥

व्यपगतवत्सरमण्डल-गुणिताषष्टि गंजाब्धिसमिश्रा । प्रभवादिगताब्दयुताभवति गताब्दः स एव वर्षगणः ॥१॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्षगणाःशरतत्वः स्थितिभिश्चन्द्राग्निभिःशरक्ष्माभिः ।
दिनघटिकापलदण्डैर्गुणितः कल्पादि–दिवस–गुणः ।२।
दिवसगणस्तिथि दण्डैश्चन्द्रेषु पलैर्भुजङ्ग घटिकाभिः ।
रहितो विनद्वयेन चकलिशुद्धदिनंहि भवति वर्षस्य ।३।
गत मास वाक्य युक्तं गतदिन सहितं च वर्षशुद्धदिनम् ।
गतकलिशुद्ध दिनं स्यात् शुक्रादिकमिष्ट दिवसस्थ ।४।

गणितागतो वारः स्वेष्टवारश्च यदि संगच्छेते तत एव तदिष्टकलिशुद्ध दिनं स्पष्टं भवति ।

अत्रघटिकादयो यदि दिनार्धमानानादऽधिकास्तर्हि तत् शुद्धदिनमेकाधिकं भवति । न्यूनाश्चेत् त्याज्यास्ता एव घटिकादय ॥

मासवाक्यानि–

रङ्केशशो सोनलग्नोः दि०	३०	५५	३२	मेषस्य
विविध करतनुः	६२	१६	४४	ऋषभस्य
श्रीरतः शूलधेनुः	९३	५९	२२	मिथुनस्य
स्वर्गद्वारोन्मुखाः स्युः	१२५	२४	३४	कटकस्य
भुविचरितमया	१५६	२६	४४	सिंहस्य
तेनवंशस्तु दीपः	१८६	५४	१	कन्यायाः
लोकाव्दं वस्तुपुत्रः	२१६	४८	१३	तुलायाः
स्थलजयति वरः	२४६	१८	३७	वृश्चिकस्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निर्गलाङ्केशसारः	२७५	३६	३०	धनुषः
तत्वंतन्नामनाड़ी	३०५	६	४६	मकरस्य
नियमभविवलः	३३४	५५	१०	कुम्भस्य

मेषमासादितः स्युः ॥ ५ ॥

गतकलिशुद्धदिनेऽस्मिन्नप्तेबाणैः अ ए थ ल यपूर्वा घटिका; शेषेण गताः पञ्चाशद्दश च मातृकाख्याः स्युः ॥ ६ ॥

रत्नैराप्तेऽस्मिन् गतकलिशुद्धदिने [भवन्ति शेषेण । अ लृ क च ट त प य षाद्याः प्रकाश पूर्वा हि वासरा याताः ॥ ७ ॥

गतकलिशुद्धदिने स्वगुणाप्ते शेषेण गतनित्याः । अनुलोमविलोमाभ्यांमहाकाली यादिम्भितान्ताः । ८ । ऋतुवह्निभिराप्ते गतकलिशुद्ध दिने गतानि हि दिनानि

शेषेणभवन्तीमान्यकादिक्षान्त्येव तत्वनामानि । ९ । आप्ते नृपैर्दिनफले शेषेण भवन्त्यकाराद्याः ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भासा अमृतकलाद्या याता अथवा सदाशिव कलाद्याः ॥ १० ॥

मासफले शास्त्रगुणै राप्ते शेषेण गतवर्षाः ।
वर्षफले शास्त्र गुणैराप्ते परिवृत्तयो गताः शेषैः ॥ ११ ॥

परिवृत्तिफले शास्त्रगुणाप्ते शेषेण यातयुगा ।
तत्वाख्याः सर्व इमे वर्षाः परिवृत्तयो युगाश्च स्युः ॥ १२ ॥

य एतान्द्वादश श्लोकानधीते साधकः क्रमात् ।
अष्टाङ्गमार्गस्तस्यैव सुलभश्च सुखप्रदः ॥१३॥

॥ उदाहरणम् ॥

१७ जुलाई १९५५ मन्मथवर्षे कटक मासे प्रथम-दिनंभानु-वासरः । अस्य देवीमानरी त्याऽष्टा-गंगणनम् । यथा-व्यपगतवत्सरमण्डलानि ८३
तद्गुणिता षष्टिः ८३ × ६०४, = ९८०

एषमो मन्मथ वर्षे गतसम्वत्सरमण्डलानि ८३ । एता-नि-प्रतिप्रभावारभ एकै काधिकानि भवन्ति ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गजाब्धिसंमिश्रा +४८=५, ०२८

प्रभवादिगताब्दाः २८

तद्युता ५, ० २८+२८=

५, ० ५६ वर्षगणः

वर्षगणः शरतत्वैः गुणितः ५, ० ५६×३६५ दिनैः

' ' तिथिभिः "५' ० ५६×१५ घटिकाभिः

' ' चन्द्राग्निभिः "५, ० ६५×३१ पलैः

' ' शरक्ष्माभिः "५' ० ५६×१५

नाडिका घटिका इति च समानार्थं कौ ।
षष्टया दण्डैः एकः पलः । षष्टया पलैः एका घटिका ।
षष्टया घटिकाभिः एक दिनम् । [दण्डः–२/५ सेकेण्ड]
दण्डस्तत्परश्चेत्य नर्थान्तरम् ।

पला विकला विघटिकाश्च पर्यायः । घटिका कला च समानार्थं कौ ॥

दिन घ प द
=३६५ १५ ३१ ५५×

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५०५६ वर्णगण:

१८, ४६, ७४७, ५३२०   ०=

कल्यादिदिवसगण:
तिथि (५) १ दण्डै: चन्द्रेषु
(१५) पलै: भुजङ्ग (८) घटिकाभि:
दिनद्वयेन च रहित:–२ ८ ५१ १५
वर्षकलिशुद्धदिनम् १८, ४६, ७४७, २८ ४५
गतमान (मिथुन वाक्यं युक्त)
यथास्थितिलिखितं मासवाक्ये पक्षके ८३ ५६ २२ ०
गतदिन सहितं १८, ४६, ८३८ ४० ५० ४५+
० ० ०

इष्टदिवसकलिशुद्धदिनम् १८ ४६ ८३८ ४० ५० ४५+
अत्रघटिकादय: दिनार्धमानम्   ० १८ ८ १५
अधिका: अत: पूरकम्   १८ ४६ ८४० ० ० ०
वार परीक्षा–१८ ४६ ८४० ÷ ७=२ ८३ ८३४–२
शिष्टम् तेन शुक्रादयो गता वारा: २, अत: इष्टदिन भानुवासरोऽइष्ट: ॥

१, अस्मिन गतकलिशुद्धदिने बाणै: आप्ते १८,-४६, ८४ ÷ ५ सति शिष्टम् अत: वर्तमाना उदय घटिका 'अ' ॥

२, अस्मिन् गतकलिशुद्धदिने रत्नै: 'आप्ते १८, ४६, ८४० ÷ ६ सति शिष्टम् ४ तथा च "चं" ज्ञानानन्द नाथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वासरो गतः । अतः वर्तमान–"च" सत्यानन्द नाथ वासरः" ॥

३, गतकलिशुद्धदिने खं गुणाप्ते १८, ४६, ८४ ÷ ३० सति शिष्टम् १० तथा च गता नित्याः १० तत्र काली काल्याद्यादि नित्यान्ताः गताः । अतः वर्तमाना नित्या-घना" ।

४, गतकलिशुद्धदिने ऋतु वह्निभिः आप्ते १८, ४६, ८४०,३६, सति फलम् ५१, ३०१ शिष्टम् ४ तथा च गतम् ४ 'गं ईश्वर' दिनम् । अतः वर्तमानं "घं शुद्धविद्या" ॥

५, दिनफले नृ पैः आप्ते (५१, ३०६) फलं ३, २०६ शिष्टम् ५ तेन ५ 'उं पुष्टिमासो' गता । अतः वर्तमानः 'ॐ' रतिमासः' ।

६, मासफले शास्त्रगुणैः आप्ते (३२०६ ÷ ३६) सति फलं ८९ शिष्टम् २ तेन गतो वर्षः २ कं शक्तिः' । अतः वर्तमानः' खं सदाशिवः ।

७, वर्षफले शास्त्रगुणैः आप्ते ८९ ÷ ३६ सति फल २ शिष्टम् १७, तेन गता १७" तां श्रौत्र परिवृत्तिः' । अतः वर्तमान थं त्वक्' ॥

८, परिवृत्तिफले शास्त्रगुणाप्ते (२ ÷ ३६) सति फलं ०, शिष्टम् २, तेन गतः २ क शक्तिः युगः । अतो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वर्तमानः खं सदाशिवः सर्वञ्चैतत् काली विद्यानित्याहि के स्पष्टम् ।

ऐषमः संवत् २०१७ तमे वैक्रमेऽब्दे सौम्यवत्यां भाद्र-कृष्णामायां देवीमानगणनया संकल्पक्रमो यथा–

आदिगुरोः परशिवस्याज्ञया प्रवर्तमानदेवी मानेन षट्त्रिंश तत्वात्मक सृष्टि, स्थिति, संहारतिरोधानानुग्रह कारिण्याः श्री महाकाली पराशक्त्या आद्या ऊर्ध्वम्नाय विम्नसे खं सदाशिवतत्वयुगे थ त्वक्तत्वरिवृत्तौ डं माया तत्व वर्षे लृं हारिणी ऋतौ लृं कान्ति मासे कृष्णपक्षे अं शिवतत्वदिवसे लृं नक्षत्रे योगे ऋं करणे ऐं बलाकादिन नित्यायां अं काली तिथि नित्यायां–

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं अं प्रकाशानन्द-नाथ वासरे लकारघटिको दये श्री महा काली क्रमं निवर्तयिष्ये ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारत वर्ष के बारह प्रधान देवी-पीठ और उनके तीर्थ रूप श्री विग्रह ।

॥ त्रिपुरारहस्य, महात्म्य-ख० अ० ४८ । ७१-७५ ॥

काञ्चीपुरे तु कामाक्षी मलये भ्रामरी तथा ।
केरले तु कुमारी सा अम्बाऽऽनर्तेषु संस्थिता ॥

करवीरे महालक्ष्मीः कालिका मालवेषु सा ।
प्रयागे ललिता देवी विन्ध्यनिऽवासिनी ॥

वाराणस्यां विशालाक्षी गयायां मङ्गलावती ।
वङ्गेषु सुन्दरी देवी नेपाले गुह्यऽकेश्वरी ॥

इति द्वादशरूपेण संस्थिता भारते शिवा ।
एतासां दर्शना देव सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

अशक्तो दर्शने नित्यं स्मरेत् प्रातः समाहितः ।
तथाप्युपासकः सर्वैरपराधैर्विमुच्यते ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❀ श्री काली स्तुति ❀

'या कालिका रोग हरा सुवंद्या वैश्यैः समस्तै र्व्याहारदक्षैः ।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमातामयि सौख्य-दात्री ॥१॥

या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्ड विमर्दिनी ।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदाभव ॥२॥

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारय-सीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रिया ये त्वयि-भक्ति नम्राः ॥३॥

देवि प्रपन्नर्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वामीश्वरी देवि चरा-चरस्य ॥ ४ ॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतिधियां हृदयेषुबुद्धि ।

श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा;
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥५॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री काली जी आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ॥

सुन जगदम्बा! कर न बिलम्बा सन्तन के भंडार भरे।
संतन प्रतिपाली, सदाखुशाली, जै काली कल्याण करे।१।

बुद्धि बिधाता तू जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरणतुम्हारी आन परे।
जबजब भीर पड़ी भक्तनपर, तब-तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली सदाखुशाली, जै काली कल्याण करे।२।

बार-बार तैं सब जग मोहयो, तरुणी रुप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या हो भोग करे ॥
संतन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जय कार करे।
संतनप्रतिपाली सदाखुशाली। जैकाली कल्याण करे।३।

ब्रह्मा विष्णु महेश सहसफन लिये भेंट तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र धरे ॥

हुए शनिश्चर कुंकुमवरणी, जबलों गुरपर हुकुमकरे।
संतनप्रतिपाली सदाखुशाली, जैकाली कल्याण करे।४।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुपित होई कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
खड्ग त्रिशूल हाथ में लेकर, रक्तबीज को भस्म करे॥
शुम्भ निशुम्भ पछाड़े माता; महिषासुर को सकड़ दरे।
संतन प्रतिपाली सदाखुशाली, जैकाली कल्याण करे।५
जब तुम दयारूप को धारो, पल में संकट दूर करे।
आदित वार आदि का राजत, अपने जन का कष्ट हरे॥
सौम्य स्वभाव धरा मेरीमाता, जनकी अरज कबूलकरे।
संतन प्रतिपाली सदाखुशाली जैकाली कल्याण करे।६।
सिंह पीठपर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें सिद्ध साधु चर भेंट धरे॥
ध्यान धरत ही श्रीकाली को, चार पदारथ हाथ परे।
संतन प्रतिपाली सदाखुशाली, जैकाली कल्याण करे।७
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिव शंकर जी ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चँवर कुबेर डुलाय करे॥
जय जननी जय मातुभवानी, अचल भवन में राजकरे
संतन प्रतिपाली सदाखुशाली, जैकाली कल्याण करे।८

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री काली चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जय सीताराम के मध्य वासिनी अम्ब ।
देहु दरस जगदम्ब अब करहु न मन्त विलम्ब ।

॥ चौपाई ॥

जयकाली क काल मालिनी जय मंगला महाकपालिनी ।
रक्तबीज बधकारिणी माता । सदा भक्तन की सुखदाता ॥
शिरोमालिका भूषितअंगे । जय कालीमधु मद्य तरंगे ।
हर हृदयार बिन्दु सुविलाशिनी । जय जगदम्बा सकल दुख नासिनी ॥
ह्रीं काली श्रीमहाकराली क्रीं कल्याणी दक्षिण काली ।
कलावती जय जय विद्यावती जयतारा सुन्दरी महामती
देहु सुबुद्धि हरहुदुख द्वन्दा । काटहुसकल जगतके फंदा ।
जयओउम्कारे जयहुँकारे । महाशक्ति जयअपरम्पारे ॥
कमला कलियुग दर्प विनासिनी । सदा भक्त जन की भयनाशिनी ।
अब जगदम्ब न देर लगावहु । दुख-दरिद्र सब मोर हटावहु ॥
जयति कराल काल की माता कालानल समनि द्युति गाता ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जय शंकरी सुरेसि सनातनि कोटि सिद्ध कवि मातु पुरातनि ।
कपर्दिनी कलिकल्मष मोचनि । जैविकसित नव नलिन विलोचनि ।।
आनन्दाअनन्द निधाना । देहु मातुमोहि निर्मल ज्ञाना ।
करुणामृत सागरा कृपामयि । होहु दुष्ट जन कहुँ तुम निर्दयी ।।
सकल जीव तोहि परम पियारे । सकल विश्व तव-रहहिं अधारे ।
प्रलय काल महँ नर्तन कारिणि । जग जननी सब जग की पालिनी ।।
महोदरी माहेश्वरी माया । हिमगिरी सुता विश्व की छाया ।।
स्वच्छच्छरद सरद धुनिमांही गरजत तूही और कोउ नाहीं ।।
स्फुरित मणिगणाकर प्रताने तारागण तू व्योम विताने
श्री धानेन्तन हितकारी । अग्नि पाणि तुम दुष्ट विदारिणी ।।
धूम्र विलोचन प्राण विमोचिनी । शम्भ निशुम्भ मथनि वरलोचनि ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहस्त्रभुजी सरोरुहमालिनी । चामुण्डे मरघटकीवासिनी।
खप्पर मध्य सुशोणितसाजी । संहारेउ महिषासुरपाणी।।

अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका । सब एके तुम आदि कालिका ।।

अजा एक रुपाबहु रुपा । अकथ चरित्राशक्ति अनूप ।।
कलकत्ता के दक्षिणा द्वारे । मूरति तोरि महेशि अपारे ।

कादम्बरी पानरतश्यामा । जयमातंगी अनूप ब कामा ।।
कमलासन वासिनी कमलायनि । जय जय श्यामा जय यास्रायनि ।
रासरते नवर से प्रकृति हे । यजन्ति भक्त उर कुमति सुमति हे ।।
जयति ब्रह्म शिव विष्णु, कामदा जयति अहिंसा धर्म जन्मदा ।
जल थल नभ मण्डल में व्यापिनि । सौदामिनी मध्य आलापिनी ।।
झननन तच्छुमारिन रिननादिनी । जय सरस्वती वीणा वादिनी ।।
ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं चामुण्डा । कलित कण्ठ शोभित नरमुन्डा ।
जय ब्रह्माण्ड सिद्ध कवि माता कामाख्या काली विख्याता ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हिंगुलाज विन्ध्याचल वासिनि अट्टाहासिनी अघगन नासिनि ।

कहँ लगि अस्तुति करहुँअखण्डे । तू ब्रह्मांड शक्तिजित खण्डे ॥

करहु कृपासबपै जगदम्बा । रहहिंनिशंक तोरअवलम्बा।
चतुर्भुजी काली तुम श्यामा । रूप तुम्हारा महा अभिरामा ॥

खड्ग और खप्परकर सोहति । सुरनर मुनि सबको मन मोहता ।

तुम्हारी कृपा पाव जो कोई रोग शोक नांहि ता कहँ होई ॥

॥ दोहा ॥

जोयहपाठ करै चालीसा तापर कृपा करहिं गौरीशा ॥
जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगदम्ब ।
सदा भक्तजन केरि दुख, हरहु मातु अविलम्ब ॥

॥ इति श्री काली चालीसा सम्पूर्णम् ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री चण्डी चरित्र में काली की उत्पत्ति और रक्त बीज वध का वर्ण देदिये-

॥ सवैया ॥

क्रुद्धकैयुद्धकियोबहुचंडी न एतोकियौमधुसो अविनाशी ।
दैत्यन के वध कारण को निजभालते ज्वालकि लाट निकासी ॥

कालि प्रत्यक्ष भईतिहके रण फैलि रही भयवी प्रभासी
मानहु भृङ्गसुमेरुको फोरिकै धार परी धर पै यमुनासी
मेरु हल्यो दहल्यो सुरलोक दशोदिशि भूधर भाजत भारी ।

चाल परयौ तब चोदह लोक ब्रह्म भयौ मन में भ्रम भारी ।
ध्यान रह्यो न जटी सु फटी धर यौं बलकैरण में किलकारी ।
दैत्यन के वध करण को कर कालसी काली कृपान संभारी ॥

॥ दोहा ॥

चंडी काली दुहूँ मिलि कींनो इहै विचार ।
हौं हनहों तू श्रोण पी, अरदिल डारहिं मार ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ सवैया ॥

काली औ केहरि सगलै चंडि सुघेरे सभै वन सौसि दवा पै ।
चंडि के वानन तेज प्रभाव ते दैत्य जरे जिमि ईंट अवा पै ॥
कालिका श्रोण पियो तिनको कविनेमन में लियो भाव भवा पै ।
मानहु सिन्धुकु नीर सभै मिलि धायकि जाय परयौ है तवा पै ॥

चंडि हने अरूकालिका कोपिकै शोणित बिन्दुन सों यह कीनों ।
खड्ग संभारहकार तबै किलकार विदारसभै दल दीनों
अमिष शोण अचा बहु कालिका ता छविको कवियों मन चीनों ।
मानु क्षुधातुर होय मनुष्य सु सालन लासहि सोबह पीनों ॥

युद्धसु शोणितबीज कियो धरणीपर यौं सुर देखत सारे ।
जेतक शोण कि बून्द गिरें उठि तेतक रूप अनेकहि धारे ॥
योगिन आय फिरी चहुँ ओर ते शीश जटाकर खप्पर भारे ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शोणित बून्दपरे अघवैसभ खगले चंडि प्रचंड संहारे ॥
कालिरु चंडकुवंड सभार कै दैत्यसोयुद्ध निशंक सजाहै।
मार महारण मध्यभई पहरेक लौसारसों सार बजा है ॥
शोणितबिन्दु गिराधरणीपर असिसोअरियौंशीशभजाहै।
मानु अतीत कियोछिसको धनवन्त सभै निजमाल तजा
है ॥

॥ सोरठा ॥

चंडि दियो विडार, शोण पान काली कियो ।
क्षण महँ डारयो मार, शोमबिन्दु दानवमहा ॥

नोट–भवानी "बडवाग्नि के चक्र पर ।
सालन–सलोना लास–शोखे से मिलाकर
पिया है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस जगह—स्थूल ध्यान, तेजोध्यान, और सूक्ष्मध्यान, इन तीन प्रकार से ध्यानों का वर्णन करते हैं।

॥ श्री शिव उवाच ॥

स्व-देहे पूजयेद् देव नान्य-देहे कदाचन ।
स्व गेहे पायसं त्यक्त्वा भिक्षामटति दुर्मतिः ॥

स्थूल-ध्यानान्महा-देवस्तेजो-ध्यानाद्धि शङ्करी ।
सूक्ष्म-ध्यानाद् भवेन्मुक्तिराङ्कार तत्र संभव ॥

भिन्न-देहं शिव शक्ति तेजोध्यानम भेदकं ।
शिव-शक्त्यात्मकं सूक्ष्मं ॐ तत् सद् व्यापित जगत् ॥
बिन्दु-त्रयं नाद-युग्मं बिन्दु-युग्मं च नादकं ।
बिन्दुमेकं नाद-युग्मं ॐकारं ब्रह्म बोधकं ॥

कुण्डलिन्यं कुशाकारा बिन्दु रूपः सदाशिवः ।
अंङ्क मात्रं महादेवि ! शिव शक्ति प्रबोधकं ॥

बिन्दु द्वय बिना देवि । किञ्चिन्मात्र न जायते ।
वामे च परमा शक्तिर्दक्षिणे परमः शिवः ॥

शिव शक्त्यात्मकं ब्रह्म वाचातीतं सुनिर्मलं ।
तकारं शङ्करं ज्ञेयं तकारं पुस्त्व विग्रहं ॥

ब्रह्म बोध मयं देवि ! तत् शब्द शब्दित गोपितं ।
बिन्दु-युग्मं नादमेकं तकारं ब्रह्म-बोधकं ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तत्-शब्द परमेशानि । ॐ कारस्यादि बोधकं ।
बिना स्वरेण देवेशि । व्यञ्जनं नैव तिष्ठति ।।

तद्-वर्णं सकलं बोधं भाव रूपं प्रकाशितं ।
सरकारः शंकरी ज्ञेया तकारो नाद रूपकः ।।

शक्ति ब्रह्म मयं ज्ञानं सत् शब्दं भाव बोधकं ।
व्यञ्जनं पुरुषं गेय स्वरं गेय च शंकरी ।।

शिव शक्त्यात्मकं ब्रह्म सत् शब्देनापि भाषितं ।
सकारं च तकारं च पुरुषं परमेश्वरि ।।
शक्ति-ज्ञानं मध्य-लुप्तं अकारं शब्द-बोधकं ।
पञ्च-नादं सप्त-बिन्दु मेकाङ्कं परमेश्वरि ।।

एतैर्युक्तं सकारं हि त्रि-वकारं प्रकाशितं ।
तत्व रजस्तमश्चैव त्रि-वकारेण भाषितं ।।

पञ्च-नादं पञ्च-तत्वं बिन्दु-स्वर्ग विभूषितं ।
त्रिगुणाक्तं त्रिकोणं च प्रति-कोणं त्रयान्वितं ।।

कोण-मात्रे बिन्दु-मात्रं मध्ये नादं महेश्वरि ।
सर्व-वर्ण-क्रममिदमूङ्कं ज्ञेयं शिवोपरि ।।

बिन्दु-द्वय बिनाभद्रे अङ्क-मात्रं न जायते ।
नाद-बिन्द्वङ्क-युङ्-वर्णं ब्रह्म-ज्ञानस्य कारणं ।।
तत्-शब्दं ज्ञेयं सत्-शब्दं सर्व-भाव-प्रकाशितं ।
तत्-सत् ज्ञेय ब्रह्म-बीजं ॐकारऽभूत् प्रकाशितं ।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ॐ काराद् जायते सर्व ॐकारे च प्रतीयते ।
सृष्टि-बीजं हि ॐ कारं लय-बीजं त्रिलोचने ।।
हंस-बीजात् समुद्भूतं भावं भावातीतं ध्रुवं ।
दक्षिणानां च वामानां सिद्धान्तानां महेश्वरि ।।
हशिवसोऽहं नाहं च भेदा भेदात्मनात्मकं ।
कौलानां चैव दिव्यानां भावातीत हि केवल ।।

इति श्री दक्षिणा कालिका पद्धति और श्री महाकाली साधना तन्त्रक्रम
।। सम्पूर्णम् ।।

पं० नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी 'तन्त्रमणि'

पं० नरेन्द्रनाथ जतुर्वेदी ने वेद, उपनिषद्ध, पुराण भक्ति एवं अष्टांगयोग आदि साधन पद्धतियों द्वारा परमतत्व का साक्षात्कार कर लेने पर भी केवल लोक कल्याण की भावना से श्रीमहाकाली साधना तन्त्र एवं श्री दक्षिण कालिका पद्धति का अवलम्बन किया और पूर्णविधि विधान से श्रीकाली यन्त्राधिष्ठ श्री जगदम्बा आवेश्वरी श्री दक्षिणकालिकाम्बा क उच्चतम उपासना क्रम अनुष्ठित किया है। तथा उत्तर भारत में विलुप्तप्राय श्री महाकाली क्रम और दक्षिणकालिका सम्प्रदाय को अपने तपोबल स्वरूप से पुनः प्रतिष्ठापित किया है। और श्रीमहाकाली साधना तन्त्र जैसे ग्रन्थरत्न द्वारा श्री काली साहित्यनिधि को अभिवृद्ध और सुशोभित किया गया है।

पं० श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी 'तन्त्रमणि' द्वारा रचित श्रीकालीमन्त्र भाष्य का अवलोकन करने पर उनका तन्त्र शास्त्र का गहन अध्ययन, पौढ़ पांडित्य, तत्वज्ञता तथा रहस्यज्ञता सुस्पष्ट परिलक्षित होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शक्ति-उपासकों के लिए आवश्यक नियम

१. भगवती की उपासना के लिए भेद बुद्धि का त्याग करें। भगवती ही नित्य सत्य विज्ञानानन्दघन सर्व व्यापी निराकार निर्गुण निरञ्जन ब्रह्म हैं। भगवती ही शिव, विष्णु, ब्रह्मा, राम, कृष्ण आदि रूपों में प्रकट हैं। इनमें किसी भी रूप से द्वेष करना भगवती से ही द्वेष करना है। अतएव किसी की भी निन्दा न करके अपने इष्ट रूप की अनन्य उपासना करें।

२. वर्णाश्रम धर्म और शास्त्र विधि के अनुसार अपने-अपने कर्मों द्वारा निष्काम और अनन्य भाव से भगवती की भक्तिपूर्वक सेवा करें।

३. भगवती की उपासना करके किसी का बुरा न चाहें। मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण के लिए भगवती की उपासना न करें। जहाँ तक हो विषय भोगों की भी इच्छा न करें। संसार से विरक्त होकर केवल भगवती की प्राप्ति के लिये ही उपासना करें।

४. भगवती की उपासना में माँस-मद्य का सर्वथा-परि त्याग करें। माता को अपनी समस्त संतानें समान रूप से प्यारी होती है। जो अपनी भलाई की इच्छा से माँ की गरीब संतानें बकरे, भैंसे और अन्यान्य निरीह पशु-पक्षियों की माँ के नाम पर बलि चढ़ाता है,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और उनके माँस को भोग लगा कर अपना पापी पेट भरता है, उस पर माँ का कोप होता है। अतएव पशु-बलि का निश्चित रूप से त्याग करें। मद्य चढ़ाना या मद्यपान करना भी पाप समझकर सर्वथा त्याग दें।

५. तन्त्रों के उन वाक्यों के अनुसार कोई क्रिया न करें जिनमें पापाचार और भ्रष्टाचार को साधन बतलाया गया है। सात्विक साधना से ही उत्तम गति मिलती है। मोक्ष तथा भगवती की कृपा-प्राप्ति के लिये सात्विक साधना भी सर्वथा निष्काम होनी चाहिये।

हमारे यहाँ वेद, कर्मकाण्ड, पुराण, ज्योतिष तन्त्र, मन्त्र जादू टरे-टोटके आदि का कार्य किया जाता है। एक बार सेवा का अवसर प्रदान करें।

इस पद्धति में प्रेस सम्बन्धी जो भी कमी शेष रह गई हैं वह अगले संस्करण में साधकों के बतलाने पर यथा समय ठीक हो सकेगी साधक अपना मत लिखकर इस नीचे लिखे पते पर भेजे या स्वयं सम्पर्क स्थापित करें।

पं० दीनानाथ चतुर्वेदी 'तन्त्रमणि'
साहित्याचार्य, फलिज्योतिषाचार्य
, साहित्यरत्न, बी. एड.
गुरुवर विरजानन्द सरस्वती, स्थली
गताश्रम टीला, मथुरा.

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्रीमहाकाली साधनातन्त्र का वैशिष्ट्य

श्री दक्षिण कालिका साधना का पूर्णक्रम प्रवर्तित करने के लिए विभिन्न पुस्तकों की अपेक्षा रहती है। परन्तु यह एक ही पुस्तक दीक्षाकाल से पूर्णा भिषेक पर्यन्त और प्रारम्भिक साधनकाल से सिद्धि पर्यन्त समस्त विधि-विधानों का सांगोपांग सम्पादन करने के लिए समपेक्षित पद्धति की जिज्ञासा को परिपूर्ण करने में अपनी विशिष्टता से समवेत है।

तंत्र शास्त्र की अनुपम पुस्तक

बृहद शावर तन्त्र

असली पुस्तक जिसमें प्राचीन शावर मन्त्रों का उल्लेख प्रयोग विधि सहित दिया है।

४०) रु०

महा इन्द्रजाल :

प्राचीन असली पुस्तक जोकि हस्तलिखित ग्रन्थ से छापी गई है। ४०) रु०

यन्त्र मन्त्र तन्त्र के बारे में प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थ से संग्रहीत।

चमत्कारी टोने टोटके :

हर विषय पर टोने टोटके के लिए वृहद ग्रन्थ

४०) रु०

मँगाने का पता :–

मीतल एण्ड कम्पनी, सतघड़ा, मथुरा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh